# शुक्र के फ़ज़ाइल

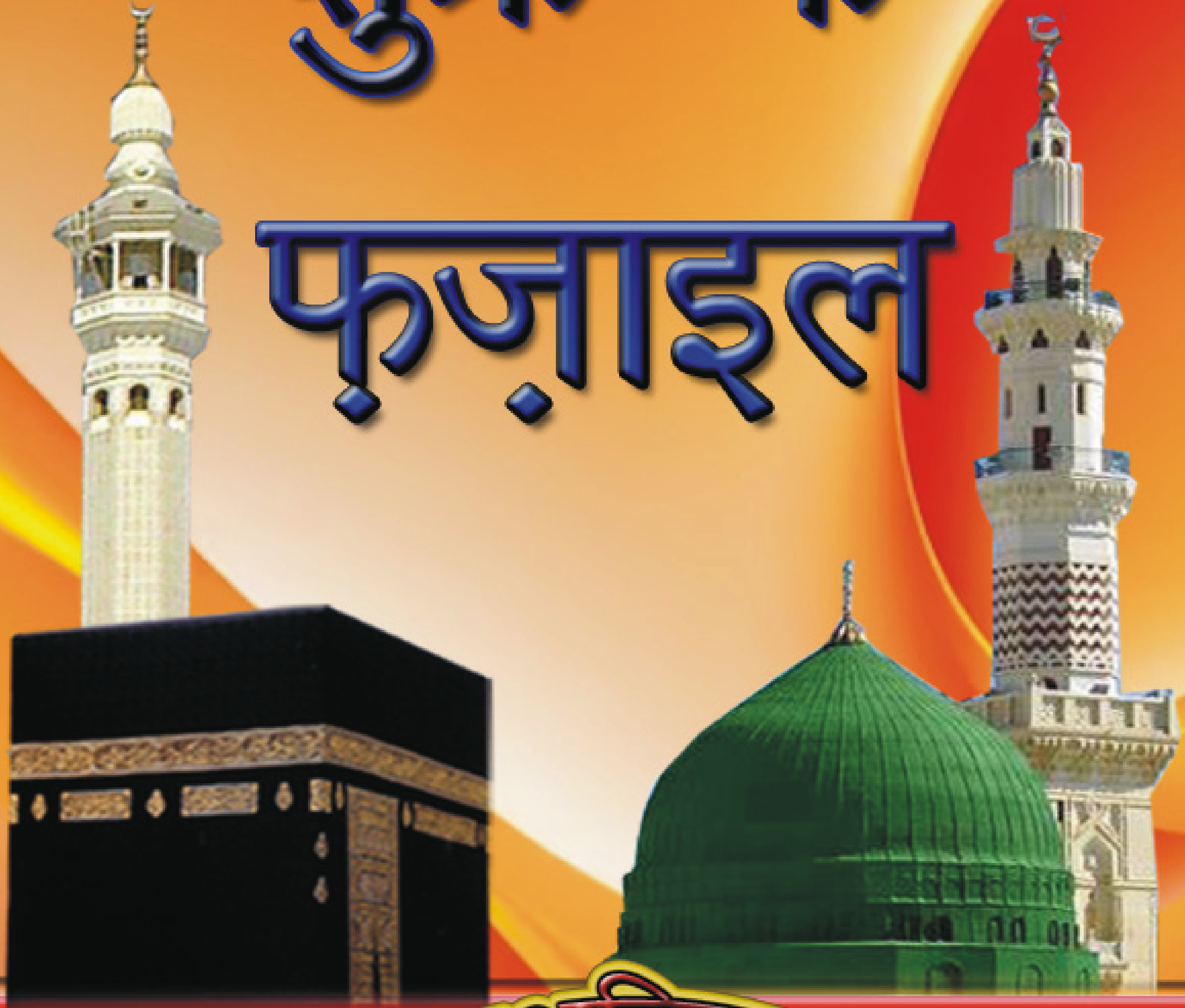

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

# शुक्र के फ़ज़ाइल

मुअ़ल्लिफ़

डा०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब- **शुक्र के फ़ज़ाइल**

मुअ़ल्लिफ़- **डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअ़त-अप्रेल- **2024**

कम्पोज़िंग-**अमन अ़ली क़ादरी &**
**ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी**

क़ीमत- **120/-** रुपये

**-: मिलने के पता :-**

**मदार बुक सेलर**
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

# फ़ेहरिस्त मज़ामीन


| न० शुमार | उन्वानात | सफ़हा |
|---|---|---|
| 01 | हम्द........................................ | 08 |
| 02 | तम्हीद...................................... | 10 |
| 03 | शुक्र करने का हुक्म व तल्क़ीन........... | 13 |
| 04 | अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुमार करना ना मुम्किन है.............................. | 25 |
| 05 | शुक्र के फ़वाइद............................ | 49 |
| 06 | इन्सानी वुजूद अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है.................................... | 71 |
| 07 | इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है............... | 84 |
| 08 | अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं............. | 90 |
| 09 | नाशुक्री पर अल्लाह का अ़ज़ाब............ | 97 |
| 10 | शुक्र गुज़ारी पसंदीदा अ़मल................ | 105 |
| 11 | नेअ़मत पर शुक्र और मुसीबत पर सब्र.. | 118 |
| 12 | अल्लाह तआ़ला ने ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें पूरी कर दीं........................ | 132 |
| | **शुक्र के फ़ज़ाइल अहादीस की रौशनी में** | |
| 13 | अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर इंतिहाई फ़ज़्लो करम......................... | 138 |
| 14 | शुक्र करने वालों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है............................ | 138 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़्हा |
|---|---|---|
| 15 | शुक्र करने से रब तआ़ाला की मुहब्बत पैदा होती है.................. | 139 |
| 16 | रब तआ़ाला नेअ़्मतों के ज़रिये मुहब्बत का इज़्हार फ़रमाता है.................. | 139 |
| 17 | अल्लाह तआ़ाला बेनियाज़ होने के बावुजूद हमसे मुहब्बत करता है.................. | 140 |
| 18 | शुक्र करने से नेअ़्मत में इज़ाफ़ा होता है. | 140 |
| 19 | नेअ़्मतें शुक्र के साथ जुड़ी हुई हैं........ | 142 |
| 20 | अल्हम्दुलिल्लाह कहने का अज्रो सवाब... | 143 |
| 21 | अफ़्ज़ल ज़िक्र व अफ़्ज़ल दुआ.......... | 145 |
| 22 | अल्लाह तआ़ाला अपनी ताअ़्रीफ़ को पसंद फ़रमाता है.................. | 146 |
| 23 | परिन्दे भी रब तआ़ाला की हम्द करते हैं. | 146 |
| 24 | अल्लाह की हम्द की जज़ा रब तआ़ाला खुद अ़ता फ़रमायेगा.................. | 148 |
| 25 | हर अच्छे काम की इब्तिदा हम्द से....... | 149 |
| 26 | नेअ़्मतों का इज़्हार अल्लाह को पसंद है. | 149 |
| 27 | अल्लाह तआ़ाला की नेअ़्मतों का शुक्र अदा नहीं किया जा सकता.............. | 151 |
| 28 | शुक्र की तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से मिलती है.................. | 152 |
| 29 | अल्लाह तआ़ाला का ज़िक्र व शुक्र करने की तल्क़ीन.................. | 153 |
| 30 | रब तआ़ाला की नेअ़्मतों का इहतिराम करना .................. | 156 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़्हा |
|---|---|---|
| 31 | लोगों का शुक्र अदा करना.................. | 156 |
| 32 | एहसान करने वाले की ताअ़रीफ़ करना शुक्र है........................... | 157 |
| 33 | जो क़लील का शुक्र नहीं करता वो कसीर का शुक्र नहीं करता.................... | 158 |
| 34 | बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले व निकलने के बाद शुक्र.................... | 158 |
| 35 | हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) हर हाल में शुक्र अदा करते थे....................... | 159 |
| 36 | हर हाल में शुक्र करने वाले जन्नत में पहले बुलाये जायेंगे.................. | 162 |
| 37 | अ़ज़ीम शुक्र........................... | 162 |
| 38 | नेअ़मतों का रुक जाना भी नेअ़मत है.... | 162 |
| 39 | नाशुक्री से नेअ़मतें अ़ज़ाब बन जाती हैं.. | 163 |
| 40 | जिस्मी आज़ा अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है............................ | 163 |
| 41 | खाना खकर शुक्र अदा करने वाला सवाब में रोज़ेदार के बराबर.................. | 164 |
| 42 | खाना खाकर शुक्र अदा करने वाले से अल्लाह राज़ी होता है................... | 164 |
| 43 | खाने के बाद बरकत की दुआ........... | 165 |
| 44 | पानी पीने के बाद शुक्र लाज़िम........... | 165 |
| 45 | नेअ़मत का चर्चा करना भी शुक्र है...... | 166 |
| 46 | एक नेअ़मत सारी नेकियाँ ले जायेगी..... | 166 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़्हा |
|---|---|---|
| 47 | कोई भी अपने नेक आअ़्माल के सबब निजात नहीं पा सकता | 167 |
| 48 | अल्लाह तआ़ला की नेअ़्मतों पर जिन्नों का शुक्र अदा करना | 169 |
| 49 | आँखें अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी नेअ़्मत हैं | 170 |
| 50 | नया कपड़ा पहनने पर शुक्र की फ़ज़ीलत | 170 |
| 51 | अल्लाह तआ़ला की नेअ़्मतों को याद करना भी शुक्र है | 171 |
| 52 | अपने से कमतर को देखने से अल्लाह की कोई भी नेअ़्मत हक़ीर नहीं लगेगी | 171 |
| 53 | जिसे चार चीज़ें मिलीं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिली | 172 |
| 54 | जो थोड़े से रिज़्क़ पर राज़ी रब तआ़ला उसके थोड़े अ़मल से राज़ी | 173 |
| 55 | दुनिया का क़लील आख़िरत के कसीर से ग़ाफ़िल कर देता है | 174 |
| 56 | अ़फ़्व व आ़फ़ियत की दुआ़ करना | 174 |
| 57 | अल्लाह तआ़ला की ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़्मतें | 175 |
| 58 | एक शुक्र गुज़ार बन्दे का वाक़िआ़ | 175 |
| 59 | पचास साल की इ़बादत एक छोटी सी नेअ़्मत के बराबर | 176 |
| 60 | पाँच सौ साल इ़बादत करने वाले का वाक़िआ़ | 177 |

## ० बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे व जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे व हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल व असहाब और तमाम औलिया –ए–किराम व सूफ़िया–ए–इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

# -: तम्हीद :-

अल्लाह तबारक व तआ़ाला की ज़ाहिरन व बातिनन इताअ़त करने का नाम शुक्र है और बन्दे का ज़ाहिरन व बातिनन गुनाहों से परहेज़ करना शुक्र है और बन्दे का अपने दिल व ज़बान और जिस्मी आज़ा की हिफ़ाज़त करना कि इनसे किसी भी तरह से अल्लाह तआ़ाला की नाफ़रमानी न हो पस जिसने अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त की उसने अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा किया और जिसने अल्लाह तआ़ाला की नाफ़रमानी की उसने अल्लाह तआ़ाला की नाशुक्री की

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक नेअ़मत का तआ़ल्लुक़ शुक्र के साथ है और शुक्र का तआ़ल्लुक़ नेअ़मतों की ज़्यादती के साथ है और अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से नेअ़मतों की ज़्यादती उस वक़्त तक नहीं रुकती जब तक बन्दे की तरफ़ से शुक्र न रुक जाये यानी जब बन्दा किसी नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा करता है तो अल्लाह तआ़ाला उस बन्दे को उसके शुक्र अदा करने के बदले में मज़ीद नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है जैसा कि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है-

**इरशादे बारी तआ़ाला है:-**
और अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा अ़ता करूँगा। (सू०-इब्राहीम-14/7)

और आख़िरत में उसे उसके शुक्र करने का अज्र व सवाब भी अ़ता किया जायेगा इसलिये बन्दे को चाहिये कि वो अल्लाह तआ़ाला की तमाम नेअ़मतों पर कसरत से शुक्र अदा करता रहे और कोई भी नेक अ़मल और कोई भी इ़बादत बग़ैर शुक्र के मुकम्मल नहीं होती क्योंकि हर इ़बादत व हर नेक अ़मल की तौफ़ीक़ का मिलना भी अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मत होती है।

अल्लाह तआ़ाला ने जो कुछ भी हमें दिया है उसके ज़रिये दूसरे लोगों पर फ़ख़्र न करें और न ही इतरायें और ना ही चापसूली कर‘वायें जैसा कि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है–

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः–**
बेशक अल्लाह तआ़ाला इतराने वालों को पसंद नहीं करता। (सू०–क़सस–28/76)

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः–**
बेशक अल्लाह तआ़ाला फ़ख़्र और तकब्बुर करने वालो को पसंद नहीं करता। (सू०–निसा–4/36)

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः–**
बेशक अल्लाह किसी ख़ाइन (ख़्यानत करने वाले) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (सू०–हज–22/38)

बेशक अल्लाह हर मुताकब्बिर इतराकर चलने वालों को पसंद नहीं करता। (सू०–लुक़मान–31/18)

शुक्र एक आअ़ला दर्जे की इ़बादत है और शुक्र की तौफ़ीक़ एक अ़ज़ीम सआ़दत है और अल्लाह तआ़ला को अपनी ताअ़रीफ़ बहुत पसंद है जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला अपनी ताअ़रीफ़ को पसंद फ़रमाता है। (शुअ़बुल ईमान–4/77-4366)

हर वो नेअ़मत जो बन्दे को अल्लाह के क़रीब न करे वो मुसीबत है और जब तुम देखो कि तुम मुसलसल अल्लाह की नाफ़रमानी किये जा रहे हो और वो मुसलसल तुम्हारे ऊपर नेअ़मतें भेज रहा हो तो फिर तुम अल्लाह से डरो कि कहीं अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपने अ़ज़ाब की गिरफ़्त में न ले ले और तुम्हें नेअ़मतों के साथ अचानक पकड़ ले।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इन्सान का नेअ़मतों में होना तुम्हें धोके में न डाल दे कि अल्लाह के यहाँ उसके लिये ऐसा अ़ज़ाब है कि वो मर भी नहीं सकेगा जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है 'जब भी वो आग बुझने लगेगी हम उन्हें (अ़ज़ाब देने के लिये और ज्यादा भड़का देंगे' (सू०–बनी इसराईल–17/97) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/109-ह०-4542)

फ़क़ीर

डा०–आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

9897626182

# शुक्र करने का हुक्म व तल्कीन

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद रखूँगा और मेरा शुक्र अदा किया करो और मेरी नाशुक्री न किया करो। (सू०–बक़राह–2/152)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और बा ईमान रहो और अल्लाह (हर हक़ का) क़दर करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (सू०–निसा–4/147)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
मैनें तुम्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाया है उसे थाम लो और शुक्र गुज़ारों में से हो जाओ।
(सू०–आअ़राफ़–7/144)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
पस जो हलाल व पाकीज़ा रिज़्क़ अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें बख़्शा है तुम उसमें से खाया करो और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र बजा लाया करो अगर तुम उसकी इ़बादत करते हो।
(सू०–नह्ल–16/114)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और हमने इन्सान को उसके वालिदैन के बारे में–

(नेकी का) ताकीदी हुक्म फ़रमाया जिसे उसकी मां तकलीफ़ पर तकलीफ़ की हालत में (अपने पेट में) बर्दाश्त करती रही और दो बरस में उसका दूध छूटा (उसे ये हुक्म दिया) कि तू मेरा भी शुक्र अदा कर और अपने वालिदैन का भी और तुझे मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है। (सू०–लुक़्मान–31/14)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
पस तुम अल्लाह की बारगाह से रिज़्क़ तलब किया करो और उसी की इ़बादत किया करो और उसी का शुक्र बजा लाया करो और तुम उसी की तरफ़ पलटाये जाओगे। (सू०–अ़नकबूत–29/17)

कायनात में सबसे बड़ी नेअ़मत हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते अक़्दस है कि जिनका उम्मती होने का शरफ़ हमें हासिल हुआ और इनके ज़रिये हमें कुरान व सुन्नत व राहे हिदायत मिली और इन्हीं के ज़रिये हमारी शफ़ाअ़त का मदार रखा गया इसलिये हुजूर अ़लैहिस्सलाम पर कसरत से दुरुदो सलाम भेजना और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्रे कसीर करना भी एक क़िस्म का शुक्र है और इस अ़ज़ीमुश्शान नेअ़मत पर अल्लाह तबारक व तआ़ला का ज़िक्र व उसकी हम्दो सना करना और रब तआ़ला की नेअ़मतों पर उसका शुक्र करना हम पर फ़र्ज़ है

ज़िक्र तीन तरह का होता है 1- ज़बानी 2- क़ल्बी 3- आज़ाऐ बदन के साथ पस ज़बानी–

ज़िक्र में तस्बीह, तक़दीस, हम्दो सना और उसकी शाने किब्रयाई और उसकी शाने कुदरत का बयान करना नेकी की दाअ़्वत देना, कुरान की तिलावत, खुत्बा, दुअ़ा, बाअ़्ज़, तबलीग़े दीन, कुरानो सुन्नत के उ़लूम दूसरों तक पहुँचाना वग़ैराह और हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की सीरते तय्यबा व आपके अख़लाक़े हसना और आपके ख़साइल और आपकी शानो अ़ज़्मत और फ़ज़ीलत व मक़ामो मर्तबत का ज़िक्र करना वग़ैराह शामिल है

और क़ल्बी ज़िक्र में अल्लाह तअ़ाला की नेअ़्मत और उसके फ़ज़्ल व एहसानात व उसकी अ़ज़्मत व किब्रयाई और उसकी अ़ज़ीम कुदरत के दलाइल और हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रहमत व शफ़क़त और आपकी इ़नायत व रहनुमाई और वसाइल में ग़ौर करना दाख़िल है

और अ़ज़ाए बदन के ज़िक्र से मुराद ये है कि अपने आज़ा से अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल की ना फ़रमानी न की जाये बल्कि अपने आज़ा को अल्लाह व रसूल की इताअ़त वाले कामों में इस्तेअ़्माल किया जाये और अल्लाह तअ़ाला की इ़बादत व नेक आअ़्माल किये जायें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बड़ा ही रहीमो करीम है जो अपने इताअ़त गुज़ार फ़रमां बरदार बन्दों की मग़फ़िरत फ़रमांता है और उनके दरजात बुलन्द कर देता है और जो

लोग अल्लाह तआ़ला को शुक्र के साथ याद करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपनी नेअ़मतों के साथ उन्हें याद करता है और जो लोग अल्लाह तआ़ला को मुहब्बत के साथ याद करते हैं तो रब तआ़ला उन्हें अपने कुर्ब के साथ याद फ़रमाता है।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दे पर कोई नेअ़मत नाज़िल फ़रमाता है और वो बन्दा अल्हम्दु लिल्लाह कहता है तो ये कालिमा अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उसे नेअ़मत देने से बेहतर होता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/218-ह०-3805)

अल्लाह तआ़ला ने हमें बेशुमार नेअ़मतें अ़ता कीं और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तकालीफ़ और मसाइब व आलाम को हमसे दूर किया तो इस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना मौजूद सब नेअ़मतों के बाक़ी रहने और मज़ीद नेअ़मतों के हुसूल के लिये निहायत ज़रुरी है और जिसे दीनी उ़लूम व अ़मल की तौफ़ीक़ मिली तो ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके लिये बहुत बड़ी नेअ़मते उ़ज़्मा है बल्कि यही हक़ीक़ी नेअ़मत है जबकि दीगर नेअ़मतें ज़ाइल व फ़ना हो जायेंगी मगर बन्दे के नेक आअ़माल क़यामत तक उसके साथ रहेंगे जो उसकी फ़लाह व निजात का बाइस होंगे तो जिनको इ़ल्म व अ़मल की तौफ़ीक़ से नवाज़ा गया तो उस

पर अल्लाह तआ़ला का कसरत के साथ शुक्र अदा करना निहायत ही ज़रुरी है ताकि उन पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और भी ज़्यादा हो और अल्लाह तआ़ला उनसे खुश व राज़ी हो और तकब्बुर और खुद पसंदी व रियाकारी जैसी अ़ज़ीम बुराई से वो महफ़ूज़ रहें और वो अल्लाह तआ़ला के शुक्र में मशगूल रहें

अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मतों में से एक ये है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें बाक़ी उम्मतों से अफ़ज़ल किया और सबसे बेहतर दीन अ़ता किया और सबसे बढ़कर ये कि सरापा–ए–रहमत पैग़म्बर हमें अ़ता किया जिनके ज़रिये रब तआ़ला की आयतें हम तक पहुँची कि उन्होंने हमें उन आयात की तिलावत व उनके आदाब सिखाये और उन्होंने हमें शिर्क, बुत परस्ती, कुफ़्र व बुरे अख़लाक़ गरज़ ये कि ज़ाहिरी व बातिनी ऊ़यूब से पाक करने में हमारी रहनुमाई फ़रमाई और बाहम मुहब्बत करना सिखाया और दीनी ताअ़लीम दी और इन्सानियत सिखाई और राहे हिदायत व राहे निजात की तरफ़ रहबरी फ़रमाई और मख़्लूक़ को ख़ालिक़ तक पहुंचा दिया और किताबे इलाही की पोशीदा बातें बताई और दीनो दुनिया की वो सब बातें बताई जो हम नहीं जानते थे और ऊ़लूमे ग़ैब की बातें बताई और वो नबी खुद भी रहमत हैं और हज़ारा ला ज़वाल नेअ़मतें हम सबके लिये अपने साथ लाये तो इस तरह से अल्लाह तआ़ला की हम पर बेशुमार नेअ़मतें हैं कि जिनका शुमार–

करना ना मुम्किन है पस जब ये माअ़लूम हो गया कि अल्लाह तआ़ाला की हम पर बेशुमार नेअ़मतें हैं तो हम पर ये वाजिब है कि हमे अपने पर'वर दिगार का कसरत से ज़िक्र करें और उसकी हम्दो सना के साथ उसका शुक्र अदा करें इसके अ़लावा अल्लाह तआ़ाला ने हमें बिला अ़मल हज़ारो नेअ़मतें अ़ता फ़रमाईं ये अल्लाह तआ़ाला का हम पर बहुत बड़ा फज़्ल है और हमें चाहिये कि इस फ़ज़्ल को हम हमेशा अपने ज़हन में रखें ताकि उसका शुक्र अदा करने में कसरत पैदा हो

शुक्र अल्लाह तआ़ाला की एक इ़बादत है और इसके कई दरजे हैं और अदना दर्जा ये है कि हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ मन्सूब करे और इससे बढ़कर ये कि हर नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ाला की हम्दो सना के साथ उसका शुक्र अदा करे इससे बढ़कर ये कि हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ाला की फ़रमां बरदारी के साथ इस्तेअ़माल में ले और अल्लाह तआ़ाला की किसी भी नेअ़मत को गुनाह और बुराई के कामों में सर्फ़ न करे और न ही उन कामों में सर्फ़ करे जिसमें अल्लाह तआ़ाला की ना फ़रमानी शामिल हो बल्कि उन उमूर पर सर्फ़ करे जिसमें अल्लाह तआ़ाला की खुशनूदी और रिज़ा शामिल हो और हर नेअ़मत में से अल्लाह तआ़ाला का हिस्सा निकाले यानी अल्लाह तआ़ाला जब हमें कोई नेअ़मत अ़ता करे तो हम पर ये वाजिब है कि सबसे पहले उस नेअ़मत पर अल्लाह का शुक्र अदा करें और राहे खुदा में कुछ सदक़ा-

ख़ैरात करें और उसके हुक़ूक़ अदा करें और हर वो नेअ़मत जो लोगों की मदद का ज़रिया बन सकती हो तो उस नेअ़मत से लोगों की मदद करें और उस नेअ़मत से अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा करें और अल्लाह तआ़ला को खुश व राज़ी करें और जिस बन्दे के दिन व रात के तमाम नेक अ़मल ख़ालिस अल्लाह ही के लिये हों यानी अल्लाह का ज़िक्र, इबादत व मख़लूक़े खुदा के लिये नेक काम वग़ैराह सब अ़मल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हों तो वो बन्दा अल्लाह तआ़ला का मुर्क़रब बन्दा बन जाता है पस वो बन्दा अल्लाह तआ़ला का हक़ीक़ी शुक्र अदा करने वाला बन्दा बन जाता है और उसे अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त हासिल हो जाती है और वो आ़रिफ़ हो जाता है।

शुक्र की एक क़िस्म ये है कि बन्दा अपनी आँख से वो चीज़ें न देखे जिसके लिये उसे मना किया गया और वो चीज़ें देखे जिसके लिये रुख़सत दी गई हो और जब भलाई देखे तो उसे ज़ाहिर करे और जब वो बुराई देखे तो उसे छुपाये और लोगों को उस बुराई से बचाने की हत्तल इमकान कोशिश करे ये आँख का शुक्र है और कान का शुक्र ये है कि कान से बुरे कालिमात और फुहश कालिमात न सुने बल्कि अच्छे और नेकी की तरफ़ रहनुमाई करने वाले कलिमात सुने व अच्छी बातों को सुनकर याद करले व बुरी बातों को भूल जाये और हाथों का शुक्र ये है कि अपने हाथों से वो काम करे जो अल्लाह व रसूल को पसंद हों और

वो काम न करे जो अल्लाह व रसूल को नापसंद हों और वो अपने हाथों से वो चीज़ न पकड़े कि जिसके लिये वो बनाये ही नहीं गये और दिल का शुक्र ये है कि दिल में अल्लाह तआ़ला और उसके प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इंतिहाई ख़ालिस मुहब्बत के सिवा कुछ न हो और अपने चेहरे से ज़्यादा अपने दिल को पाको साफ़ रखे और हसद, बुग्ज़, कीना, अ़दावत, और नफ़्सानी व शहवाती बुरी ख़्वाहिशात से दिल को पाको साफ़ रखे और दिमाग़ का शुक्र ये है कि वो अपने ज़हन को बुरे ख़्यालात व तसव्वुरात और बद गुमानी से खाली रखे ज़हन में सिर्फ़ हुस्ने ज़न हो और अपनी आख़िरत के मुताअ़ल्लिक़ ख़्यालात को वो पूरी जगह दे ताकि उसकी इस्लाह हो जाये और उसे अपनी आख़िरत बेहतर बनाने व संवारने की तौफ़ीक़ नसीब हो और पैरों का शुक्र ये है कि वो नेकी और लोगों की भलाई और दीनी ख़िदमात के लिये इस्तेअ़माल हों और बुराई व गुनाहों की तरफ न उठें और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी के लिये क़दम रुक जांयें ये पैरों का शुक्र है।

शुक्र का एक माअ़नी ये है कि बन्दा नेअ़मत देने वाले का एहसान मंद हो और उसकी नेअ़मतों का इक़रार करके उसकी हम्दो सना करे व उसकी इ़बादत व इताअ़त करे और बुराई के कामों को करके ना शुक्री न करे बल्कि उसके एहसान की क़दर करे और उसकी दी हुई नेअ़मत को उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेअ़माल करे।

अल्लाह तबारक व तआ़ला की ये शाने करीमी है कि वो अपने शुक्र गुज़ार बन्दों की क़द्र करने वाला और मज़ीद इनआ़मात व अज्रो सवाब अ़ता करने वाला और अपने शुक्र गुज़ार बन्दों को खूब जानने वाला है अल्लाह तआ़ला अपने शुक्र गुज़ार बन्दों को अ़नक़रीब बड़ा सवाब अ़ता करने वाला है और जो लोग ईमान लाये और अपने फ़ासिद अहवाल की इस्लाह की और अल्लाह के दीन की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया और ख़ालिस अल्लाह व रसूल की इताअ़त की और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के तलबगार रहे और अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर उसके शुक्र गुज़ार रहे तो वो जन्नत के बुलन्द दरजात में होंगे

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम ईमान ले आओ और शुक्र गुज़ार बन जाओ और वो अपने रास्ते में बोझ उठाने वालों और नेक आअ़माल में मशक़्क़त बर्दाश्त करने वालों को खूब जानता है और जो कोई अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर किसी चीज़ को तर्क करे तो अल्लाह तआ़ला उसे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमायेगा और उसे बहुत ज़्यादा अज्रो सवाब से नवाज़ेगा पस तुम सिद्क़ दिल से उसकी तरफ़ रुजूअ़ करो और उसकी इताअ़त में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करो और जब तुम ऐसा करोगे तो वो तुम्हें अ़ज़ाब देकर क्या करेगा और हक़ीक़त यही है कि अल्लाह तआ़ला नहीं चाहता है कि वो अपने बन्दों को अ़ज़ाब दे बल्कि वो चाहता है कि

उस पर ईमान ले आओ और नेक आअ़माल करो और उसकी नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करो और तुम्हें अ़ज़ाब देने में अल्लाह तआ़ला को कोई नफ़अ़ या फ़ायदा नहीं और तुम्हें अ़ज़ाब न देने में उसका कोई नुक़सान नहीं और न ही उसे तुमसे कोई अ़दावत है कि वो तुम्हें अ़दावत की वजह से अ़ज़ाब दे और अपना गुस्सा ठंडा करे और मआ़ज़ अल्लाह न ही वो ज़ालिम है जो बिला वजह तुम्हें अ़ज़ाब दे बल्कि वो चाहता है कि तुम ईमान दार रहकर मेरी इताअ़त करो और मेरी नेअ़मतों का शुक्र अदा करो ताकि तुम कसीर नेअमतें व सवाब पाओ तो बग़ैर जुर्म व गुनाह के किसी को सज़ा देना ना मुम्किन अ़मल है और जिसको जो सज़ा मिलेगी वो उसकी अपनी बद अ़मली व नाशुक्री व नाफ़रमानी का नतीजा होगी और ये सज़ा अ़द्ल व हिकमत पर मबनी होगी लिहाज़ा न तुम उसकी नाफ़रमानी करो और न उसकी नाशुक्री करो और उसे राज़ी करो तो वो तुम पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमायेगा

ईमान इस बात का तक़ाज़ा करता है कि बन्दा नेअ़मतें देने वाले पर‘वर दिगार की नेअ़मतों का दिल से इक़रार करे और ज़बान से इज़हार करे और बदनी आज़ा से इताअ़त करे और ईमान दिल के अ़क़ीदे का नाम है और बग़ैर दुरस्त अ़क़ीदे के कोई अ़मल कुबूल नहीं होता इसलिये रब तआ़ला ने फ़रमाया कि ईमान पर क़ायम रहो और मेरी

हालांकि अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतें ग़ैर मुतनाही हैं उनका शुक्र कैसे अदा हो सकता है पस उसकी किसी एक नेअ़मत का भी शुक्र अदा नहीं किया जा सकता है और कोई इन्सान लामहदूद नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं कर सकता ये अल्लाह तअ़ाला का हम पर निहायत फ़ज़्लो करम है कि वो अपने बन्दों के ना मुकम्मल शुक्र और उनकी आजिज़ी को कुबूल फ़रमां कर उन्हें मज़ीद नेअ़मतें और जज़ा-ए-ख़ैर और बेहतर अज्र अ़ता फ़रमाता है और वो जानता है कि मेरे बन्दों में कौन बन्दा मेरा कितना शुक्र गुज़ार है और वो जानता है कि कौन उसकी नेअ़मतों पर नियाज़ मन्दी व इताअ़त से सर झुकाकर उसकी ताअ़ज़ीम बजा लाता है और वो ये भी जानता है कि कौन मेरी नेअ़मतों की कितनी क़द्र करता है और उसके तक़ाज़ो को पूरा करता है सो वो उसी के मुताबिक़ हर बन्दे को उसके अ़मल और उसके शुक्र अदा करने की जज़ा अ़ता फ़रमायेगा।

फ़रमाने इलाही है कि ''हलाल और पाकीज़ा रिज़्क़ खाओ और अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो'' बेशक दीन इस्लाम इंतिहाई पाकीज़ा दीन है और इस दीन को अल्लाह ने हर गन्दगी और ख़बीस चीज़ों से पाक फ़रमाया है और इस दीन में मुसलमानों को तहारत व पाकीज़गी की आअ़ला ताअ़लीमात दी गई पस अल्लाह तअ़ाला के अ़ता कर्दा रिज़्क़ में बग़ैर किसी इसराफ़ के फ़ायदे उठाओ और नेअ़मतों पर अल्लाह तअ़ाला-

की हम्दो सना करके उसको अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इताअ़त में सर्फ़ करो और हराम चीज़ों से इजतिनाब करो और नेअ़मतें अ़ता करने वाले को फ़रामोश न करो अल्लाह तबारक व तआ़ला हमें नेअ़मतें देकर हम पर बड़ा एहसान फ़रमाता है तो हमें चाहिये कि हम उसके एहसानात को हर वक़्त याद रखें और उसके शुक्र गुज़ार व इ़बादत गुज़ार बन्दे बन जायें और उसकी ना शुक्री व नाफ़रमानी न करें और उससे डरें कि कहीं वो हमसे नाराज़ होकर हमें अ़ज़ाब में मुब्तिला न कर दे पस हम उन उमूर को छोड़ दें जो अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी को बाइस हों और उन तमाम उमूर में खूब ग़ौर करें और देखें कि उनमें से कौन सा अम्र तरजीह के लायक़ है और अल्लाह तआ़ला से रिज़्क़ तलब किया करें और कसरत से उसका शुक्र अदा किया करें।

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें अ़ता की हैं और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हो। (सू०-बक़राह-2/172)

हज़रत सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जिन बन्दों में रहम, सख़ावत, हिल्म, शफ़क़त, भलाई, शुक्र व सब्र जैसी ख़सलतें हैं वो क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ला के मुक़र्रबीन बन्दों में होंगे।

# अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुमार करना नामुम्किन है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और आसमान की जानिब से पानी उतारा फिर उससे तुम्हारे रिज़्क़ के लिये फलों को पैदा किया और तुम्हारे लिये कश्तियों को मुसख़्ख़र किया ताकि वो उसके हुक्म से समुंदर में चलती रहें और उसने तुम्हारे लिये दरियाओं को मुसख़्ख़र किया और उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये सूरज व चाँद को मुसख़्ख़र किया जो मुसलसल गर्दिश कर रहे हैं और दिन को मुसख़्ख़र और तुम्हारी माँगी हुई चीज़ों में से तुम्हें (बहुत कुछ) इ़नायत किया और अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुमार करना चाहो तो पूरा शुमार न कर सकोगे। (सू०–इब्राहीम–14/34)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को शुमार करना चाहो तो उन्हें पूरा शुमार न कर सकोगे। (सू०–नह्ल–16/18)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

वो रहमान ही है जिसने (खुद नबी करीम सल्ल०) को कुरान सिखाया उसी ने इन्सान को पैदा किया उसी ने (रसूले अकरम सल्ल० को मा काना वमा

यक़ूनु) का बयान सिखाया सूरज और चाँद उसी के मुक़र्ररा हिसाब से चल रहे हैं और बग़ैर तने वाली नबातात और दरख़्त उसी को सज्दा कर रहे हैं और उसी ने आसमान को बुलन्द कर रखा है और उसी ने अ़द्ल के लिये तराज़ू क़ायम कर रखी है ताकि तुम तौलने में बे एअ़तदाली न करो और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और कम न तोलो और (उसी ने) ज़मीन को मख़्लूक़ के लिये बिछा दिया उसमें मेवे और खजूर हैं जिन पर ग़िलाफ़ चढ़े हुये हैं और भूसा वाला अनाज और खुश्बूदार फल फूल हैं पस (ऐ गिरोहे जिन्न व इन्सान) तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे

उसी ने इन्सान को ठीकरी की तरह बजते हुये खुश्क़ गारे से बनाया और जिन्नात को आग को शुअ़ले से पैदा किया तो तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे वही दोंनों मशरिक़ों को मालिक है वही दोनों मग़रिबों का मालिक है पस तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उसी ने दो समुन्दर र'वां किये जो बाहम मिल जाते हैं उन दोंनों के दरमियान एक आड़ है वो अपनी अपनी हद से तजावुज़ नहीं कर सकते पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उन दोनों समुन्दरों से मोती और मरजान निकलते हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे और उसी के इख़्तियार में वो जहाज हैं

जो समुन्दरों में पहाड़ की तरह खड़े हुये (चल फिर रहे हैं) पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे हर कोई जो ज़मीन पर है फ़ना हो जाने वाला है और आपके रब की ज़ात बाक़ी रहेगी जो साहिबे अ़ज़मत व जलाल और बड़ी शान वाला है पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे सब उसी से माँगते है जो भी आसमानो और ज़मीन में है वो हर रोज़ एक नई शान में होता है तो तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे ऐ जिन्नो व इन्सानो के गिरोह हम अ़नक़रीब तुम्हारे हिसाब का क़सद फ़रमायेंगे पस तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे ऐ गिरोह जिन्न व इन्सान अगर तुम इस बात पर कुदरत रखते हो कि तुम आसामनों और ज़मीन के किनारों से बाहर निकल सकते हो तो फिर निकल जाओ तुम जिस मक़ाम पर भी निकल कर जाओगे वहाँ उसी की सल्तनत पाओगे पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे

तुम दोनों पर आग के शोअ़ले और धुंआँ छोड़ा जायेगा और तुम दोनों इससे बच न सकोगे पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे फिर जब आसमान फट जायेगा और जले हुये तेल की तरह गुलाबी हो जायेगा तो तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे सो उस दिन न किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जायेगा और न किसी जिन्न

से तो तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे और मुजरिम लोग अपने चेहरों की स्याही से पहचान लिये जायेंगे पस उन्हें पेशानी के बालों और पांव से पकड़ कर खींचा जायेगा पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे

उनसे कहा जायेगा यही वो दोज़ख़ है जिसे मुजरिम लोग झुठलाया करते थे वो उस दोज़ख़ में खौलते गरम पानी में घूमते फिरेंगे पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे और जो शख़्स अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता है उसके लिये दो जन्नतें है पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे वो दोनों (जन्नतें सर सब्ज़ और शादाब हैं) घनी शाखों वाली जन्नतें हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उन दोनों में दो चश्मे बह रहे हैं तो तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उन दोनों जन्नतों में हर फल (और हर मेवे) की दो दो क़िस्में है पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे

अहले जन्नत ऐसे बिस्तरों पर ताकिया लगाये बैठे होंगे कि जिसके अस्तर दबीज रेशम के होंगे और दोनों जन्नतों के फल उनके क़रीब झुक रहे होंगे पस तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे उनमें नीची निगाह रखने-

वाली हूरें होगी कि जिन्हें पहले न किसी इन्सान न हाथ लगाया होगा न किसी जिन्न ने पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे गोया वो हूरें याकूत और मरजान हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे नेकी का बदला नेकी सिवा कुछ नहीं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे

और उनके के लिये इन दो सिवा दो और जन्नतें भी है पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे वो दोनों गहरी सब्ज़ रंगत में स्याही माइल लगती हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उन दोनों में भी दो चश्मे हैं जो खूब छलक रहे होंगे पस तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे उन दोनों में भी फल व खजूरें और अनार हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे उनमें खूबसीरत व खूबसूरत हूरें हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे ऐसी हूरें जो ख़ेमों में परदा नशीन हैं पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे (ऐसी हूरें कि) जिन्हें पहले न किसी इन्सान न हाथ से छुआ और न किसी जिन्न ने पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे सब अह्ले जन्नत सब्ज़ कालीनों पर और उ़म्दाह खूब सूरत बिछौने पर तकिया लगाये बैठे होंगे पस तुम दोनों अपने रब की किन किन नेअ़मतों को झुठलाओगे

आपके रब का नाम बड़ी बरकत वाला है जो कि साहिबे अ़ज़्मत व जलाल और साहिबे इकराम है। (सू०–रहमान–55/1-ता 78)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने अपने बन्दों को अपनी मशय्यत और हिकमत के मुताबिक़ बेशुमार नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं जिनका शुमार करना ना–मुम्किन है और इससे बहुत ही ज़्यादा नेअ़मतें वो अपने नेक मोमिन बन्दों को आख़िरत में यानी जन्नत में अ़ता फ़रमायेगा अगर हम रब तअ़ाला की अ़ता कर्दा दुन्यावी नेअ़मतों को गिनना चाहें तो गिन न सकेंगे इसकी एक छोटी सी मिसाल ये है कि खाई जाने वाली सब चीज़ों की तख़लीक़ में अल्लाह तअ़ाला ने इतने अ़जायबात रखें है कि उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता सिर्फ़ गेहूँ को ही ले लें कि अगर तुम्हारे पास गेहूँ के कुछ दाने हों और तुम उसे खाते रहो तो वो कुछ ही दिनों में ख़त्म हो जायेंगे लिहाज़ा तुम्हें ऐसा काम करने की ज़रुरत है कि जिससे गेहूँ के दाने इतनें ज़्यादा हो जायें कि जिससे तुम्हारी ज़रुरत पूरी हो जाये और गेहूँ कभी ख़त्म न हो इसलिये अल्लाह तअ़ाला ने एक ऐसा निज़ाम क़ायम किया है कि तुम गेहूँ के दाने ऐसी ज़मीन में डालो फिर वो दाने पानी और ज़मीन के साथ मिलकर गेहूँ की एक फ़स्ल तैयार कर देंगे

और इस तरह गेहूँ पैदा होते रहेंगे और तुम्हारी ज़रुरत पूरी होती रहेगी और पानी के लिये

अल्लाह तआ़ला ने कई चश्मे जारी फ़रमाये और आसमान से पानी बरसाया और बादलों से बरसने वाले पानी और पहाड़ों से निकलने वाले पानी की मिक़्दार क़ायम की अगर ये मिक़्दार क़ायम न होती तो ज़्यादा पानी से हर चीज़ की फ़स्ल बर्बाद हो जाती और अगर ये पानी की मिक़्दार हद से ज़्यादा हो जाये तो ज़मीन ग़र्क़ हो जाती

इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने सूरज को पैदा किया जो ज़मीन को गरम करता है मगर हर वक़्त नहीं ताकि जब ठण्डक की ज़रुरत हो तो ठण्डक दे और जब गर्मी की हाजत हो तो गर्मी दे और चांद को पैदा फ़रमाया और जिस तरह सूरज की ख़ासियत हरारत पहुंचाना है तो चांद की ख़ासियत फ़स्लों को पकाना व रंगीन करना है और ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुक़र्रर कर्दा है और इस तरह कायनात की हर शैः को पैदा करने में कोई न कोई मक़सद व हिकमत पोशीदा होती है जिनका माअ़लूम करना इन्सानी ताक़त से बाहर है और इस तरह अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुमार करना तो बहुत बड़ी बात है इन्सानी अंदाज़े और ख़्यालात में भी नहीं आ सकतीं

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को उनकी वुसअ़तों के साथ पैदा फ़रमाया और बादलों को पैदा किया जिससे अल्लाह तआ़ला पानी बरसाता है जिसके ज़रिये मख़्तलिफ़ अनवाअ़ के फल और अनाज तुम्हारे और तुम्हारे मवेशयों–

के लिये पैदा फ़रमाता है और काम में लगा दिया तुम्हारे लिये कश्तियों कि वो उस अल्लाह के हुक्म से समुन्दर में चलें और तुम्हें उन पर कुदरत अ़ता की और पानी के मौजों पर उनकी हिफ़ाज़त की ताकि तुम्हें व तुम्हारे तिजारती माल व असवाब को उस शहर तक उठा ले जायें जहाँ का तुम क़सद रखते हो और उस अल्लाह ने काम में लगा दिया तुम्हारे लिये नहरों को और चश्मों को ताकि तुम अपनी खेतियों और बाग़ात को सैराब कर सको और उसने काम में लगा दिया तुम्हारे लिये सूरज और चाँद को और उनकी रफ़्तार में न तो तेज़ी आती है और न वो सुस्त पड़ते हैं और काम में लगा दिया तुम्हारे लिये रात को ताकि तुम आराम कर सको और दिन को ताकि तुम उसमें अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अपने काम काज कर सको

और तुम्हारी ज़रुरत की हर चीज़ पैदा फ़रमाई ताकि तुम उसके शुक्र गुज़ार बन्दे बन जाओ फिर जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है वो अपने रब के हक़ को पहचाता है और उसके एहसान को मानता है पस बन्दे को चाहिये कि वो उसकी बेशुमार नेअ़मतों का शुक्र अदा करे और उसका ज़िक्र और उसकी इ़बादत करे

इन्सानी गिज़ा के लिये अल्लाह तआ़ला ने कितनी चीज़ें पैदा फ़रमाई कि एक दाने को उगाने व उसकी फ़स्ल तैयार करके उसको मुकम्मल गिज़ा

बनाने के लिये कितनी चीज़ें पैदा फ़रमाईं हर लुक्में में मौजूद कितने तरह के मसाले उसका आग पर पकना चूल्हा, तबा और मुख़्तलिफ़ बर्तन व आटा पीसने के लिये पत्थर व चक्की और उसको चलाने के लिये मुख़्तलिफ़ चीज़ें इंजन मोटर पेट्रोल डीजल और बिजली और उसने पानी को मुख़्तलिफ़ चीज़ों के ज़रिये ज़मीन से निकाला और लुक्मा बनाने व उठाने के लिये हाथ जिसने उसकी सर्दी व गर्मी का अन्दाज़ा लगाया और आंखों के क़रीब कर दिया आँखों ने उसकी अच्छी व बुरी रंगत और उसमें ज़रुरी व ग़ैर ज़रुरी चीज़ों को देख लिया अगर उसमें कोई बाल हो या तिनका पड़ा हो तो हाथों ने आसानी निकाल दिया फिर नाक ने उसको सूंघा कि ख़राब तो नहीं है फिर दांतो ने उसको चबाया तो उसके ज़र्रे ज़र्रे तक का पता लगाया कि उसमें कोई कंकर वग़ैराह तो नहीं और ज़बान ने ज़ायका लिया कि कढ़वा है या खट्टा या मीठा फीका तब ये लुक्मा इन्सान के पेट में पहुंचता है

अल्लाह तआ़ला ने मुँह के अन्दर एक लुआ़ब बनाया जो खाने को हज़्म करता है और पेट के आज़ा और उनसे निकलने वाले हार्मोन जो खाने को हज़्म करते हैं इसी खाने पीने से हमारे जिस्मी आज़ा पर‘वान चढ़ते रहते हैं इसी से चर्बी बनती हैं इसी से गोस्त बनता है इसी से हड्डिया बनती हैं और इसी से खून बनता है और इन्सान की जिस्मानी ज़रुरतें पूरी होती हैं और उसमें बेकार खाना व पानी कुछ पेशाब के रास्ते व कुछ पखाने

के रास्ते से बाहर निकल जाता है पस ये जिस्मानी निज़ाम है और अल्लाह के हुक्म से ये हर वक़्त हर लम्हें काम करता रहता है मसलन इन्सान जब सोता है तब भी उसका दिल हरकत करता रहता है और उसके फेफड़े हरकत करते रहते हैं और उसके खून को फिल्टर करके साफ़ करते रहते हैं इन्सान सोता हो या जागता हो उसकी तमाम रगों व नसों में खून दौड़ता रहता है

इन्सान सिर्फ़ अपने जिस्म की तरफ़ ग़ौर करे कि उसके जिस्म सर ता पांव में बेशुमार नेअ़मतें हैं जिसे शुमार नहीं किया जा सकता और उसकी शाने कुदरते का अंदाज़ा लगाना मुहाल है कि वो कितनी बड़ी शान वाला और अपने बन्दों पर बड़ा फ़ज़्लो करम करने वाला बड़ा मेहरबान है

अल्लाह तअ़ाला ने इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये जिन जिन चीज़ों की ज़रुरत थी वो सब अल्लाह तअ़ाला ने फ़राहम कीं तुम्हें दिन में रौशनी चाहिये थी वो तुमको मुहैया की तुम्हारी फस्लों को पानी की ज़रुरत थी वो पूरी की तुम्हें आलात व मशीने बनाने के लिये लोहे तांबे पीतल वग़ैराह की ज़रुरत थी वो सब तुम्हें अ़ता कीं तुम्हें ईधन की ज़रुरत थी तो दरख़्त उगाये ज़मीन में पत्थर और कोयला और तेल पैदा फ़रमाया और रुई को पैदा फरमाया ताकि तुम उससे अपना लिबास व बिस्तर बना सको और तुम्हारी ग़िज़ाई ज़रुरियात के लिये अनाज और फलों को पैदा फ़रमाया और तुम्हारे-

इलाज के लिये जड़ी बुटियों को पैदा किया अल्लाह तआ़ला ने हमें ला महदूद व ला मुतनाही नेअ़मतें अ़ता कीं और अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़ा में हवाओं को पैदा किया अगर ये हवा न होती तो हम सांस कैसे लेते और सांस लेने के लिये मुंह, नाक और फेफडे बनाये और ये सब आज़ा न होते तो हम सांस कैसे लेते हम मकान बनाकर उनमें रहते हैं गर्मी व सर्दी और बारिश से महफूज़ रहते हैं तो मकान बनाने के लिये जिस सामान व जिन चीज़ों की ज़रुरत होती है वो चीज़ें किसने पैदा कीं यही हाल लिबास का है कितनी ही चीज़ों को अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाया जिनके नतीजे में लिबास हासिल होता है यानी हम सब को रब तआ़ला ने बेशुमार नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई जिनका शुमार करना और उनका पूरा शुक्र अदा करना ना मुम्किन है।

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब अगर मेरे हर बाल की दो ज़बानें हों और वो दिन रात तेरी पाकी बयान करें तब भी मैं तेरी किसी भी एक नेअ़मत का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता।
(इब्ने अबी शैबा–10/445-ह०-35421)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/118-ह०-8579)

➡ हज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला की इस क़दर नेअ़मतों के साथ सुबह करते हैं कि उन्हें शुमार नहीं किया जा

सकता हालांकि हमारी नाफ़रमानियां बहुत ज़्यादा हैं पस हम नहीं जानते कि किस बात अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करूँ मुसलसल मिलने वाली नेअ़मतों पर या इस बात पर कि उसने हमारी बुराईयां छुपा रखी है। (तारीख़ बग़दाद–10/123-ह०-5252)

बन्दे की तख़लीक़ में अल्लाह तआ़ला की बेशुमार नेअ़मतें हैं जैसे मुअ़तदिल बदन व सहीह आंखें जो अच्छे और बुरे की और सब रंगों और दुनियावी चीज़ों की पहचान करती हैं और अ़क्ले सलीम और ऐसी समाअ़त जो बातचीत और चीज़ों को समझने में मददगार है हाथों को पकड़ना पांव का चलना वग़ैराह इसके अ़लावा अल्लाह तआ़ला ने दीनी व दुनियावी ज़रुरियात की तकमील के लिये जितनी भी नेअ़मतें अपने बन्दों के लिये पैदा फ़रमाई ये इतनी कसीर है कि इनका शुमार करना मुम्किन ही नही यहाँ तक कि अगर कोई अल्लाह तआ़ला की एक छोटी सी नेअ़मत की माअ़रिफ़त हासिल करने की कोशिश करे तो वो हासिल न कर सकेगा अगर तमाम इन्सान मिलकर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को शुमार करने की कोशिश करें और इस काम में वो कुल ज़िन्दगी सर्फ़ कर दें तब भी वो उस पर क़ादिर न हो सकेंगे अल्लाह तआ़ला जो तमाम मख़लूक़ को पैदा करने वाला है और वो जो इरादा करता है उसे कर गुज़रता है पस वो तख़लीक़ में यकता है और जिस तरह वो अपनी तख़लीक़ व तदबीर में यकता है इसी तरह वो अपनी उलूहियत (खुदाई, रब्बानियत) वहदानियत

और इ़बादत में भी यकता है और जिस तरह उस वक़्त उसका कोई शरीक न था जब रब तआ़ला ने तुम्हें व दीगर चीज़ों को पैदा किया पस उसकी इ़बादत में उसका हमसर न बनाओ बल्कि दीन को उसके लिये ख़ालिस रखो और उसकी नेअ़मतों पर कसरत से उसका शुक्र अदा करो हालांकि वो थोड़े से शुक्र को भी कुबूल करता है बावुजूद इसके कि उसके हम पर बहुत ज़्यादा इनाअ़मात हैं और जैसे उसकी रहमत बेहद बेइंतिहा है वैसे ही उसका जूदो करम ला महदूद और मग़फ़िरत ला मुतनाही है वो बड़ी शान वाला बड़ी अ़ज़मत का मालिक है तमाम मख़लूक़ में कोई अल्लाह तआ़ला की किसी एक सिफ़त का भी इहाता नहीं कर सकता वो बेनियाज़ है और हम सब उसके मोहताज हैं

दुनिया की बड़ी से बड़ी हस्ती खुद अपने बुजूद के लिये अल्लाह तआ़ला की मोहताज है पस अ़क़्लमंद और अहले ईमान ने अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत को अपने दिलों में बसा लिया और उनके दिल उससे बे पनाह मुहब्बत करते हैं और बदनी व माली इ़बादात और आअ़माले सालेहा में से जो कुछ भी उनकी इस्तिताअ़त में है वो अल्लाह की बारगाह में पेश करते हैं और उसके अस्माये हुस्ना और सिफ़ाते आ़लिया और अफ़आ़ले मुक़द्दसा के ज़िक्र के ज़रिये उसकी हम्दो सना बयान करते हैं

इन्सानी जिस्म में मौजूद और ज़मीन के ऊपर व इसके अन्दर और इसके दांये बांये और बादलों,

फ़ज़ाओं, हवाओं और आसमानो में बन्दों के लिये बेहिसाब नेअ़मतें हैं और इसके अ़लावा अल्लाह तअ़ाला की अपने बन्दों पर ये अ़ज़ीम नेअ़मत है कि वो अपने बन्दों के गुनाहों को बख़्श देता है और इन्सान के गुनाहों के बावुजूद अल्लाह तअ़ाला उन्हें नेअ़मतें देना बन्द नहीं करता वो बड़ा रहीम व करीम है पस हमें कसरत से उसका ज़िक्र और उसका शुक्र अदा करते रहना चाहिये

दुनिया में कई क़िस्म के लोग हैं बाअ़ज़ जो सिरे से अल्लाह तअ़ाला के वुजूद के क़ायल नहीं हैं और बाअ़ज़ मुश्रिकीन हैं जो अल्लाह तअ़ाला के वुजूद के क़ायल तो हैं लेकिन उन्होंने और भी बहुत सी चीज़ों को रब तअ़ाला का शरीक क़रार दे रखा है और बाअ़ज़ गुनाहगार मुसलमान हैं जो शैतानी या नफ़्सानी लग़ज़िशों की वजह से अल्लाह तअ़ाला के अहकाम की ख़िलाफ़ वरज़ी करते हैं और बाअ़ज़ इताअ़त शिअ़ार मुसलमान हैं लेकिन ऐसा नहीं कि अल्लाह तअ़ाला सिर्फ़ अपने इताअ़त शिअ़ार बन्दों को ही नेअ़मतें अ़ता करता हो और अपने मुन्किरों मुशरिकों और गुनाहगारों को महरुम रखता है बल्कि वो सबको नेअ़मतें अ़ता करता है

इन्सान को सबसे ज़्यादा हवा की ज़रुरत होती है अगर चन्द मिनट के लिये हवा न मिले तो इन्सान मर जाये अल्लाह तअ़ाला का ये बेहद बेइन्तिहा करम है कि उसने हवा को सबसे ज़्यादा आसान और अ़ाम कर दिया और हर शख़्स को-

बग़ैर किसी कोशिश और उजरत के सांस लेने के लिये हवा मयस्सर कर दी ये अल्लाह तआ़ला की कितनी अ़ज़ीम नेअ़मत है पस इन्सान पर वाजिब है कि वो नेअ़मतों का शुक्र अदा करे हालांकि जब उसकी नेअ़मतें ग़ैर मुतनाही हैं तो उसका शुक्र भी ग़ैर मुतनाही करना चाहिये मगर इन्सान मुतनाही वक़्त में ग़ैर मुतनाही शुक्र अदा नहीं कर सकता ये उसकी इस्तिताअ़त में ही नहीं है

सूरज और चाँद दो ऐसी नेअ़मतें है कि इनकी अहमियत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अगर सूरज और चाँद न होते तो अंधेरा कभी ख़त्म ही नहीं होता और सूरज और चांद मुअ़य्यन अन्दाज़ के साथ अपने अपने मनाज़िल और बुरुज में हरकत करते रहते हैं अगर सूरज हरकत करने के बजाए एक ही जगह खड़ा हो जाये तो कोई भी उससे फ़ायदा नहीं उठा सकता और अगर उसकी गर्दिश लोगों को माअ़लूम न हो तो लोग अपने मुआ़मलात ठीक तरह से सर अन्जाम नहीं दे सकते और सालों और महीनों का शुमार इन्हीं की रफ़्तार से होता है और अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये ज़मीन में बेशुमार अक़साम के फल, मेवे, सब्ज़ा और अनाज वग़ैराह पैदा फ़रमाये और भूसा तुम्हारे जानवरों के चारे के लिये पैदा फ़रमाया और ज़मीन में तरह तरह के खुश्बूदार फूल पैदा फ़रमाये ताकि उनकी खुश्बू सूंध कर तुम्हें फ़रहत हासिल हो और वो तुम्हारी ज़ैबो ज़ीनत में काम आयें और जैसा कि अल्लाह-

तआ़ला फ़रमाता है कि तुम अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे ये हिदायत और नसीहत करने का बेहतरीन उस्लूब है और इस उस्लूब को इख़्तियार करने का मक़सद ये है कि हर सुनने वाले के नफ़्स को तम्बीय हो और उसे अपने जुर्म व कोताही का हाल माअ़लूम हो जाये कि उसने किस क़दर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को झुठलाया है और उसे अपने करतूतों पर शर्म आये और इस तरह से वो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को शुक्र अ़दा करने और फ़रमां बरदारी करने की तरफ़ माइल हो और वो ये समझ ले कि अल्लाह तआ़ला की उस पर बेशुमार नेअ़मतें हैं

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपने सहाबा किराम के पास तशरीफ़ लाये और उनके सामने सू०-रहमान शुरु से लेकर आख़िर तक पढ़ी सहाबा किराम ये सूरह सुनकर ख़ामोश रहे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया मैंने ये सूरत जिन्नात को सुनाई तो उन्होंने तुमसे अच्छा जवाब दिया जब मैं ये आयत पढ़ता ''फ़बि अय्यि अलााई रब्बि कुमा तुकज़्ज़िबान'' तो वो कहते ऐ हमारे रब हम तेरी किसी भी नेअ़मत को नहीं झुठलाते हैं और तमाम ताअ़रीफ़ें तेरे ही लिये हैं।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/825-ह०-3291)

और वही जिसने दो समुन्दरों को मिला दिया है

उनमें से एक मीठा निहायत शीरी है और दूसरा खारी निहायत तल्ख़ है और उन दोनों के बीच में उसने एक पर्दा और मज़बूत रुकावट बना दी (कि वो दोंनों आपस में कभी नहीं मिलते।
(सू०-फुरक़ान-25/53)

और दो समुन्दर बराबर नहीं हो सकते उनमें से एक मीठा खूब मीठा है और प्यास बुझाने वाला है इसका पीना खुश गवार है और दूसरा खारी सख़्त कढ़वा है और तुम हर एक से ताज़ा गोस्त खाते हो और ज़ेवर (जिनमें मोती व मरजान और मूंगे वग़ैराह सब शामिल हैं उन्हें) निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तू कश्तियों और जहाज़ों को देखता है जो पानी को फाड़ते चले जाते हैं ताकि तुम तिजारती रास्तो से उसका फ़ज़्ल तलाश कर सको ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और वो रात को दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिन को रात में दाख़िल फ़रमाता है और उसने सूरज और चांद को एक निज़ाम की तहत मुसख़्ख़र फ़रमां रखा है हर कोई एक मुक़र्ररा मिआ़द के मुताबिक़ हरकत पज़ीर है यही अल्लाह तुम्हारा रब है उसी की सारी बादशाहत है। (सू०-फ़ातिर-35/12,-13)

अल्लाह तआ़ला ने मीठे और खारी दो ऐसे समुन्दर बहाये कि देखने में उनकी सतह आपस में मिली हुई लगती है क्योंकि उनके दरमियान फ़ासला करने के लिये ज़ाहिरी तौर पर कोई चीज़ हाइल नहीं है लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनके दरमियान

एक आड़ रख दी है जिसकी वजह से वो कभी भी एक दूसरे से नहीं मिलते और हर एक अपनी हद पर रहता है और दोंनों में से किसी का ज़ायका भी तब्दील नहीं होता हालांकि पानी की ख़ासियत ये है कि वो दूसरे पानी में फ़ौरन मिल जाता है और उसका ज़ायका भी तब्दील कर देता है और इसमें चलने वाली कश्तियाँ जिन चीज़ों से बनाई गईं हैं वो चीज़ें भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा की हैं और उनको कश्ती बनाने की तरकीब व कारीगरी करने की अ़क्ल अल्लाह तआ़ला ने दी दरियाओं में कश्तियों का चलना और तैरना ये सब अल्लाह तआ़ला की कुदरत से है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तुम्हारे ही फ़ायदे के लिये बड़ी बड़ी कश्तियाँ जारी फ़रमां कर तुम पर इनआ़म किया है

ज़मीन पर जितने जानदार हैं सब हलाक होने वाले हैं क्योंकि दुनिया में इन्सान व दीगर जानदारों का वुजूद आ़रज़ी है लिहाज़ा वो बाक़ी नहीं रहेगा और जो चीज़ बाक़ी न रहे वो फ़ानी होती है पस ज़मीन पर मौजूद तमाम मख़लूक़ फ़ना हो जायेगी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात बाक़ी रहेगी जो अ़ज़मत व किबरियाई वाली है पस जो नेअ़मतें फ़ना होने के बाद जैसे दोबारा ज़िन्दा होना दायमी ज़िन्दगी मिलना, हमेशा बाक़ी रहने वाली नेअ़मतें अ़ता होना वग़ैराह पस इन तमाम नेअ़मतों पर अल्लाह तबारक व तआ़ला की हम्दो सना के साथ कसरत से उसका शुक्र अदा किया करो आसमानों में रहने वाले फ़रिश्ते हों या ज़मीन पर रहने वाले

जिन्न या इन्सान या और कोई मख़्लूक़ हो कोई भी अल्लाह तअ़ाला से बेनियाज़ नहीं बल्कि सबके सब अल्लाह तअ़ाला के फ़ज़्ल के मुहताज है और सब उसकी बारगाह के सवाली हैं और हर मख़्लूक़ ख़्वाह वो कितनी ही बड़ी ही क्यों न हो वो अपनी ज़रुरियात को अज़ खुद पूरा करने से आजिज़ है और अल्लाह तअ़ाला की मुहताज है और अल्लाह तअ़ाला की शान ये है कि वो तमाम जानदार को रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है ख़्वाह वो ज़मीन के उपर हों या ज़मीन के नीचे या पानी के अन्दर हों वो सबको खिलाता पिलाता है और उनकी ज़रुरियात को पूरा फ़रमाता है और वो गुनहागारों को बख़्श देता है और मसाइब व आलाम को दूर करता है और दुअ़ा करने वाले की दुअ़ा कुबूल फ़रमाता है मरीज़ को शिफ़ा देता और माँगने वाले को अ़ता करता है वही कायनात का ख़ालिक़ व मालिक है पस बन्दे को चाहिये कि अपने रब के इन बेशुमार व लाताअ़दाद एहसानात को याद रखे और उसका शुक्र अदा करता रहे

अल्लाह तअ़ाला सज़ा देने पर क़ादिर होने के बावुजूद हमें नसीहत करता है और अपने अ़ज़ाब से डराता है और कुरान मजीद में सैंकड़ों मक़ामात पर अल्लाह तअ़ाला ने गुज़िश्ता क़ौमों पर मुसल्लत होने वाले मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब और क़ब्र व क़यामत और दोज़ख़ के सख़्त तरीन दर्दनाक अ़ज़ाब का ज़िक्र करके हमें ख़बर दी ताकि हम इससे इबरत व नसीहत हासिल करें और गुनाहों से इजतिनाब-

करते हुये अपने रब के फ़रमां बरदार बन जायें और उसके इताअ़त गुज़ार बन्दे बन जायें और उसकी फ़रमां बरदारी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दें अल्लाह तआ़ला का बेहद फ़ज़्लो करम है कि वो हम पर आसानी फ़रमां कर और हमारे गुनाहों की मुआ़फ़ी से हमें नवाज़ कर हम पर एहसानात व इनाअ़मात फ़रमाता है और पहले से ये सब ख़बरें देना ये भी अल्लाह तआ़ला की बड़ी नेअ़मत है ताकि हम उसकी ना फ़रमानी से बाज़ रहकर रब तआ़ला की नाराज़गी और उसके गज़ब व अ़ज़ाब खुद को बचा सकें क़यामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला मख़लूक़ के हिसाब का हुक्म देगा तो उस वक़्त भी हमें अल्लाह तबारक व तआ़ला क़यामत की हौलनाकियों से निजात देगा

क़यामत के दिन मुजरिम अपने चेहरों से इस तरह पहचाने जायेंगे कि उनके मुँह काले व आँखें नीली होंगी तो हिसाब के बाद जहन्नम के ख़ाज़िन उन्हें पकड़ेंगे और उनके हाथ गर्दन से बांध देंगे और उनके पाँव पीठ के पीछे से लाकर पेशानियों से मिला देंगे फिर उन्हें चेहरों के बल घसीट कर दोज़ख़ में फेंक देंगे और बाअ़ज़ मुजरिम पेशानियों से घसीटे जायेंगे और बाअ़ज़ पाँव से घसीट कर जहन्नम में डाले जायेंगे जहन्नमियों पर भूक अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा हत्ता कि जब वो खाने के लिये चीखेंगे तो उन्हें थूहर ज़क्कूम (एक कांटे दार ज़हरीला पौधा) खिलाया जायेगा वो उनके हलक में चुभकर अटक जायेगा तब वो पानी मागेंगे तो फिर

उन्हें वहाँ ले जायेगा जहां खोलते पानी का चश्मा होगा जब वो पानी उनके क़रीब किया जायेगा तो उनके चेहरे की खाल गलकर उसमें गिर जायेगी फिर जब वो उस खौलते हुये पानी को पियेंगे तो वो पानी उनके पेट की आंते और पेट में मौजूद हर चीज़ को गलाकर बाहर निकाल देगा ऐ गिरोहे जिन्न व इन्सान फ़रिश्तों का तुममें से मुजरिमों व इताअ़त गुज़ारों को उनकी अ़लामत से पहचान लेना और सिर्फ़ मुजरिमों को ज़िल्लत अंगेज़ और सख़्त अ़ज़ाब से दो चार करना और इताअ़त गुज़ारों को महफ़ूज़ रखना ये अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत है और अल्लाह तआ़ला का अपनी ना फ़रमानी के इस अंजाम से इस दुनिया में हमें आगाह फ़रमां देना भी उसकी एक बड़ी नेअ़मत है

अल्लाह तआ़ला ने अपने मुत्तक़ी और मोमिन बन्दों के लिये जन्नतें पैदा फ़रमाई हैं उनमें फलो से लदे हुये शाख़ों वाले दरख़्त हैं जिनकी हर शाख़ में क़िस्म क़िस्म के फल हैं और उनमें साफ़ और मीठे पानी के चश्में बह रहे हैं जो पीने वालों के लिये निहायत लज़ीज़ हैं जन्नती लोग बादशाहों की तरह आराम व राहतो सुकून में ऐसे बिछौनों पर टेक लगाये बैठे हुये होंगे जिनके अन्दरुनी हिस्से मोटे रेशम के होंगे और उन जन्नतों के फल इतने क़रीब होंगे कि खड़े बैठे हुये हर शख़्स उसे चुन सकेगा और उन जन्नतों में जन्नती मर्दों के लिये ऐसी बीवियां होगी जो अपने शौहरों के अ़लावा किसी और की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी

और उन्हें उससे पहले किसी ने हाथ नहीं लगाया होगा और वो बीविया इतनी हसीन व जमील और खूबसूरत होंगी कि दुनिया में उनकी कोई मिसाल मौजूद नहीं अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस और मुत्तक़ीन बन्दों के लिये दो जन्नतें होंगी और मज़ीद दो और जन्नतें उन्हें अ़ता की जायेंगी कि जिनमें पहली दो जन्नतें सोने और चांदी की होंगी और दूसरी दो जन्नतें याकूत और ज़बरजद की हैं उन जन्नतों में हर तरह के मेवे होंगे

पस इताअ़त गुज़ारों को ऐसा सवाब देकर अल्लाह तआ़ला ने हम पर इनआ़म किया अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और नेक आअ़माल के सबब जन्नत और उसकी बेशुमार दायमी नेअ़मतें अ़ता फ़रमायेगा और जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों का पहले से बयान फ़रमाना ये भी अल्लाह तआ़ला का बड़ा एहसान है ताकि बन्दे उसके एहसान को मानें और उसका शुक्र अदा करें पस रब तआ़ला नेक आअ़माल करने वालों को ऐसा अ़ज़ीम सवाब और जन्नत जैसी अ़ज़ीम नेअ़मत अ़ता फ़रमायेगा

पाक है वो ज़ात जो फ़ज़्लों करम का मालिक है और बेहद और बेहिसाब अ़ता करने वाला है जिसकी नवाज़िशें ज़मीन व आसमान वालों सबके लिये आ़म हैं उसका लुत्फ़ो करम हर घड़ी हर लम्हें तमाम मख़लूक़ पर साया फ़िगन है निहायत बुलन्द है वो जो अपने गुनाहगार बन्दों पर वसीअ़ करम फ़रमाता है और उनकी मग़फ़िरत फ़रमाता है और

वो पाक ज़ात जो हम मुसलमानों को इम्तिहान व आज़माइश वाले घर से हमेशा की ज़िन्दगी वाले घर में मुन्तक़िल फ़रमायेंगा

जिस चीज़ के साथ बग़ैर गरज़ बग़ैर ऐवज़ के एहसान करने और नफ़अ़ पहुँचाने का क़सद किया जाये उसको नेअ़मत कहते हैं और नेअ़मतों की भी कई क़िस्में होती हैं मसलन अ़ाम व ख़ास दुनियावी व दीनी इनकी भी दो क़िस्में होती हैं ज़ाहिरी और बातिनी जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

उसने तुमको अपनी तमाम ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें अ़ता की (सू०-लुक़मान-31/20) तो ज़ाहिरी नेअ़मतें वो हैं जो आँखों से नज़र आती हैं मसलन इन्सान का माल और मन्सब व मर्तबा और उसका हुस्नो जमाल और दीन इस्लाम व इ़ल्म व इ़बादत की तौफ़ीक़ और औलाद, बीवी, शौहर वग़ैराह व दीगर दुनियावी नेअ़मतें और बातिनी नेअ़मतें वो हैं मसलन अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुम्हारी बद आअ़मालियों पर पर्दा कर रखा है और माअ़रिफ़त व अ़क़्लो फ़हम और उख़्र'वी नेअ़मतें जो तुम्हारे नेक आअ़माल के सिले में तुम्हें अ़ता होंगी और अल्लाह तआ़ला का तुम्हारे मसाइब व आलाम को दूर करना और तुम्हारे गुनाहों को मुआ़फ़ करना।

इसी तरह ज़ाहिरी नेअ़मत इ़बादत व नेक अ़मल की तौफ़ीक़ और बातिनी नेअ़मत इख़्लास और दिखावे से महफ़ूज़ रहना है ज़ाहिरी नेअ़मत-

ज़बान से ज़िक्र करना है बातिनी नेअ़मत दिल से ज़िक्र करना है ज़ाहिरी नेअ़मत कुरान की तिलावत करना है बातिनी नेअ़मत कुरान की माअ़रिफ़त है ज़ाहिरी नेअ़मत दिन की रौशनी है जिसमें इन्सान कस्बे मआ़श करता है और बातिनी नेअ़मत रात है कि जिसमें वो आराम करता है और सुकून से सोता है ज़ाहिरी नेअ़मत ज़बान से कलाम करना है और बातिनी नेअ़मत अ़क्ल से तदबीर करना है और माँ के पेट से निकलने के बाद जो चीज़ें मिलें वो ज़ाहिरी नेअ़मत और माँ पेट में जो गिज़ा और दूसरी चीजें मिलें वो बातिनी नेअ़मत है व ज़ाहिरी नेअ़मत माल और औलाद हैं और बातिनी नेअ़मत हिदायत है ज़ाहिरी नेअ़मत वो अमराज़ व मसाइब हैं जिनको अल्लाह तबारक व तआ़ला गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है और बातिनी नेअ़मत दुनिया व आख़िरत में अल्लाह तआ़ला का मुवाख़िज़ा न करना और इस तरह अल्लाह तआ़ला की ज़ाहिरी व बातिनी नेअमतें हद व शुमार से बाहर हैं

शुक्र आअ़ला दर्जे की इबादत है और शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ज़ीम सआ़दत है शुक्र में ही नेअ़मतों की हिफ़ाज़त है और ना शुक्री बाइसे हलाकत है और नेअ़मतों में रुकावट है हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह की नेअ़मतों को शुक्र के ज़रिये महफ़ूज़ कर लो हज़रत इमाम हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं जो फ़क़त खाने व पीने व लिबास ही को अल्लाह की नेअ़मत समझे तो यक़ीनन उसका इ़ल्म कम व अ़ज़ाब क़रीब है।

# -: शुक्र के फ़वाइद :-

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और याद करो जब तुम्हारे रब ने आगाह फ़रमाया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (नेअ़मतों में) ज़रुर इज़ाफ़ा करुंगा और अगर तुम ना शुक्री करोगे तो यक़ीनन मेरा अ़ज़ाब सख़्त है। (सू०-इब्राहीम-14/7)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और अल्लाह अ़नक़रीब (मसाइब पर साबित क़दम रहकर) शुक्र करने वालों को जज़ा अ़ता फ़रमायेगा (सू०-आले इमरान-3/144)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उसका शुक्र अदा करो और जो शुक्र करता है वो अपने ही फ़ायदे के लिये शुक्र अदा करता है जो ना शुक्री करता है तो बेशक अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है खुद ही सज़ावारे हम्द है। (सू०-लुक़मान-31/12)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और जिसने (अल्लाह का) शुक्र अदा किया सो वो महज़ अपनी ही ज़ात के फ़ायदे के लिये शुक्र मंदी करता है और जिसने ना शुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़ करम फ़रमाने वाला है।
(सू०-नम्ल-27/40)

शुक्र की हक़ीक़त ये है कि बन्दा हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करे और नेअ़मतें देने वाले की नेअ़मत का उसकी ताअ़ज़ीम के साथ इक़रार करे और वो अपने नफ़्स को इस चीज़ का आ़दी बनाये कि जो कुछ भी मेरे पास था और जो कुछ मेरे पास है वो सब कुछ अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मत है और बन्दा अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों व उसके फ़ज़्लो करम और एहसान को कभी न भूले और जब बन्दा ऐसा करता है तो उसके शुक्र अदा करने में उसकी मशगूलियत बढ़ जाती है फिर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसको मज़ीद नेअ़मतें अ़ता होती हैं और जैसे जैसे बन्दे के शुक्र करने में इज़ाफ़ा होता है वैसे वैसे उसकी नेअ़मतों में भी इज़ाफ़ा होता है और बन्दे के दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत बढ़ती चली जाती है और जिसके दिल में अल्लाह तबारक व तआ़ला की मुहब्बत इस हद तक बढ़ जाये कि दुनिया की तमाम नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत ग़ालिब और मुक़द्दम हो जाये तो वो शख़्स दुनिया व दुनिया की नेअ़मतों से बेरग़बत और बे पर‘वाह हो जाता है और वो अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रब बन्दा बन जाता है फिर अल्लाह तआ़ला उसे बिना मांगे उसकी नेअ़मतों में कसीर इज़ाफ़ा फ़रमाता है

हज़रत बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जब कोई शख़्स अपनी किसी नेअ़मत पर ‘अल्हम्दुलिल्लाह’ कहता है तो उसकी बरकत से उसकी लिये मज़ीद नेअ़मत वाजिब हो-

जाती हैं और उसके ‘‘अल्हम्दुलिल्लाह’’ कहने की वजह से उसे एक और नेअ़मत मिल जायेगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें कभी ख़त्म नहीं होती (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/85-ह०-4408)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि जिसे शुक्र करने की नेअ़मत बख़्शी गई हो फिर उसे इज़ाफ़ी नेअ़मतों से महरुम किया गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ‘‘अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (नेअ़मतों में) ज़रुर इज़ाफ़ा करुंगा’’ (सू०–इब्रहीम–14/7) और ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि जिसे दुआ़ की तौफ़ीक़ दी गई हो फिर उसे कुबूलियत से रोका गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ‘मुझसे दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ को कुबूल करुंगा’ (सू०–मोमिन/ग़ाफ़िर–40/60) और ऐसा कभी नहीं हुआ कि जिसे इस्तिग़फ़ार करने की नेअ़मत अ़ता की गई हो फिर उसे मग़फ़िरत से महरुम रखा गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ‘अपने रब से इस्तिग़फार करो बेशक वो बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला है’ (सू०–नूह–71/10) और ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि जिसे तौबा की तौफ़ीक़ बख़्शी गई हो वो कुबूलियत से रोका गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ‘वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है (सू०–शूरा –42/25) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/106-4527)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि

अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे को कोई नेअ़मत अ़ता फ़रमाये और वो यक़ीन रखता हो कि ये नेअ़मत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये उस नेअ़मत का शुक्र अदा करना लिख देता है हालाँकि उसने उस नेअ़मत का ज़बान से शुक्र अदा नहीं किया होता है और जब कोई बन्दा गुनाह करे और उस पर नादिम हो तो उसके इस्तिग़फ़ार करने से पहले ही सिर्फ़ नदामत की बिना पर अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फिरत फ़रमां देता है और जो शख़्स नया कपड़ा ख़रीदे फिर उसको पहने और उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे तो मुकम्मल लिबास पहनने से पहले ही अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फ़िरत फ़रमां देता है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/297-ह०-1894)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/79-ह०-4379)

➡हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुझे ये हदीस पहुँची है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी क़ौम को नेअ़मत अ़ता फ़रमाता है तो उनसे शुक्र अदा करने का मुतालबा करता है जब वो शुक्र करें तो अल्लाह तआ़ला उनकी नेअ़मतों को और ज़्यादा कर देता है और जब वो ना शुक्री करें तो फिर अल्लाह तआ़ला उनको अ़ज़ाब देने पर क़ादिर है और वो उनकी नेअ़मतों को उन पर अ़ज़ाब बना देता है।
(रसाइल–इब्ने अबी दुनिया–1/484-60)

➡ हज़रत मुआ़ाज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मन्कूल है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनका हाथ पकड़ा और फ़रमाया ऐ मुआ़ाज़ अल्लाह की क़सम मुझे तुमसे मुहब्बत है फिर फ़रमाया ऐ मुआ़ाज़ मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि किसी भी नमाज़ के बाअ़द ये दुआ़ हरगिज़ तर्क न करना ''ऐ अल्लाह अपना ज़िक्र करने और शुक्र करने और बेहतरीन अंदाज़ में अपनी इ़बादत करने में मेरी मदद फ़रमां
(अबू दाऊद–सुनन–2/199-ह०-1522)
(नसाई–सुनन–3/137-ह०–1304)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला जब किसी बन्दे पर इनआ़ाम करता है और वो उस नेअ़मत पर 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहता है तो वो उस नेअ़मत का शुक्र अदा कर लेता है और अगर वो दूसरी बार अल्हम्दुलिल्लाह कहता है तो उसके लिये सवाब मुक़र्रर कर देता है और अगर वो तीसरी बार अल्हम्दुलिल्लाह कहता है तो उसके सब गुनाह मुआ़ाफ़ कर दिये जाते हैं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/84-ह०-4402)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर अपने बन्दों को शुक्र करने की तल्क़ीन व तरग़ीब फ़रमाई और अल्लाह तआ़ाला ने ये ऐअ़लान फ़रमाया और वाअ़दा किया कि अगर–

तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा यानी अपनी नेअ़मतों में इज़ाफ़ा करूँगा और शुक्र इस तरह से हो कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का दिल व ज़बान से इक़रार करना और उसकी हम्दो सना करना और नेअ़मतों को अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के मुताबिक़ सर्फ़ करना और इन उमूर के बरअ़क्स र'वैया इख़्तियार करना अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री व नाफ़रमानी है अल्लाह तआ़ला ने शुक्र करने और ना शुक्री से बचने के लिये अ़क़्ल, इ़ल्म, फ़हम, फ़िक्र और अम्बिया किराम व उल्मा किराम व औलिया किराम और कुतुबे आसमानी बन्दों के पास भेजी ताकि ताअ़लीमे अम्बिया और तबलीग़े उ़ल्मा और तरबियत औलिया के ज़रिये शुक्र व ना शुक्री का अवाम को पता चले कि शुक्र का फ़ायदा और ना शुक्री के नुक़सान क्या हैं

शुक्र की खुसूसन तीन क़िस्में हैं एक ये कि दिल से शुक्र करना यानी दिल का एतक़ाद कि जो कुछ हमें अ़ता हुआ है वो सब कुछ पाक पर'वर दिगार की तरफ़ से अ़ता हुआ है व दूसरी ये कि नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ला की ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ बयान करना ये ज़बान का शुक्र है तीसरी ये कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इ़ताअ़त और नेक आअ़माल करना ये आज़ा का शुक्र है अल्लाह तआ़ला के अस्मा में से एक इस्म शकूर है इसका माअ़नी है वो बन्दों के कम आअ़माल को बढ़ाकर कई गुना कर देने वाला उनकी कम इ़बादत की ज़्यादा जज़ा देने वाला और अल्लाह तआ़ला के शुक्र माअ़नी है

बन्दो को बख़्श देना जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और लोगों के एहसानात व उनकी नेकियों का इन्कार करे तो अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स का शुक्र कुबूल नहीं करता पस हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला के साथ साथ लोगों का भी शुक्र अदा करें लोगों के हम पर एहसानात व हमारे साथ उनकी नेकियों व भलाईयों पर भी हम लोगों का शुक्र अदा करें जिस शख़्स की ये आ़दत हो कि वो लोगों के एहसानात को फ़रामोश कर देता हो व उनकी नेकियों का शुक्र अदा न करता हो तो वो अपनी आ़दत और अपनी तबीअ़त के तक़ाज़े से अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की नाशुक्री ही करेगा अगर कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र अदा करे और लोगों का शुक्र अदा न करे तो फिर वो इस तरह है जैसे उसने अल्लाह तआ़ला शुक्र अदा किया ही नहीं।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को शुक्र अदा नहीं करता वो अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता।
(अबू दाऊद–सुनन–6/650-ह०-4811)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048-ह०-1954)
(मुस्नद अहमद–10/288-ह०-2291)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/455-ह०-3407)

➡ हज़रत अशअ़त (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला का सबसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार बन्दा वही होता है जो लोगों का सबसे ज़्यादा शुक्रिया अदा करता है। (मुस्नद अहमद–10/288-ह०-22190)

लोगों के एहसानात और उनके अच्छे मुआ़मले पर शुक्र का इज़हार इन्सान के साहिबे हुस्ने खुल्क़ होने की दलील होता है और इन्सान जो एहसान करता है अस्ल में वो अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से ही होता है लिहाज़ा लोगों के एहसानात का भी शुक्र अदा करना चाहिये और अल्लाह तआ़ाला का भी शुक्र अदा करना चाहिये।

➡हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया– कि जो क़लील नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं करता वो ज़्यादा नेअ़मतों का भी शुक्र अदा नहीं करता और जो लोगों का शुक्र नहीं करता वो अल्लाह का शुक्र भी नहीं करता और अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतों का बयान करना शुक्र है और अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतों का बयान न करना ना शुक्री है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/87-ह०-4419)

➡हज़रत दाऊ़द (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि ऐ मेरे रब मैं तेरा शुक्र किस तरह अदा करूँ क्योंकि जो मैं तेरी हम्दो सना करके तेरा शुक्र करता हूँ तो–

मेरा हम्दो सना करना भी तेरी नेअ़मते तौफ़ीक़ से होता है यानी अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना भी अल्लाह ही की तरफ़ से ही होता है तो फिर मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ पस अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ दाऊद क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पास जो नेअ़मतें हैं वो मैंने ही अ़ता की हैं उन्होंने कहा जी हाँ ऐ मेरे रब मैं जानता हूँ फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि बेशक इसी बात पर बतौर शुक्र मैं तुमसे राज़ी हो गया हूँ।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/86-ह०-4414)

➡हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब क्या तेरी मख़लूक़ में किसी ने ऐसी रात गुज़ारी है कि उसने तेरा ज़िक्र मुझसे ज़्यादा तवील किया हो तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हाँ मेढ़क ने तुझसे तवील ज़िक्र किया है दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज किया ऐ मेरे रब मैं तेरे शुक्र की कैसे इस्तिताअ़त रख सकता हूँ कि तू मुझ पर इनआ़म करता है फिर तू ही उस नेअ़मत पर शुक्र की तौफ़ीक़ भी देता है फिर तू मेरे ऊपर नेअ़मतों पर नेअ़मतों का इज़ाफ़ा किये जाता है और इस तरह ला मुतनाही नेअ़मतों का तसलसुल जारी रहता है फिर नेअ़मत भी तेरी तरफ़ से आती है और फिर उस पर शुक्र की ताक़त भी तेरी तरफ़ से आती है और शुक्र की तौफ़ीक़ भी तेरी नेअ़मत है फिर मैं कैसे तेरा शुक्र करने की ताक़त रख सकता हूँ रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ दाऊद अभी तुमने मुझे पहचाना है

और तुमने मेरी माअ़रिफ़त हासिल की है जैसा कि मेरी माअ़रिफ़त का हक़ था।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/86-ह०-4413)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जब बैतुल ख़ला से आते थे तो कहते थे कि 'तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने मुझे तुअ़ाम की लज़्ज़त चखाई और उसकी नफ़्अ़ा देने चीज़ मेरे जिस्म में बाक़ी रखी और उसकी घिनोनी चीज़ को मुझसे ख़ारिज कर दिया'। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/96-ह०-4469)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला जिसको कोई नेअ़मत अ़ता करे तो उसे चाहिये कि अल्हम्दु लिल्लाह कहे यानी इस तरह वो अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करे और जिसका रिज़्क़ मुअ़ख़्ख़र हो जाये तो उसे चाहिये कि वो इस्तिग़फ़ार पढ़े और जिसको कोई मुश्किल पेश आये उसे चााहिये कि वो 'ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह' पढ़े।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/92-ह०-4446)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स में तीन ख़सलतें हों तो अल्लाह तअ़ाला उसे अपनी–

रहमत में दाख़िल फ़रमायेगा और वो तीन ख़सलतें ये हैं कि जब उसे कुछ दिया जाये तो वो शुक्र करे और जब वो बदला लेने पर क़ादिर हो तो मुआ़फ़ कर दे और जब गुस्सा आये तो वो रुक जाये यानी ढीला व नरम पड़ जाये।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/90-ह०-4432)

हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ जबकि तेरी सबसे छोटी नेअ़मत की जज़ा भी मेरी तमाम इ़बादत नहीं हो सकती है तो उन पर वही आई कि अब तुमने तेरा शुक्र अदा कर दिया है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/87-ह०-4415)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्ललाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे पहले उन लोगों को जन्नत में बुलाया जायेगा जो राहतो आसाइश और तकलीफ़ो मुसीबत यानी दोनों हालतों में अल्लाह तआ़ला की हम्द व शुक्र करते हैं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/98-ह०-4483)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का एक शख़्स के पास से गुज़र हुआ वो कह रहा था कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं कि जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत दी और मुझे नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की–

उम्मत में रखा ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुमने बहुत अ़ज़ीम शुक्र अदा किया है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/101-ह०-4498)

➡ हज़रत सुहैब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान के मुआ़मले पर तआ़ज्जुब होता है कि उसके हर नेक काम में ख़ैर ही ख़ैर है अगर उसे खुशी हासिल हो तो वो उस पर शुक्र करता है और ये उसके लिये ख़ैर है क्योंकि उसे अज्रो सवाब मिलेगा और अगर उस पर कोई मुसीबत आये तो वो उस पर सब्र करता है ये भी उसके लिये ख़ैर ही है क्योंकि उसके सब्र पर उसे सवाब हासिल होगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/99-ह०-4487)

➡ एक शख़्स ने कहा ऐ मेरे रब कसीर ताअ़दाद में तेरा शुक्र है जिस तरह ऐ मेरे रब तू कसीर ताअ़दाद में हमें नेअ़मतें अ़ता करता है जब हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये सुना तो आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ाला तुझसे मुहब्बत भी कसीर करता है
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/94-ह०-4460)

अल्लाह तआ़ाला शुक्र गुज़ारों को दुनिया में भी बदला देता है और आख़िरत में भी सवाब अ़ता फ़रमायेगा और शुक्र का नफ़अ़ शुक्र करने वाले–

की तरफ़ ही लौटता है और जो शुक्र अदा नहीं करता तो उसका वबाल उसी पर होगा और बन्दे को चाहिये कि उसे जो भी नेअ़मत अ़ता हो उस नेअ़मत पर वो खुदपसंदी का शिकार न हो क्योंकि खुदपसंदी इंतिहाई मज़मूम अ़मल है और इसकी आफ़ात बहुत ज़्यादा हैं इससे तकब्बुर पैदा होता है और तकब्बुर अल्लाह तआ़ला को क़तई पसंद नहीं और इससे बेशुमार आफ़तें पैदा होती हैं खुंदपसंदी की वजह से बन्दा अपने गुनाहों को भूलने और नज़र अंदाज करने लग जाता है और वो अपनी इ़बादात व नेक आअ़माल को याद रखता है और उन पर खुश होता है और अपनी नेअ़मते इबादत व नेअ़मते नेक अ़मल को अपना कमाल समझता है जबकि जो कुछ बन्दे को अ़ता होता है वो सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता होता है और इस तरह वो अल्लाह तआ़ला के एहसान व उसके फ़ज़्लो करम को फ़रामोश कर देता है और वो ना शुक्रा हो जाता है

जब तक बन्दे के नेक आअ़माल ख़ालिस और रियाकारी की आमेज़िश से पाक न हों तब तक वो उसके लिये नफ़अ़ा बख़्श नहीं होते और हर नेक अ़मल के लिये ये तसव्वुर निहायत ज़रुरी है कि हर नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होती है और ये बन्दे के इख़्तियारात व तसर्रुफ़ात में ही नहीं है कि वो अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ और उसके फ़ज़्लो करम के बग़ैर कोई भी नेक अ़मल कर सके और खुद पसंद आदमी-

अपने आप पर और अपनी राय पर मग़रुर होता है इसलिये नेअ़मत व सलाहियत पर खुदपसंदी से बचना चाहिये और अपनी हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल की तरफ़ मन्सूब करना चाहिये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास एक मेहमान आया तो आपने उसे अपनी अज़वाजे मुताह्हरात की तरफ़ किसी को भेजा ताकि वो उनके पास खाना तलाश करे लेकिन उसने किसी के पास भी खाना न पाया इस पर रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दुआ़ मांगी ऐ अल्लाह मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल और तेरी रहमत का सुवाल करता हूँ इतने में आपकी बारगाह में भुनी हुई बकरी तोहफ़े के तौर पर पेश की गई तो आपने फ़रमाया ये अल्लाह के फ़ज़्ल से है।
(हिल्यातुल औलिया–5/33-ह०-6245)

इसी तरह यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) ने तौहीद पर होने व शिर्क से महफ़ूज़ रहने को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम की तरफ़ मन्सूब करते हुये फ़रमाया जिसका ज़िक्र कुरान मजीद में कुछ इस तरह है–

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब (अ़लैहिमुस्सलाम) के दीन की पैर‘वी कर रखी है हमें कोई हक़ नहीं कि हम किसी चीज़

को भी अल्लाह के साथ शरीक ठहरायें ये तौहीद हम पर और लोगों पर अल्लाह तआ़ला का एक (ख़ास) फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (सू०–यूसुफ़–12/38)

इसी तरह जब हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) ने तख़्ते बिलकीस को पलक झपकने से पहले अपने पास रखा हुआ देखा तो आप ने फ़रमाया जिसका ज़िक्र कुरान मजीद में कुछ इस तरह है–

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

ऐ मेरे रब का फ़ज़्ल है ताकि वो मुझे आज़माये कि मैं शुक्र गुज़ारी करता हूँ या ना शुक्री। (सू०–नम्ल–27/40)

हज़रत सुलेमान व हज़रत दाऊ़द (अ़लैहिमस्सलाम) को अल्लाह तआ़ला ने ताअ़लीम दी तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला शुक्र बजा लाते हुये कहा जिसका ज़िक्र कुरान मजीद में कुछ इस तरह है–

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और बेशक हमने दाऊद और सुलेमान को इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और दोंनों ने कहा तमाम ताअ़रीफें अल्लाह ही के लिये हैं जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर फ़जीलत दी। (सू०–नम्ल–27/15)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के

जानशीन हुये और उन्होंने कहा कि ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हमें हर चीज़ अ़ता की गई बेशक ये अल्लाह का वाज़ेह फ़ज़्ल है (सू०–नम्ल–27/16)

अल्लाह तआ़ला हर शैः से बेनियाज़ है और तमाम मख़लूक़ अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम की मोहताज है और अल्लाह तआ़ला जिसे जितना चाहता है उस पर उतना फ़ज़्लो करम फ़रमाता है।

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और इस्माईल व ईसा और यूनुस व लूत (अ़लैहि-मुस्सलाम) को हिदायत से शरफ़ेयाब फ़रमाया और हम ने इन सबको अपने ज़माने के तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी। (सू०–अनआ़म–6/86)

ऐ औलादे याअ़क़ूब मेरे वो इनआ़म याद करो जो मैंने तुम पर किये और (खुसूसन) ये कि मैंने तुम्हें (उस ज़माने में) सब लोगों पर फ़ज़ीलत दी। (सू०–बक़राह–2/47,2/122)

कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है वही नाज़िल फ़रमाता है। (सू०–बक़राह–2/90)

और अल्लाह जिसे चाहता है उसे अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (सू०–बक़राह–2/105)

बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाता है मगर अक्सर लोग उसका शुक्र अदा नहीं करते। (सू०–बक़राह–2/243)

फिर उन्होंने उन (जालूती फ़ौजों) को अल्लाह के अम्र से शिकस्त दी और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल कर दिया और अल्लाह तआ़ला ने उनको (यानी दाऊद अ़लैहिस्सलाम को) हुकूमत व हिकमत अ़ता की और उन्हें जो चाहा सिखाया और अगर अल्लाह लोगों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के ज़रिये न हटाता रहता तो (फिर) ज़मीन (में इन्सानी ज़िन्दगी बाअ़ज़ जाबिरों के मुसलसल तसल्लुत व जुल्म के बाइस) बर्बाद हो जाती मगर अल्लाह तआ़ला तमाम जहानों पर बड़ा ही फ़ज़्ल फ़रमाने बाला है। (सू०–बक़राह–2/251)

ये सब रसूल जो हमने मबऊ़स फ़रमाये हैं हमने उनमें से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी उनमें से किसी से अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़रमाया और किसी को दरजात में सब पर फ़ौक़ियत दी (यानी हुजर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को जुमला दरजात में सब पर बुलन्दी अ़ता फ़रमाई) और हमने मरयम के फरज़न्द ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को वाज़ेह निशानियाँ अ़ता कीं और हमने पाकीज़ा रुह के ज़रिये उसकी मदद फ़रमाई। (सू०–बक़राह–2/253)

और अल्लाह तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल

का वाअ़दा फ़रमाता है और अल्लाह बहुत वुसअ़त वाला खूब जानने वाला है। (सू०–बक़राह–2/268)

बेशक फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ में है जिसे वो चाहता है अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह वुसअ़त वाला बड़े इ़ल्म वाला है।
(सू०–आले इमरान–3/73)

वो जिसे चाहता है अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (सू०–आले इमरान–3/74)

और अल्लाह तआ़ला से उसका फ़ज़्ल तलब किया करो। (सू०–निसा–4/32)

अगर तुम अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो यक़ीनन चन्द एक के सिवा तुम सब शैतान की पैर'वी करने लगते।
(सू०–निसा–4/83)

और ऐ हबीब अगर आप पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व उसकी रहमत न होती तो उन दग़ाबाज़ों में से एक गिरोह ये इरादा कर चुका था कि वो आपको बहका दें जबकि वो महज़ अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और आपका तो कुछ भी बिगाड़ ही नहीं सकते और अल्लाह तआ़ला ने आप पर किताब और हिकमत नाज़िल फ़रमाई है और उसने आपको वो सब इ़ल्म अ़ता कर दिया–

जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। (सू०–निसा–4/113)

पस जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे वो उन्हें पूरे के पूरे अज्र अ़ता फ़रमायेगा और फिर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़्यादा अ़ता करेगा और वो लोग जिन्होंने अल्लाह की इ़बादत से आ़र महसूस की व तकब्बुर किया तो वो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा और वो अपने लिये अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त पायेंगे और न कोई मददगार। (सू०–निसा–4/173)

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और उसको मज़बूती से पकड़े रखा तो अ़नक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी ख़ास रहमत व फ़ज़्ल में दाख़िल फ़रमायेगा और उन्हें अपनी तरफ़ से सीधा रास्ता दिखायेगा। (सू०–निसा–4/175)

और ऐसे लोगों का रोज़े क़यामत के बारे में क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधते हैं बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र गुज़ार नहीं हैं। (सू०–यूनुस–10/60)

और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाये तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं है और अगर वो तुम्हारे साथ भलाई का इरादा फ़रमाये तो कोई भी उसके फ़ज़्ल को रद्द करने वाला नहीं है

वो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुँचाता है और वो बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सू०–यूनुस–10/107)

और आपका रब उन सब को खूब जानता है जो आसमानो और ज़मीन में (आबाद) हैं और बेशक हमने बाअ़ज़ अम्बिया को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी और हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को ज़बूर अ़ता की। (सू०–बनी ईसराईल–17/55)

और बेशक हमने बनी आदम को इ़ज़्ज़त बख़्शी और हमने उनको खुश्की और तरी में मुख़्तलिफ़ सवारियों पर सवार किया और हमनें उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ अ़ता किया और हमने उन्हें अक्सर मख़्लूक़ात पर जिन्हें हमने पैदा किया है फ़ज़ीलत देकर बरतर बनाया।
(सू०–बनी ईसराईल–17/70)

और अगर तुम पर इस रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के सद्क़े में अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो (तुम भी पहली उम्मतों की तरह तबाह कर दिये जाते और तुम पर भी अ़ज़ाब उतरता) मगर अल्लाह बड़ा शफ़ीक़ बड़ा रहम फ़रमाने वाला है। (सू०–नूर–24/20)

और बेशक आपका रब लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (सू०–नम्ल–27/73)

और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात व दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और दिन में उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश कर सको ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो। (सू०–क़सस–28/73)

और बेशक हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को अपनी बारगाह से बड़ा फ़ज़्ल अ़ता फ़रमाया (और हुक्म फ़रमाया कि) ऐ पहाड़ो तुम उनके साथ मिलकर तस्बीह पढ़ा करो और परिन्दो को भी हमने यही हुक्म दिया था और हमने उनके लिये लोहा नरम कर दिया। (सू०–सबा–34/10)

आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वो अ़ज़ाब उन पर वाक़ेअ़ होकर रहेगा और जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे वो जन्नत के बाग़ों में होंगे उनके लिये उनके रब के पास वो तमाम नेअ़मतें होंगी जिनकी वो ख़्वाहिश करेंगे यही तो बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। (सू०–शूरा–42/22)

अल्लाह ही है जिसने समुन्दर को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें जहाज़ और कश्तियाँ चलें ताकि तुम उसका फ़ज़्ल यानी रिज़्क़ तलाश कर सको और इसलिये तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (सू०–जासिया–45/12)

(ऐ बन्दो) तुम अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ सबक़त करो और जन्नत की तरफ़ भी कि जिसकी

चौड़ाई आसमान और ज़मीन की वुसअ़त जितनी है (और ये) उन लोगों के लिये तैयार की गई है जो अल्लाह व रसूलों पर ईमान लाये हैं ये अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसे वो चाहता है उसे अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह अ़ज़ीम फ़ज़्ल वाला है। (सू०–हदीद–57/21)

और ये कि सारा फ़ज़्ल अल्लाह ही के दस्ते कुदरत में है जिसे वो चाहता है अ़ता फ़रमाता है अल्लाह तआ़ला फ़ज़्ल वाला अ़ज़मत वाला है।
(सू०–हदीद–57/29)

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी इ़बादत के लायक़ नहीं है और तमाम नेअ़मतें उसी की तरफ़ से हैं वही सारी कायनात का मालिक है और वो अ़ज़ीम सल्तनत का बादशाह है और वो बहुत बड़ी शान का मालिक है वही है जिसके सामने ज़लील व आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़हार किया जाता है और वही है जिसके सामने रुकुअ़ व सुजूद किया जाता है और अल्लाह तआ़ला बे नियाज़ है और हम सब उसके मोहताज हैं तो जो कोई भी उसकी नेअ़मतों का शुक्र करता है तो वो मज़ीद नेअ़मतों व अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ होता है और जो कोई उसकी नेअ़मतों की ना शुक्री करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा।

# इन्सानी वुजूद अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट से इस हालत में बाहर निकाला कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे और उसने तुम्हारे लिये कान आँखें और दिल बनाये ताकि तुम शुक्र बजा लाओ। (सू०–नहल–16/78)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और वही है जो तुम्हारे लिये कान व आँखें और दिल व दिमाग़ रफ़्ता रफ़्ता वुजूद में लाया मगर तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो। (मु–मिनून–23/78)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
फिर उस (के आज़ा को) दुरस्त किया और उसमें रुह फूंकी और तुम्हारे लिये (रिहमे मादर में पहले) कान फिर आँखे और दिल व दिमाग़ बनाये मगर तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो। (सू०–सज्दा–32/9)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
आप फ़रमां दीजिये वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिये कान व आँखें और दिल बनाये (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हों (सू०–मुल्क–67/23)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः-**

क्या हमने उसके लिये दो आँखे नहीं बनाई और उसे एक ज़बान और दो होंठ नहीं दिये और हमने उसे ख़ैर व शर के दो नुमांयाँ रास्ते भी दिखा दिये (सू०-बलद-90/8-10)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः-**

और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने के लिये ठिकाना दिया और हमने तुम्हारे लिये उसमें ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये असबाब पैदा किये मगर तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।
(सू०-आअ़राफ़-7/10)

अल्लाह तअ़ाला ने तुमको तुम्हारी माँओ के पेटों से पैदा किया और उस वक़्त तुम्हें किसी भी चीज़ का इ़ल्म नहीं था और इन्सान अपनी पैदाइश के वक़्त अशिया की माअ़रिफ़त से खाली था फिर अल्लाह तअ़ाला ने उसको अ़क़्ल अ़ता फ़रमाई कि जिससे उसने चीज़ों को पहचाना और उसको ख़ैर व शर और नफ़अ़ व नुक़सान की तमीज़ हासिल हुई और उसने अपने कानों से मुख़्तलिफ़ आवाज़ों को सुना और लोगों से सुन सुन कर बहुत सी चीज़ों का इ़ल्म हासिल किया और अल्लाह तअ़ाला ने उसको आँखें अ़ता फ़रमाईं जिससे उसने लोगों और चीज़ों को देखा फिर कानों और आँखों की मदद से उसे किताबों का इ़ल्म हासिल हुआ और उसको दिल व दिमाग़ अ़ता किये ताकि इन्सान हर चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करे और सहीह व ग़लत और

हक़ व बातिल और अच्छे व बुरे में इम्तियाज़ करे और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें रहने का ठिकाना दिया और तुम्हें बोलने की कुव्वत अ़ता फ़रमाई ताकि तुम लोगों से कलाम कर सको और ये सब कुछ इसलिये अ़ता किया ताकि तुम इन तमाम नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो और उस की इ़बादत व इताअ़त करो और उसकी नेअ़मतों के हुकूक़ अदा करो और हर उज़्व का शुक्र ये है कि उसे अल्लाह तआ़ला की इताअ़त में लगाया जाये और ना शुक्री ये है कि अपने उज़्व को रब तआ़ला की ना फ़रमानी में इस्तेअ़माल किया जाये।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने का तरीक़ा ये है कि अपने कानों से उन्हीं चीज़ों और उन्हीं आवाज़ों को सुने जिनके सुनने का अल्लाह तआ़ला ने हमें हुक्म दिया है और जिनके सुनने से अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है और उन बातों को व उन आवाज़ों को न सुनें कि जिनके सुनने से अल्लाह तआ़ला ना खुश व नाराज़ होता है मसलन जहाँ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इहानत की जा रही हो या फिर हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की ताअ़ज़ीम व तकरीम और आपके फ़ज़ाइल व मनाक़िब में तख़फ़ीफ़ की जा रही हो आपके असहाब व अह्ले बैत अत्हार की तौहीन की जा रही हो और इसी तरह लह्व व लाअ़ब की बातें फ़िस्क़ व फुजूर पर मबनी बातें और गन्दी व बुरी व गाली गलोज़ की बातें न सुनें और ऐसी जगह न बैठे जहाँ इस तरह की बातें हों

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
और बेशक (अल्लाह तआ़ला ने) तुम पर किताब में ये (हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जा रहा है और उनका मज़ाक उड़ाया जा रहा है तो तुम उन लोगों के साथ मत बैठो हत्ता कि वो (इन्कार और तमस्खुर को छोड़कर) किसी दूसरी बात में मशगूल हो जायें वरना तुम भी उन्हीं के जैसे हो जाओगे। (सू०-निसा-4/140)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
सो आप उन्हें छोड़ दीजिये कि वो अपनी बेहूदा बातों और खेल तमाशे में पड़े रहें यहां तक कि अपने उस दिन से आ मिलें जिसका उनसे वाअ़दा किया जा रहा है। (सू०-मआ़रिज-70/42)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
फिर आप उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दें कि वो अपनी खुराफ़ात में खेलते रहें।
(सू०-अनआ़म-6/91)

पस इन्सान पर लाज़िम है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे जो कानों की नेअ़मत दी है वो उसकी ना शुक्री न करे और खेल तमाशों व बुरी बातों और यादे इलाही से ग़ाफ़िल कर देने वाली बातों को न सुने और कानों की नेअ़मत का शुक्र अदा करे कि वो दीन की अच्छी बातें कुरान व हदीस को सुने और वो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सीरते तय्यबा पर मुश्तमिल मज़ामीन सुने और हिकमत की बातों को सुनें और अल्लाह तआला व उसके रसूल के अहकाम को रग़बत व कुबूल करने की नियत से सुने और अपने अह्लो अ़याल और मुल्क व मिल्लत की तजावीज़ और मशवरों और हर अच्छी व नेक बात को सुनें

अल्लाह तआ़ाला ने आँखों की जो नेअ़मत हमें अ़ता फ़रमाई है उसका शुक्र अदा करने का भी यही तरीक़ा है कि आँखों से उन्हीं चीज़ों को देखें कि जिनका देखना जाइज़ व मुस्तहसन है मसलन कुरान को देखना ख़ाना-ए-काबा को देखना और माँ बाप के चेहरे को मुहब्बत से देखना व अपनी औलाद को शफ़क़त से देखना और अपनी बीवी को मुहब्बत से देखना और हर उस चीज़ को देखे जिनका देखना जाइज़ है और आंखों की ना शुक्री न करे कि जिन चीजों को देखने से मनाअ़ किया गया हो उनको देखे मसलन ग़ैर मेहरम औ़रत को न देखे और जो चीज़ें अल्लाह तआ़ाला की याद से ग़ाफ़िल करती हैं उनको न देखे

और दिलो दिमाग़ के शुक्र का तरीक़ा ये है कि अपने दिलो दिमाग़ में सिर्फ़ अच्छी व नेक बातों और नेक ख़्यालों को जगह दे दिल में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को सबसे ज़्यादा जगह दे और न किसी के लिये बुरा सोचे न बुरा करे कायनात में अल्लाह तबारक व तआ़ाला की ज़ात व सिफ़ात

पर जो दलाइल हैं उनमें ग़ौरो फ़िक्र करे व अपनी मौत के तसव्वुर को हमेशा ज़हन में रखे व अपनी आख़िरत के मुताअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करे तबलीग़े दीन के लिये तदबीरें सोचे और दिलो दिमाग़ की ना शुक्री ये है कि दिल में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत के बजाये माल व दुनिया की मुहब्बत रखे और शर व गुनाहों के ख़्यालात से दिलो दिमाग़ को आलूदा रखे और शर व गुनाहों के कामों के मनसूबे बनाये और अपनी ज़हनी सलाहियतों को मनफ़ी सरगर्मियों पर सर्फ़ करे झूठे मनगढ़त क़िस्से कहानियाँ और फुहश कलामी करने के लिय सोच विचार करे

इसी तरह हाथों का शुक्र ये है कि हाथों से नेक काम करे और बुरे काम न करे और पैरो का शुक्र है कि पैरों से नेक और जाइज़ मक़ामात पर और जाइज़ कामों के लिये चल कर जाये और हाथों पैरों की नाशुक्री ये है कि हाथों से बुरे काम करे और पैरों से बुरी जगह और बुरे काम करने के लिये जाये

सू०-नहल में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें तुम्हारी माँओ के पेट से इस हालत में बाहर निकाला कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे और उसने तुम्हारे लिये कान व आंखे और दिल बनाये ताकि तुम शुक्र बजा लाओ पस इन्सान जब अपनी माँ के पेट से बाहर आता है तो वो कुछ भी नहीं जानता और न ही वो किसी

चीज़ पर कुदरत रखता है और अल्लाह तआला ने उसके कान व आंखे और दिल बनाये तो अल्लाह तअ़ाला ने इन तीनों जिस्मी आज़ा का ज़िक्र इसलिये फ़रमाया कि तीनों आज़ा हर इ़ल्म की चाबी हैं और सिर्फ़ यही तीन दर'वाज़े है कि जिनके ज़रिये इ़ल्म इन्सान तक पहुँचता है और इस आयत में दिल से मुराद इन्सान का दिमाग़ व ज़हन है क्योंकि उ़र्फ़ में दिमाग़ व ज़हन पर दिल का इत्लाक़ किया जाता है हालांकि तमाम जिस्मानी ज़ाहिरी व बातिनी आज़ा और उसकी कुव्वत सब अल्लाह तअ़ाला की अ़ता कर्दा नेअ़मत हैं और ये सब कुछ अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त में इस्तेअ़माल करके अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करें

पस जो कोई इन आज़ा को अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त के अ़लावा उन्हें कहीं और इस्तेअ़माल करता है या अल्लाह तअ़ाला की ना फ़रमानी में इस्तेअ़माल करता है तो उसके ये सब आज़ा उसके ख़िलाफ़ हुज्जत होंगे पस ये हम पर वाजिब है कि हम हक़ीक़ी तौर पर नेअ़मतें अ़ता करने वाले की माअ़रिफ़त हासिल करें और उस रब के इताअ़त गुज़ार व शुक्र गुज़ार बन्दें बने हमारा पाक पर'वर दिगार अपने बन्दों पर अपनी नवाज़िशों व अपने फ़ज़्लो करम और बन्दों पर अपनी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाता है जो उन्हें शुक्र अदा करने और उनके के हुक़ूक़ अदा करने की दाअ़वत देती हैं ज़रा सोचो अगर तुम समाअ़त, बसारत और अ़क़्ल से महरुम हो जाओ तो तुम्हारा क्या हाल होगा।

अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें कान दिये हैं ताकि तुम मसमूआ़त का इदराक कर सको और इस तरह तुम दीन व दुनिया में फ़ायदा उठा सको और रब तआ़ला ने तुम्हें आँखे दीं ताकि तुम मरइयात का इदराक कर सको यानी चीज़ों को देख सको और उनकी पहचान कर सको और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़क़्ल से नवाज़ा है ताकि तुम उसके ज़रिये अशिया का इदराक कर सको और वो अल्लाह ही है जिसने तुम्हें मुख़्तलिफ़ सिम्तो के किनारों तक फैलाया और तुम्हें ज़मीन के फ़वाइद हासिल करने की कुदरत अ़ता की और ज़मीन को तुम्हारे लिये मआ़श और रिहायश के लिये काफ़ी कर दिया

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने कायनात में जो भी चीज़ पैदा फ़रमाई वो किसी न किसी मक़सद व हिकमत के तकाज़े के ऐ़न मुताबिक़ पैदा फ़रमाई और इन्सान की तख़्लीक़ मिट्टी से की और फिर उसका गोश्त पोस्त और उसके आज़ा फिर उसकी शक्लो सूरत को दुरस्त तौर पर बनाया और उसे बेहतरीन तख़्लीक़ से सरफ़राज़ फ़रमाया उसके हर हर उ़ज़्व को ऐसे मक़ाम पर रखा जिसके सिवा कोई और मक़ाम उसके लायक़ न था और उसे समाअ़त व बसारत की मुकम्मल सलाहियतों से नवाज़ा फिर भी अक्सर लोग अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करते कि जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारी सूरतगरी की फिर भी लोग अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा आज़ा से वो काम नहीं लेते जिन कामों के लिये वो अ़ता किये गये क्या इन्सान

नहीं जानता कि वो अल्लाह ही है जो इन्सान को अ़दम से वुजूद में लाया और उसके नाफ़ेअ़ तरीन आज़ा से उसकी तकमील की व उसे दुरस्त किया और उसे मुख़्तलिफ़ बेशुमार नेअ़मतों से सरफ़राज़ किया जिनसे इन्सान फ़ायदा उठाता है ज़रा सोचो कि अगर तुम्हारे कान न होते तो लोगों से तुम्हारे राब्ते न हो सकते थे और अगर तुम्हारी आँखे न होती तो तुम्हारे लिये पूरी दुनिया अंधेरी होती और तुम्हारी ज़िन्दगी दुश्वार हो जाती और अगर दिल न होते तो तुम्हारे जिस्म में खून की गर्दिश का कोई ज़रिया नहीं होता और अगर तुम्हारा दिमाग़ और उसमें अ़क़्ल न होती तो तुम्हारे लिये जीना मुहाल हो जाता और अगर तुम्हारी ज़बान न होती या ज़बान तो होती मगर उसमें गुफ़्तगू करने की सलाहियत न होती तो इन्सान को अपने मुआ़मलात सर अंजाम देने के लिये में कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता

अगर इन्सान सिर्फ़ अपने वुजूद को ही देखे कि उसका वुजूद अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम नेअ़मत है मगर इन्सान फिर भी नाशुक्रा है अल्लाह तआ़ला ने पैग़ामे हक़ को सुनने के लिये कान दिये मगर तुमने उसको नहीं सुना बल्कि तुमने फ़िज़ूल और बेहूदा और नफ़्स को लज़्ज़त देने वाले बुरे कलिमात सुने अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें हक़ायक़े कायनात में ग़ौर करने और अल्लाह तआ़ला की निशानियों को देखने के लिये आँखे दी हैं मगर ये कि तुमने उन निशानियों से इ़बरत हासिल नहीं की और दिमाग़–

से सही तदब्बुर व तफ़क्कुर नहीं किया यानी तुमने ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने तुम्हें ज़िक्रे इलाही और हक़ गोई और अपने मुअ़ामलात में आसानी के लिये ज़बान अ़ता फ़रमाई मगर तुमने उसका सहीह इस्तेअ़माल नहीं किया बल्कि तुमने उसे फुहश कलामी और बदगोई और चुग़ली व ऐ़ब जोई और फ़िज़ूल व बे फ़ायदा बातों में इस्तेअ़माल किया और तुमने अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त नहीं की बल्कि उसकी ना फ़रमानियों में हद से आगे बढ़ गये और उसकी ना शुक्री की अल्लाह तअ़ाला ने जिन मक़ासिद को पूरा करने के लिये तुम्हें नेअ़मतें दीं तुमने उन मक़ासिद को पूरा नहीं किया

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने इन्सान को ज़बान अ़ता फ़रमाई और उसमें गुफ़्तगू करने की सलाहियत भी रखी इस नेअ़मत की अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इसके ज़रिये इन्सान कलाम करता है और अपने दिल की बात बयान करता है और इसके ज़रिये मुअ़ामलात सर अंजाम देता है और वो खाने वाली चीज़ों के ज़ायक़े माअ़लूम करता है इस नेअ़मत पर अल्लाह तअ़ाला का जितना भी शुक्र अदा किया जाये वो कम है और इन्सान को चाहिये कि अच्छी व नेक बातों के अ़लावा कम कलाम करे और फ़िज़ूल व बे फ़ायदा कलाम न करे और अल्लाह तअ़ाला ने ज़बान को दो होठों के अन्दर रखा कि इन दोनों को खोले बग़ैर कलाम मुम्किन नहीं पस इसमें यही

हिकमत है ताकि बन्दे अपने होंठों को बन्द करके उनसे कलाम न कर सकने पर मदद हासिल कर सकें अल्लाह तअ़ाला ने इन्सान को ख़ैर व शर के रास्ते दिखाये और उसके सामने हिदायत व गुमराही को वाज़ेह किया पस ये बे पांया एहसानात हैं जो बन्दे से तक़ाज़ा करते हैं कि वो अल्लाह तअ़ाला के हुकूक़ को क़ायम करे और उसकी नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करे और उन नेअ़मतों से उसकी नाफ़रमानी में मदद न ले

अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम अगर तेरी ज़बान अल्लाह तअ़ाला के हराम किये हुये कामों और बुरे कामों के मुताअ़ल्लिक़ तुझसे झगड़ा करे तो मैंने दो तबाक़ो से तेरी मदद की है तो तू उनको मुन्तबिक़ करदे यानी अपने मुँह और होंठों को बन्द करदे और अगर तेरी आँखें बुरे और हराम कामों को करने में तुझसे झगड़ा करें तो मैंने दो तबाक़ों से तेरी मदद की है तू उनको मुन्तबिक़ कर दे यानी तू अपनी पलकों से अपनी आंखे बन्द करले।
(कंजुल उम्माल–8/366-ह०-43407)

इन्सान क़तई मजबूर नहीं है क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ने ख़ैर व शर और हिदायत व गुमराही के दोंनों रास्ते दिखाकर अल्लाह तअ़ाला ने उसे पूरा इख़्तियार दिया और उसको अ़क्ल अ़ता फ़रमाई कि ऐ बन्दे देख तेरे लिये कौन सा रास्ता बेहतर है और अब बन्दे के इख़्तियार में है कि वो जिस–

रास्ते को चाहे उसे इख़्तियार करे इसके बाद अगर बन्दा नेकी के रास्ते को छोड़कर बुराई का रास्ता इख़्तियार करता है तो वो खुद अपने हाथों अपनी हलाकत का सबब बनता है

इन्सान अपनी इब्तिदा से लेकर अपने इख़्तिताम तक हर घड़ी हर लम्हा अल्लाह तबारक व तआ़ला का मोहताज रहता है हत्ता कि मरने के बाद भी इन्सान अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व उसकी रहमत का मोहताज रहेगा है और हर इन्सान ये बखूबी जानता है फिर भी वो अल्लाह तआ़ला की याद और उसके ज़िक्र और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल रहता है और उसकी नाफ़रमानी व नाशुक्री करता है अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हारे लिये दुनियावी ज़िन्दगी आसान करने के लिये बेशुमार असबाब तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र कर दिये और तुम्हें राहतें व आसानियाँ व सहूलियतें अ़ता कीं व तुम्हें गिज़ा, पानी, हवा, सूरज की रौशनी और रहने का ठिकाना दिया और तमाम मतलूबा चीज़ें व सामाने ज़िन्दगी ये सब अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन नेअ़मतें हैं लेकिन लोगों में नाशुक्री ग़ालिब है लोगों की कम ताअ़दाद शुक्र अदा करती है और बाअ़ज़ लोग शुक्र अदा करते हैं मगर जैसा कि शुक्र अदा करने का हक़ है उस तरह शुक्र अदा नहीं करते और बाअ़ज़ लोग अक्सर औक़ात ना शुक्री करते हैं और बाअ़ज़ नेअ़मतों के मुक़ाबले में बहुत ही कम शुक्र अदा करते हैं इमाम गज़ाली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दिल का शुक्र ये है

कि नेअ़मत के साथ ख़ैर व नेकी का क़सद किया जाये और ज़बान का शुक्र ये है कि उस नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना की जाये और बाक़ी आज़ा का शुक्र ये है कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त में सर्फ़ किया जाये और नेअ़मतों को माअ़सियत में सर्फ होने से बचाया जाये और आंखों का शुक्र ये है कि मुसलमान का ऐ़ब देखे तो उस पर पर्दा डाल दे और अल्लाह तआ़ला की पसंदीदा चीज़ों को देखे और उसकी ना पसंदीदा चीज़ों को देखने से बाज़ रहे।

अल्लाह तबारक व तआ़ला बड़ा रहीम व करीम है कि कितनी नेअ़मतें हैं जो उसने हमारे ऊपर इनआ़म कीं हैं और उसकी बेशुमार नेअ़मतों के मुक़ाबले में हमारा शुक्र बहुत कम है व उसकी आज़माइशों पर हमारा सब्र बहुत ही कम है और हमारा शुक्र कम होने के बावुजूद वो हमें नेअ़मतें अ़ता करता है और हमें महरुम नहीं करता और आज़माइशों पर सब्र बहुत कम होने के बावुजूद भी वो हमें रुसवा नहीं करता और हमारे सब गुनाहों से ख़बरदार होने के बावुजूद हमारी पर्दापोशी फ़रमाता है और हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता है पस हम पर वाजिब है कि उस पाक पर‘वर दिगाार के बेशुमार एहसानात और उसके फ़ज़्ल व करम को फ़रामोश न करें बल्कि उसकी इ़बादत व इताअ़त करें और उसके फ़रमां बरदार व शुक्र गुज़ार बन्दे बन कर बन्दा होने का हक़ अदा करें।

# इन्सान बड़ा नाशुक्रा है

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और बेशक जब हम इन्सान को अपनी बारगाह से रहमत (का ज़ायक़ा) चखाते हैं तो वो उससे खुश हो जाता है और अगर उन्हें उनके हाथों से आगे भेजे हुये आअ़माले (बद) के बाइस कोई मुसीबत पहुंचती है तो बेशक इन्सान बड़ा ही नाशुक्र गुज़ार (साबित होता) है। (सू०–शूरा–42/48)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और उसने तुम्हें हर वो चीज़ अ़ता फरमां दी जो तुमने उससे मांगी और अगर तुम अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतों को शुमार करना चाहो तो पूरा शुमार न कर सकोगे बेशक इन्सान बड़ा ही ज़ालिम बड़ा ही नाशुक्रा है। (सू०–इब्राहीम–14/34)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी फिर तुम्हें मौत देता है फिर तुम्हें दोबारा ज़िन्दगी देगा बेशक इन्सान बड़ा ना शुक्रा है। (सू०–हज–22/66)

बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है और यक़ीनन वो उस (नाशुक्री) पर खुद गवाह है। (सू०–अ़ादियात–100/6,7)

हलाक हो इन्सान कैसा ना शुक्रा है। (सू०–अ़बस–80/17)

अल्लाह तबारक व तआ़ला जब किसी बन्दे को अपनी रहमत से किसी नेअ़मत का मज़ा देता है मसलन मालो दौलत, इ़ज़्ज़त, अच्छी सेहत, हुस्न व जमाल, आ़फ़ियत, अमन व राहतो सुकून, सलामती या मक़ामो मर्तबा वग़ैरह तो वो उस पर खुशी में इतराने और फ़ख़्र करने लग जाता है और अगर उस पर अल्लाह की नाफ़रमानियों व उसके गुनाहों की वजह जब कोई मुसीबत पहुंचती है तो वो उन मुसीबतों को देखकर वो अल्लाह तआ़ला की उन बेशुमार नेअ़मतों को भूल जाता है जो उसके पास मौजूद होती हैं और वो नाशुक्रा हो जाता है और जब अल्लाह तआ़ला इन्सान को नेअ़मतें व राहतें अ़ता फ़रमाता है तो वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करता बल्कि उन नेअ़मतों को अपनी अ़क़्लो फ़हम का नतीजा समझता है और जब उस पर कोई मुसीबत ख़्वाह बीमारी की शक्ल में हो या तंगदस्ती या दीगर कोई मुसीबत उसे पहुँचती है तो वो तौबा इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रजूअ़ नहीं करता

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपनी मशय्यत और हिकमत के मुताबिक़ नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र अदा वही करता है जिसको ये कामिल यक़ीन हो कि खुद उसका वुजूद और कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का मालिक व ख़ालिक़ अल्लाह तआ़ला है और उसे जो भी नेअ़मतें मिली वो सब अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा हैं यानी जो अपने रब को और उसके-

हुक़ूक़ को पहचानता है और अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त जिसे हासिल हो तो वो अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से वो अल्लाह का शुक्र अदा करता है और जिसकी अल्लाह तआ़ला रहनुमाई फ़रमाये वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा बन जाता है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ बन्दे मैंने तुझे नेअ़मतें अ़ता की फिर भी तू मेरी नाफ़रमानी करता है जबकि मैं तुझे मुआ़फ़ करता हूँ और बख़्श देता हूँ और तुझ पर रहम करता हूँ अल्लाह तआ़ला बन्दों की कोताहियों के मुक़ाबले फ़य्याज़ी से काम लेता है और इन्सान की ज़फ़ा का बदला वफ़ा से देता है ये अल्लाह तबारक व तआ़ला का हम पर अ़ज़ीम करम और रहमत है कि अल्लाह तआ़ला अपनी नाफ़रमनियों के बावुजूद वो हम पर फ़ज़्लो करम फ़रमाता है

इन्सान तबई तौर पर नाशुक्रा है कि वो मसाइबो आलाम का ज़िक्र करता है और उन नेअ़मतों को भूल जाता है जो उसे अल्लाह तआ़ला ने अ़ता कीं हैं और उन नेअ़मतों के हुक़ूक़ पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता जो उसके ज़िम्मे हैं और उन हुक़ूक़ को वो अदा करने में वो बेपर'वाह, सुस्त और मुन्किर है और अक्सरियत इसी तरफ़ है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को जो भी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं उन नेअ़मतों में अल्लाह तआ़ला का सबसे पहला हक़ ये है कि वो अल्लाह तआ़ला का हम्दो सना के साथ उसका शुक्र अदा करें दूसरा मख़लूक़ का हक़ ये है कि उन नेअ़मतों से अपने साथ साथ लोगों-

को भी फायदा पहुंचायें हत्ता कि जानवरों के साथ भी हुस्ने सुलूक से पेश आयें और उनके साथ भी भलाई करें मसलन अल्लाह तआ़ला ने किसी को मालो दौलत से नवाज़ा है तो उसे चाहिये कि वो उस माल में से राहे खुदा में भी ख़र्च करे अपने अह्ल व अ़याल पर, अपने वालिदैन पर व अपने अ़ज़ीज़ अक़ारिब व रिश्तेदार पर ख़र्च करें ग़रीब मिस्कीन और कारे ख़ैर में खर्च करें और भूके को खाना खिलायें हत्ता कि अगर कोई जानवर भूका प्यासा हो तो उसे खाना पानी दें और उस माल की पूरी ज़कात निकालें इसी तरह अल्लाह तआ़ला की हर नेअ़मत के हुकूक़ होते हैं

इसी तरह इन्सानी वुजूद उसके भी हुकूक़ हैं मसलन अपने बदनी आज़ा को अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त में लगायें और अपने आज़ा को अल्लाह की नाफ़रमानियों और शर व गुनाहों के कामों में न लगायें और हत्तल इमकान उन्हें मख़लूक़ की मदद व हाजत र‘वाई व दीनी कामों के लिये इस्तेअ़माल करें और लोगों को इनसे कोई नुकसान न पहुंचायें और न ही किसी को ईज़ा दें अल्लाह तआ़ला ने हमें जो नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं वो इसलिये नहीं दी हैं कि सिर्फ़ हम खुद ही उससे फ़ायदा उठायें बल्कि वक़्त ज़रुरत उन से लोगों को भी फ़ायदा पहुंचाये क्योंकि क़यामत के दिन तुमसे तुम्हारी नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जायेगा और अल्लाह तआ़ला तुमसे उन सब नेअ़मतों के बारे में ज़रुर पूछेगा जिनसे तुम दुनिया

में फ़ायदा उठाते रहे हो अल्लाह तआ़ाला पूछेगा कि क्या तुमने उन नेअ़मतों का शुक्र अदा किया और तुमने उन नेअ़मतों में अल्लाह तआ़ाला और उसकी मख़्लूक़ के हक़ अदा किये

वो शख़्स बहुत बुरा है जो अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतों को उसकी नाफ़रमानियों में सर्फ़ करे और वो शख़्स भी बहुत बुरा है कि जो नेअ़मतें तो देखे मगर नेअ़मतों के देने वाले को न देखे और वो शख़्स भी बहुत बुरा है जिस पर मुसीबत आये तो घबरा जाये और राहत आये तो नाशुक्री करे और वो शख़्स भी बहुत बुरा है जो अल्लाह तआ़ाला की कसीर नेअ़मतों और उसके बे इन्तिहां एहसानात के बावुजूद वो कुफ़्र करे

हक़ के वाज़ेह हो जाने के बाद भी इन्सान बड़ा ना शुक्रा है जबकि वो कमज़ोर तरीन चीज़ है कि उसे हक़ीर चीज़ से पैदा किया गया फिर भी वो उसकी नाफ़रमानी व नाशुक्री करता है अल्लाह तआ़ाला ने इन्सान को उसकी माँ के पेट में कुछ अ़रसा नुत्फ़े की शक्ल में रखा फिर कुछ अ़रसा जमे हुये खून की सूरत में फिर कुछ अ़रसा गोस्त के टुकड़े की शक्ल में रखा हत्ता कि उसे इन्सानी सूरत का जामा पहना दिया फिर उसके लिये माँ के पेट से पैदा होने का रास्ता आसान कर दिया यानी विलादत के वक़्त मौलूद का सर नीचे और उसकी टांग ऊपर होती है और फिर तंग रास्ते से ज़िन्दा बच्चे का निकल आना ये अल्लाह तआ़ाला-

की निहायत अ़जीब कुदरत का ज़हूर है फिर उसे दुनियावी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी होने के बाद मौत दी ताकि वो अबदी ज़िन्दगी व दायमी नेअ़मतों तक पहुँच सके और फिर उसे क़ब्र में रखवाया ताकि वो मौत के बाद दरिन्दों की खुराक न बने फिर अल्लाह तआ़ला जब चाहेगा उसे हिसाब व जज़ा के लिये क़ब्र से बाहर निकालेगा फिर उसके बाद उसके मोमिन होने की सूरत में अपने फ़ज़्लो करम से उसे नेअ़मतों व लज़्ज़तों और आसाइशों से पुर लुत्फ़ दायमी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेगा

मुसलमान की मौत भी अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत है क्योंकि मौत के बाद ही उसकी जज़ा का दर'वाज़ा खुलता है और अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के नेक आअ़माल पर जो नेअ़मतें उसके लिये मुक़द्दर की हैं उनके हुसूल का वक़्त आता है और उसका क़ब्र में दफ़न होना भी रब तआ़ला की नेअ़मत है क्योंकि अगर वो दफ़न न होता तो दरिन्दे व परिन्दें उसको खा जाते तो जब अ़क़्लमंद इन्सान इन चीज़ों में ग़ौर करेगा तो फिर वो अपने परवर दिगार की नाशुक्री व नाफ़रमानी नहीं करेगा

➡हज़रत अबू हाज़िम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का मेरे लिये दुनिया अ़ता करने से बड़ी नेअ़मत दुनिया को रोक लेना ये अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है क्योंकि कई क़ौमें नेअ़मतों पर नाशुक्री की वजह से हलाक हो गईं। (हिल्यातुल औलिया–4/219-ह०-3926)

# अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और वही (रब) है जो अपनी रहमत (की बारिश) से पहले हवाओं को खुश ख़बरी बनाकर भेजता है और हम ही आसमान से पाको साफ़ पानी उतारते हैं ताकि मुर्दा इ़लाक़ो को ज़िन्दा कर दें और हम उसे अपनी मख़लूक़ात में बहुत से चौपायों और इन्सानों को पिलाते हैं और बेशक हम उस बारिश को उनके दरमियान (मुख़्तलिफ़ इ़लाक़ो और वक़्तों) के हिसाब से घुमाते (रहते) हैं ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें फिर भी अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुछ कुबूल न किया। (सू०–फुरक़ान–25/48,50)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और उनके लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है जिसे हमने ज़िन्दा किया और हमने उससे (अनाज के) दाने निकाले फिर वो उसमें से खाते हैं और हमने उसमें खूजरों और अंगूरों के बाग़ात बनाये और उस में कुछ चश्में जारी किये ताकि वो उसके फल खायें और ये सब कुछ उनके अपने हाथों का पैदा किया हुआ नहीं है फिर वो क्यों शुक्र गुज़ारी नहीं करते पाक है वो ज़ात जिसने सब चीज़ों के जोड़ें पैदा किये उनसे भी जिन्हें ज़मीन उगाती है और खुद उनकी जानों से भी और (मज़ीद) उन चीज़ों से भी जिन्हें वो नहीं जानते।
(सू०–यासीन–36/33-36)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र गुज़ार नहीं हैं। (सू०–यूनुस–10/60)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

भला ये बताओ जो पानी तुम पीते हो क्या तुमने बादल से उतारा है या हम उतारने वाले हैं अगर हम चाहें तो उसे खारी बनादें फिर तुम शुक्र अदा क्यों नहीं करते। (सू०–वाक़िआ़–56/68-70)

एक अकेला अल्लाह तआ़ला ही है कि जिसने अपने बन्दों को बे पांयाँ रहमत से ढांप लिया है और अपने रिज़्क़ की उन पर इस तरह ज़्यादती करता है कि अपनी रहमत यानी बारिश के आगे आगे खुश ख़बरी देने वाली हवायें भेजता है और बादलों के ज़रिये वो अपने बन्दों के लिये रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है ताकि बारिश बरसने से पहले बन्दे बारिश की आमद से खुश हो जायें और फिर अल्लाह तआ़ला उन बादलों से पाको साफ़ और बाबरकत पानी उतारता है बारिश अल्लाह तआ़ला की बड़ी अ़ज़ीम नेअ़मत है और इसके बेशुमार फ़वाइद हैं इसके ज़रिये खुश्की की वजह से बेजान खेतियाँ सर सब्ज़ होकर ज़िन्दा व शादाब होती हैं जिससे इन्सानों व जानवरों को रिज़्क़ हासिल होता है बारिश नाज़िल करने का ज़िक्र कुरान मजीद की कई सूरतों में आया है ताकि लोग ग़ौरो फ़िक्र करके नसीहत हासिल करें और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल

और उसके एहसान को पहचानें और फिर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें मगर अक्सर लोग इस एहसान की नाशुक्री करते हैं और अल्लाह तआ़ला की रहमत यानी बारिश को ज़ाहिरी असबाब की तरफ़ मन्सूब करते हैं

अल्लाह तआ़ला मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में बारिश को ज़रुरत के मुताबिक़ नाज़िल फ़रमाता है चूँकि वो तमाम जहानों का रब है और उसे सबको रिज़्क़ पहुँचाना है इसलिये रब तआ़ला सिर्फ़ एक इलाक़े में बारिश नाज़िल नहीं फ़रमाता बल्कि वो वक़्फ़ा वक़्फ़ा पूरी दुनिया के हर इलाक़े में बारिश नाज़िल फ़रमाता है और जिन इलाक़ों की ज़मीन में जिस जिन्स की पैदावार की सलाहियत होती है व उसको जितनी बारिश की ज़रुरत होती है वहाँ पर उतनी बारिश नाज़िल फ़रमाता है

अल्लाह तआ़ला बारिश का पानी बरसा कर मुर्दा, खुश्क ज़मीन को ज़िन्दा करता है फिर उस ज़मीन से अनाज निकालता है और उस अनाज को लोगों के लिये और उन के मवेशियों के लिये रिज़्क़ बनाता है और जिस तरह अल्लाह तआ़ला मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करता उसी तरह वो मुर्दों को भी क़यामत के दिन ज़िन्दा फ़रमायेगा और ये बारिश अल्लाह तबारक व तआ़ला की एक अ़ज़ीम और वाज़ेह निशानी है और तमाम इन्सानों के लिये नसीहत है पस जो लोग इस बात पर ग़ौर करते हैं वो इस नसीहत को कुबूल करते हैं और ये इस

बात पर दलालत करती है कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला कायनात की हर शैः पर क़ादिर है और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालो के रद्द में भी ये वाज़ेह दलील है

इसी तरह अल्लाह तअ़ाला ने ज़मीन में मुख़्तलिफ़ अनवाओ़ अक़साम के फल पैदा फ़रमाये ताकि लोग अनाज की तरह फलों को भी खायें हालांकि फल के बीज लोगों ने बोये मगर बीज से शाख़ उन्होंने नहीं निकाली व उस शाख़ की बाली व तना और दरख़्त उन्होंने नहीं बनाया और बाली से अनाज व दरख़्त से फल पैदा करने में उनका कोई अ़मल व दख़ल नहीं है बल्कि ये सब अल्लाह तअ़ाला ने बनाये क्योंकि अल्लाह तअ़ाला के सिवा इस पर कोई भी इन्सान कुदरत नहीं रखता तो इन दलाइल का मुशाहदा करने के बाद भी अक्सर लोग अल्लाह तअ़ाला की कुदरत और वहदानियत का इक़रार करके उसकी नेअ़मतों का शुक्र अदा क्यों नहीं करते

अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है क्या तुम उस पानी पर ग़ौर नहीं करते जो तुम ज़िन्दा रहने के लिये पीते हो और उससे अपनी प्यास बुझाते हो और दीगर कामों में इस्तेअ़माल करते हो क्या तुमने वो पानी बादल से उतारा है हरगिज़ नहीं बल्कि हम ही अपनी कुदरत से उतारते हैं तो फिर तुम शुक्र अदा क्यों नही करते और अल्लाह तअ़ाला चाहता तो उस पानी को खारा कर देता तो तुम उस पानी

को न पी सकते थे और न ही खेती बाड़ी कर सकते थे ये तुम पर अल्लाह तआ़ला का एहसान है कि उसने तुम्हारी मआ़शी बेहतरी और तुम्हारे फ़ायदे व तुम्हारे पीने के लिये मीठा पानी नाज़िल फ़रमाया तो फिर तुम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत और उसके एहसान का शुक्र अदा क्यों नही करते और अगर अल्लाह तबारक व तआ़ला ज़मीन से पानी हासिल करना तुम्हारे लिये आसान व सह्ल न बनाता तो उसके हुसूल का तुम्हारे पास कोई रास्ता न था अल्लाह तआ़ला ही बारिश नाज़िल फ़रमाता है फिर वो पानी रुये ज़मीन और ज़मीन के नीचे और उस पानी से बहते हुये दरिया और उबलते हुये चश्मे बन जाते हैं

अगर अल्लाह तआ़ला बारिश नाज़िल न फ़रमाता तो ज़मीन और ज़मीन के अन्दर का तमाम पानी सूख जाता और ज़मीन से पानी न निकलता तो हम क्या पीते और बग़ैर पानी के प्यासे मर जाते और बग़ैर बारिश के न तो ज़मीन के ऊपर पानी होता न ज़मीन के नीचे तो ज़रा सोचो कि पानी अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी अ़ज़ीम नेअ़मत है कि जिसका हम जितना भी शुक्र अदा करें वो कम है।

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

बेशक आपका रब लोगों पर फ़ज़्ल (फ़रमाने) वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (सू०-नम्ल-27/73)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब (अ़लैहिमुस्सलाम) के दीन की पैर‘वी कर रखी है हमें कोई हक़ नहीं कि हम किसी भी चीज़ को अल्लाह के साथ शरीक ठहरायें ये तौहीद हम पर और लोगों पर अल्लाह तअ़ाला का एक ख़ास फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (सू०–यूसुफ़–12/38)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
बेशक अल्लाह तअ़ाला लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाता है मगर अक्सर लोग उसका शुक्र अदा नहीं करते। (सू०–बक़राह–2/243)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और ऐसे लोगों का रोज़े क़यामत के बारे में क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधते हैं बेशक अल्लाह तअ़ाला लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र गुज़ार नहीं हैं। (सू०–यूनुस–10/60)

मुसलमानों पर अल्लाह तअ़ाला की बेहतरीन नवाज़िश और उसका फ़ज़्ल व एहसान है कि उन्हें दीन इस्लाम की नेअ़मत अ़ता की पस जो कोई इसे कुबूल कर लेता है और अल्लाह व रसूल की इताअ़त करता है और कसरत से अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करता है तो ये उसकी खुश नसीबी है और वो सबसे बड़ी नेअ़मत और जलील तरीन

फ़ज़ीलत हासिल करने में वो कामयाब हो जाता है क्या मुसलमानों पर अल्लाह तआ़ाला का ये फ़ज़्ल नहीं है कि उसने तुम्हें शिर्क से बचाया फिर भी अक्सर लोग अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करते अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतें हमें किसी चीज़ के बदले नहीं मिलीं हैं बल्कि ये अल्लाह का फ़ज़्ल है हालांकि अल्लाह तआ़ाला अपने दुश्मनों को यानी कुफ़्फ़ारों व मुश्रिकीन को भी नेअ़मतें अ़ता करता है मगर मुसलमानों पर अल्लाह तआ़ाला का ख़ास फ़ज़्लो करम है कि जिनको नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के वसीले से दौलते ईमान नसीब हुई और ये सबसे बड़ी नेअ़मत है जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला के फ़ज़्ल और उसकी तौफ़ीक़ से है पस मुसलमानों पर वाजिब है कि सबसे ज़्यादा इस नेअ़मत पर अल्लाह का शुक्र अदा किया करें।

हर इन्सान अपने ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआ़ाला के बेशुमार एहसानात लिये चल रहा होता है फिर भी अक्सर लोग शुक्र में इज़ाफ़ा करने की बजाय बाअ़ज़ औक़ात वो उन नेअ़मतों से फ़ायदा उठाते हुये मज़ीद गुनाह करने लगते हैं और वो नेअ़मतों में मशगूल होकर नेअ़मतें अ़ता करने वाले को फ़रामोश कर देते हैं पस हमें चाहिये कि अपने माल में नादारों के हक़ को फ़रामोश न करें और बेजा ख़र्च करने से बचें और अल्लाह की नेअ़मतों को उसकी इताअ़त में सर्फ़ करें और अल्लाह की इ़बादत से ग़ाफ़िल न हों और हर वक़्त ज़िक्र व फ़िक्र और उसकी नेअ़मतों का शुक्र अदा करते रहें

# नाशुक्री पर अल्लाह का अ़ज़ाब

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
और अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसी बस्ती की मिसाल बयान फ़रमाई है जो (बड़े) अमन व इत्मीनान से (आबाद) थी उसका रिज़्क़ उसके (मकीनो के पास यानी उस बस्ती में रहने वालों) के पास हर तरफ़ से बड़ी वुसअ़त के साथ आता था फिर उस बस्ती वालों ने अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की ना शुक्री की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें भूक और ख़ौफ़ के अ़ज़ाब का लिबास पहना दिया उन आअ़माल के बाइस जो वो करते थे। (सू०-नह्ल-16/112)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
और हमने कितनी ही (ऐसी) बस्तियों को बर्बाद कर डाला जो अपनी खुशहाल मअ़ईशत पर गुरुर व नाशुक्री कर रही थीं तो ये उनके (तबाह शुदा) मकानात हैं जो उनके बाद कभी आबाद ही नहीं हुये मगर बहुत ही कम और आख़िर कार हम ही वारिस व मालिक हैं। (सू०-क़सस-28/58)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
और याद करो जब तुम्हारे रब ने आगाह फ़रमाया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (नेअ़मतों में) ज़रुर इज़ाफा करूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब यक़ीनन सख़्त है। (सू०-इब्राहीम-14/7)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
बेशक अल्लाह तआ़ला किसी ख़ायन (और) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (सू०-हज-22/38)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) मज़कूरा सू०-नह्ल की आयत के ज़िमन में फ़रमाते हैं कि इस आयत में बस्ती से मुराद मक्का है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अह्ले मक्का को भूक का लिबास पहना दिया था उस भूक की अज़्ज़ियत उनके अजसाम (जिस्मों) को पहुंची थी और उनके अजसाम का इस तरह इहाता कर लिया जिस तरह लिबास अजसाम का इहाता कर लेता है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनके ख़िलाफ़ दुआ़ये ज़रर की थी जिसकी वजह से उन पर कई साल क़ह्त तारी रहा हत्ता कि वो मुर्दार व चमड़ा और उसके बाल भी खा जाते थे और ये उन की बद आअ़मालियों की सज़ा थी

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने लोगों की इस्लाम से सरताबी (सरकशी, नाफ़रमानी) देखी तो बद दुआ़ की ऐ अल्लाह इन्हें सात बरस तक क़ह्त साली में मुब्तिला कर दे जैसा कि हजरत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में क़ह्त पड़ा था चुनांचा क़ह्त ने उन्हें ऐसा दबोचा कि हर चीज़ नेस्त व नाबूद हो गई यहाँ तक कि लोगों ने चमड़े, मुर्दार,

और गले सड़े जानवर खाना शुरु कर दिये और उनमें से अगर कोई आसमान की तरफ़ देखता तो भूक की वजह से धुआँ सा दिखाई देता था फिर अबू सुफ़ियान ने आकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) आप अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त और अक़रबा से हुस्ने सुलूक का हुक्म देते है और आपकी क़ौम मरी जा रही है आप उनके लिये दुआ़ फ़रमायें इस पर अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया ऐ नबी उस दिन का इन्तिज़ार करो जब आसमान से एक धुआँ ज़ाहिर होगा जो लोगों को ढाँप लेगा (यानी हर तरफ़ वो मुहीत हो जायेगा) ये दर्दनाक अ़ज़ाब है (उस वक़्त कहेंगे) ऐ हमारे रब तू हम से (इस) अ़ज़ाब को दूर कर दे बेशक हम ईमान लाते है अब उनका नसीहत मानना कहाँ (मुफ़ीद) हो सकता है हालांकि उनके पास वाज़ेह बयान फ़रमाने वाले रसूल आ चुके थे फिर उन्होंने उससे मुँह फेर लिया और (गुस्ताख़ी करते हुये) कहने लगे वो सिखाया हुआ दीवाना है बेशक हम थोड़ा सा अ़ज़ाब दूर किये देते है (मगर) तुम यक़ीनन (वही कुफ़्र) दुहराने लगोगे जिस दिन हम बड़ी गिरफ़्त करेंगे तो उस दिन हम यक़ीनन इन्तिकाम ले ही लेंगे।
(सू०–दुख़ान–44/10-16)
(बुख़ारी–सहीह–1/610-ह०-1007)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/804-ह०-3254)

ये भूक का लिबास है और ख़ौफ़ का लिबास ये

है कि कुफ़्फ़ारे मक्का को हर वक़्त ये ख़ौफ़ रहता था कि मुसलमान उन पर हमला कर देंगे सूरह-नह्ल की इस आयत में कुफ़्फ़ारे मक्का की मिसाल दी गई कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उनको नेअ़मतें अ़ता की थीं लेकिन उन्होंने उन नेअ़मतों की ना शुक्री व नाफ़रमानी की तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर भूक व ख़ौफ़ का अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिया इसी तरह जिस जगह के लोग भी अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की ना शुक्री व ना फ़रमानी करेंगे तो उन पर भी भूक व ख़ौफ़ का अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिया जायेगा हमें इस बात से इ़बरत हासिल करना चाहिये और अल्लाह तआ़ला और उसके अ़ज़ाब से डरना चाहिये और उसका खौफ़ करना चाहिये

इसी तरह सूरह क़सस में कुफ़्फ़ारे मक्का को ऐसी क़ौमों के बुरे अन्जाम से ख़ौफ़ दिलाया गया जिनका हाल ऐसा था कि वो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें पाते तो वो शुक्र करने की बजाये वो उन नेअ़मतों पर इतराते थे और वो लोग ग़फ़लत में मुब्तिला थे अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल पर ईमान लाने की बजाये अपनी खुशहाली में मशगूल थे तो वो अपनी सरकशी की वजह से हलाक कर दिये गये और उनसे नेअ़मतें छीन ली गईं और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ उनके मकानो के आसार अब भी बाक़ी हैं और अ़रब के लोग अपने सफ़र के दौरान उन मकानों के आसार को देखते हैं कि उन मकानात में हलाक होने वालों के बाद अब वो

मकानात तबाह व वीरान हो गये कि कोई मुसाफ़िर उनमें थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर वो उसी तरह खाली पड़े रहते वहाँ के रहने वाले ऐसे हलाक हुये कि उनके बाद उनका कोई जा नशीन बाक़ी न रहा और उनकी बस्तियाँ उजड़ जाने के बाद कभी भी आबाद ही नहीं हुईं

पस माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त से अमन व खुशहाली नसीब होती है और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी बद अमनी हलाकत व बे सुकूनी और अल्लाह की नाराज़गी और उसके ग़ज़ब का सबब बनती है जिन लोगों ने अल्लाह व रसूल की इताअ़त की और उसकी नेअ़मतों पर उसके शुक्र गुज़ार रहे तो उन्होंने दुनिया में अमन व राहत और सुकून पाया और वो अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे और जिन्होंने नाफ़रमानी व नाशुक्री की तो वो इन्तिहाई ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर दिये गये पस हमें मज़कूरा बातों पर ग़ौर व फ़िक्र करना चाहिये कि अपने मुआ़शरे में पाये जाने वाली बद अमनी और वे सुकूनी की वजह हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताअ़लीमात व अहकामात पर अ़मल न करने का नतीजा तो नहीं है पस मुसलमानों पर लाज़िम है कि अल्लाह व रसूल की इताअ़त करें और अल्लाह तआ़ला के इताअ़त गुज़ार व शुक्र गुज़ार बन्दे बन जायें और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की नाफ़रमानी के

सबब लोगों की गिरफ़्त और उनकी सज़ा से ख़ौफ़ ज़दा रहें और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी के मुअ़ामले में लोगों की बजाय अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी और उसके अ़ज़ाब से डरें और किसी भी हाल में अल्लाह तअ़ाला से बे ख़ौफ़ व उसके अ़ज़ाब से बे पर'वाह न हों

अल्लाह तअ़ाला नें हमें जो भी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई उनमें हमारे लिये बड़ी आज़माइश है कि अगर उन नेअ़मतों के हुकूक अदा करें और अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करें अल्लाह तअ़ाला के इताअ़त गुज़ार बन्दे बन जायें तो निजात और कामयाबी है और अगर हम ना शुक्री व नाफ़रमानी करें तो याद रखो अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है और हमारी नेअ़मतें व ऐश व इशरत वबाले दुनिया व आख़िरत है और दुनिया में अ़ज़ाब की एक सूरत ये है कि वो उन नेअ़मतों को ज़ाइल कर दे जो उसने हमें अता की हैं और आख़िरत में उनका हिसाब लिया जाये और फिर नाशुक्री के सबब अल्लाह तअ़ाला सज़ा दे

अगर तमाम ज़मीन वाले अल्लाह तअ़ाला के ना शुक्रे बन जायें तो अल्लाह तअ़ाला का कोई नुक़सान नहीं और न ही उसकी शानो अ़ज़मत में कोई फ़र्क़ पड़ेगा बल्कि सिर्फ़ बन्दे का अपना ही नुक़सान होगा क्योंकि जिस तरह शुक्र का फ़ायदा बन्दे को ही पहुंचता है मसलन शुक्र अदा करने से नेअ़मतों में मज़ीद इजाफ़ा होता है और साथ साथ

अज्र भी मिलता है इसी तरह नाशुक्री का नुक़सान भी बन्दों को ही पहुंचता है।

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो मैंने अपने ऊपर जुल्म को हराम कर लिया है और मैंने तुम्हारे दरमियान भी जुल्म को हराम कर दिया सो तुम एक दूसरे पर जुल्म न करना ऐ मेरे बन्दों तुम सबके सब गुमराह हो सिवाये इसके कि जिसे मैं हिदायत दे दूँ सो तुम मुझसे हिदायत तलब किया करो मैं तुम्हें हिदायत दूँगा ऐ मेरे बन्दों तुम सबके सब भूके हो सिवाय इसके कि जिसे मैं खिलाऊँ सो मुझसे खाना मांगो मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा और ऐ मेरे बन्दो तुम सबके सब नंगे हो सिवाय इसके कि जिसे मैं लिबास पहनाऊँ लिहाज़ा तुम मुझसे लिबास मांगो मैं तुम्हें लिबास पहनाऊँगा मेरे बन्दो तुम दिन रात गुनाह करते हो और मैं तुम्हारे गुनाहों को मुआ़फ़ करता हूँ लिहाज़ा मुझसे मग़फ़िरत मांगो मैं तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ करूँगा मेरे बन्दो तुम कभी भी मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते क्योंकि तुम इसकी ताक़त नहीं रखते और न ही तुम किसी नफ़आ़ के मालिक हो कि मुझे नफ़आ़ पहुंचा सको और ऐ मेरे बन्दो अगर तुम्हारे पहले वाले व तुम्हारे बाद वाले और तमाम इन्सान और तमाम जिन्न सब मिलकर तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी शख़्स की तरह हो जायें तो उससे मेरी बादशाहत में एक मच्छर के पर के

बराबर इज़ाफ़ा नहीं कर सकते ऐ मेरे बन्दो तुम्हारे अगले व तुम्हारे पिछले तुम सब इन्सान व जिन्न सबके सब ज़्यादा बदकार शख़्स की तरह हो जायें तो इससे मेरी बादशाहत में एक मच्छर के पर के बराबर भी कमी नहीं कर सकते और ऐ मेरे बन्दो तुम्हारे अगले और तुम्हारे पिछले तुम सब इन्सान व जिन्न सबके सब मिलकर एक खुले मैदान में खड़े हो जायें और मुझसे मांगें और मैं हर एक को उसकी मांगी हुई चीज़ अ़ता कर दूँ तो उससे जो मेरे पास है उसमें से उतना भी कम नहीं होगा कि जो उस सुई से कम होगा जो समुन्दर में डाली जाये और निकाल ली जाये क्योंकि मैं जव्वाद हूँ (सख़ी, बख़्शिश करने वाला, अल्लाह तआ़ला का एक सिफ़ाती नाम) और मैं वाजिद हूँ (वुजूद देने वाला) और मैं माजिद हूँ (बुजुर्ग, मुअ़ज़्ज़ज़, क़ाबिले इहतिराम) और मैं जो चाहता हूँ वो करता हूँ और बेशक मेरा हुक्म किसी भी चीज़ के लिये जब मैं चाहता हूँ तो ये है कि मैं कहता हूँ हो जा वो हो जाता है मेरे बन्दो ये तुम्हारे आअ़माल हैं जिनको मैं तुम्हारे लिये जमाअ़ कर रहा हूँ फिर मैं तुमको उनकी पूरी पूरी जज़ा दूँगा पस जो शख़्स ख़ैर को पाये वो अल्लाह की हम्द करे और जिसको ख़ैर के सिवा कोई चीज़ मसलन आफ़त, मुसीबत पहुँचे तो वो अपने नफ़्स के सिवा किसी को मलामात न करे

(मुस्लिम–सहीह–5/53-ह०-6572)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/300-ह०-2495)
(इब्ने माजा–सुनन–3/388-ह०-4257)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/694-ह०-619)

# शुक्र गुज़ारी पसंदीदा अ़मल

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह तुमसे बेनियाज़ है और वो अपने बन्दों के लिये कुफ़्र (व नाशुक्री) को पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो तो उसे तुम्हारे लिये पसंद फ़रमाता है और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ ही लौटना है फिर वो तुम्हें उन सब कामों से ख़बरदार कर देगा जो तुम करते रहे थे और बेशक वो सीनो की (पोशीदा) बातों को भी खूब जानने वाला है। (सू०–ज़ुमर–39/7)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

अल्लाह ही है जिसने समुन्दर को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें जहाज़ और कश्तियाँ चलें ताकि तुम उसका फ़ज़्ल यानी रिज़्क़ तलाश कर सको और इसलिये तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (सू०–जासिया–45/12)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात व दिन को बनाया ताकि तुम रात को आराम करो और (दिन में) उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश कर सको ताकि तुम शुक्र गज़ार बनो।
(सू०–क़सस–28/73)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा है बड़ा नाशुक्रा है। (सू०-जुमर-39/3)

अल्लाह तआ़ला तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेटों में एक मरहले के बाद दूसरे मरहले में तख़्लीक़ करता चला गया और उस वक़्त तुम्हारी हालत ये थी कि किसी मख़्लूक़ का हाथ न तुम्हें छू सकता था और न कोई आँख तुम्हें देख सकती थी उस तंग जगह में तुम्हारी पर‘वरिश की तीन अंधेरों में तुम्हें रखा यानी पेट का अंधेरा रिह्म का अंधेरा और उस झिल्ली का अंधेरा जिसमें बच्चा लिपटा होता है और वो ख़ालिक़ ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को हिकमत और मसलहत के तहत पैदा किया और वो ही रात और दिन दोंनों को एक दूसरे में दाख़िल करता है और वो दिन रात दोंनों को अपने अपने मक़ाम पर रखता है और दिन और रात कभी यकजा नही होंते बल्कि जब उनमें से एक आता है तो दूसरा अ़लैहदा जाता है

वो अल्लाह ही है कि जिस ने सूरज व चांद को इन्तिहाई मुनज़्ज़म तौर पर एक ख़ास रफ़्तार के साथ मुसख़्ख़र कर रखा है वे दोंनों अल्लाह तआ़ला की तस्ख़ीर के मुताबिक़ चलते हैं और वो हर चीज़ पर ग़ालिब व क़ाहिर है और वो हर शैः पर क़ादिर है कि जिसने इस कायनात को वुजूद बख़्शा और उसको मुसख़्ख़र किया जो उसके हुक्म

के तहत चल रही है और जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये मवेशी और मुख़्तलिफ़ अक़साम की नेअ़मतें पैदा कीं हैं अल्लाह तुम्हारा माअ़बूदे हक़ीक़ी है जिसने तुम्हारी पर'वरिश की और तुम्हें बेशुमार नेअ़मतों से नवाज़ा है फिर भी अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी व ना शुक्री करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुमसे बेनियाज़ है जिस तरह तुम्हारी इताअ़त उसे कोई फ़ायदा नही पहुंचा सकती उसी तरह तुम्हारी नाफ़रमानी व सरकशी और ना शुक्री व कुफ़्र उसे कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के लिये नाशुक्री पसंद नहीं करता क्योंकि बन्दों पर अल्लाह तआ़ला के बेशुमार एहसानात हैं जिनका शुमार करना मुहाल है अल्लाह तआ़ला इस बात को पसंद फ़रमाता है कि बन्दा उसके फ़ज़्ल व एहसानात को माने और उसकी इताअ़त करे व उसकी नेअ़मतों पर उसका शुक्र बजा लाये

सारी कायनात में उसी की सल्तनत है और उसी का तसर्रुफ़ है अल्लाह तआ़ला के सामने सब आ़जिज़ व मजबूर हैं अल्लाह तआ़ला ने तुम पर अनवाअ़ व अक़साम की ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें नाज़िल फ़रमाई फिर अगर तुम नाशुक्री करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुमसे वे पर'वाह है जबकि तुम दिन रात अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मतों का मुशाहदा करते हो उन नेअ़मतों का तक़ाज़ा ये है कि तुम अल्लाह तबारक व तआ़ला की तौहीद पर ईमान लाओ और उसकी इ़बादत व इताअ़त करके

उसका शुक्र अदा करो अल्लाह तआ़ला ने बन्दों को जो अहकामे शरया का मुकल्लिफ़ किया है वो इस वजह से नहीं कि वो अपने लिये कोई नफ़आ़ हासिल करना चाहता है बल्कि इसमें बन्दों के लिये नफ़आ़ और सवाब है जो उसे दुनिया व आख़िरत में ज़रुर हासिल होगा अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर उससे भी ज़्यादा रहम फ़रमाता है जितना वो खुद अपने आप पर करता है अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों की भलाई चाहता है इसलिये वो अपने बन्दों को तर्ग़ीब देता है कि मेरे बन्दे ऐसे अ़मल व असवाब इख़्तियार करें जिनकी वजह से अल्लाह की रहमत व उसका फ़ज़्ल उन्हें हासिल हो

वो अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये जहाज़ों और कश्तियों को चलाने के लिये समुन्दर तुम्हारे ताबेअ़ कर दिया और इस ताबेअ़ करने में हिकमत ये है कि उसके हुक्म से समुन्दर में जहाज़ व कश्तियां चलें और तुम दरियाई सफ़र के ज़रिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तिजारत करके और दरियाओं में ग़ोताज़नी करके मोती वग़ैराह निकालकर उसका फ़ज़्ल तलाश कर सको लिहाज़ा तुम रब तआ़ला की नेअ़मतों और उसके फ़ज़्ल व एहसान का शुक्र अदा करो और उसका हुक्म मानो और जब तुम अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें और ज़्यादा नेअ़मतें अ़ता फ़रमायेगा और तुम्हारी शुक्र गुज़ारी पर तुम्हें बेहतरीन अज्र से नवाज़ेगा लिहाज़ा तुम उसकी इ़बादत व इताअ़त करो और जिस काम का उसने तुम्हें हुक्म दिया है

वो करो और जिससे मनाअ़ किया है उससे बाज़ आ जाओ इस कायनात में मौजूद दीनी व दुनियावी नफ़अ़ देने वाली तमाम चीज़ें ये अल्लाह तआ़ला की हम सब पर बेइंतिहाई रहमत और ला महदूद फ़ज़्ल व एहसान है और अल्लाह तआ़ला के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जो कुछ भी लेकर आये हैं वो सब सदाक़त पर मबनी है पस ये वाज़ेह दलाइल हम तक पहुँचने के बाद हम सब पर ये वाजिब है कि हम अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल से इंतिहाई मुहब्बत करें और उनकी इताअ़त करें और अल्लाह तआ़ला के शुक्र गुज़ार बन्दे बनें कि जिसने हम मुसलमानों पर इतने एहसानात किये हैं कि उनका शुमार करना नामुम्किन है

ज़रा सोचो एक माअ़मूली सा लोहे का टुकड़ा पानी में डूब जाता है लेकिन अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़ारों टन वज़नी जहाज़ सतह समुन्दर में सफ़र करते हैं पाक है वो ज़ात जो कायनात की हर शैः पर क़ादिर है वो जो चाहता है वो करता है वो अल्लाह ही है जिसने ज़मीन से ईंधन पैदा किया जो बहरी जहाज़ों व कश्तियों और मुख़्तलिफ़ अनवाअ़ व अक़साम के इंजन में इस्तेअ़माल होता है उस पाक पर‘वर दिगाार ने इन्सानों को ऐसी अ़क़्ल अ़ता फ़रमाई जिसने मुख़्तलिफ़ इंजन बनाये और उन्हें इस्तेअ़माल करने की सलाहियत भी दी और उसने ज़मीन से बेशुमार चीज़ें निकाली और उन चीज़ों से फ़ायदा उठाने की समझ व सलाहियत अ़ता की।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया- कि अल्लाह तआ़ला की शानो अ़ज़मत, जन्नत व दोज़ख़ में एक साअ़त ग़ौरो फ़िक्र करना एक रात के क़याम से अफ़ज़ल है और बेहतरीन लोग वो हैं जो अल्लाह तबारक व तआ़ला की शानो अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं और बदतर हैं वो लोग जो अल्लाह तआ़ला की शान व अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते। (कंजुल उ़म्माल-2/68-ह०-5712)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों में ग़ौरो फ़िक्र करो मगर अल्लाह तआ़ला की ज़ात में ग़ौर न करो क्योंकि तुम उसकी क़दर का अंदाजा नहीं कर सकते। (कंजुल उ़म्माल-2/68-ह०-5706) (तबरानी-मुअ़जम औसत-4/693-ह०-6319)

अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाये ताकि तुम रात को आराम और अपने बदनों को राहत पहुंचा सको और दिन भर की महनत व मशक़्क़त से होने वाली थकन को दूर कर सको और तुम दिन में रोज़ी तलाश करो जो अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है और मआ़शी व कारोबारी मुआ़मलात को अंजाम दो तुम पर ये रहमत फ़रमाने में हिकमत ये है कि तुम अपने ऊपर अल्लाह तआ़ला का ह़क मानो और उसकी-

वहदानियत का इक़रार करो और उसकी इ़बादत करके उसकी नेअ़मतों का शुक्र बजा लाओ और ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बन्दों पर एहसान है तो तुम अल्लाह तबारक व तआ़ला के एहसानात को मानो और उसकी नाशुक्री करके उसके एहसानात को फ़रामोश न करो जब बन्दा अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करता है तो अल्लाह तआ़ला उससे खुश व राज़ी होता और बन्दे के शुक्र करने को पसंद फ़रमाता जब अल्लाह तआ़ला तुम्हें कोई नेअ़मत से नवाज़े तो तुम पर फ़र्ज़ कि तुम ''अल्हुम्दुल्लिाहि रब्बिल आ़लमीन'' कहो ताकि तुम्हें इसके बदले में मज़ीद नेअ़मतों के साथ साथ 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहने का अज्रो सवाब भी पाओ और ये कलिमात अल्लाह तआ़ला के नज़दीक निहायत ही पसंदीदा हैं यहाँ तक कि जन्नत में तमाम जन्नती भी कहेंगे अल्हुम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन तमाम ताअ़रीफें अल्लाह ही के लिये हैं जो सब जहानों का पर'वरदिगार है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

(नेअ़मतों और बहारों को देखकर) उन (जन्नतों) में उनकी दुआ़ (ये) होगी ''ऐ अल्लाह तू पाक है'' और उस (जन्नत) में उनकी आपस में दुआ़ए ख़ैर (का कलमा) सलाम होगा और उनकी दुआ़ इन कलिमात पर ख़त्म होगी (''अल्हुम्दुल्लिाहि रब्बिल आ़लमीन'') तमाम ताअ़रीफें अल्लाह ही के लिये हैं जो सब जहानों का पर'वरदिगार है।

(सू०–यूनुस–10/10)

अहले जन्नत अल्लाह तआ़ला की तस्बीह, तहमीद (हम्द, ताअ़रीफ़) तक़दीस (पाकीज़गी बयान करने) में मशगूल रहेंगे और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से फ़रहत व सुरुर हासिल करेंगे इससे माअ़लूम हुआ हम्दे इलाही जन्नत में भी होगी और जन्नतियों के हर काम की इब्तिदा अल्लाह की तस्बीह से होगी।

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे पर जब कोई नेअ़मत नाज़िल फ़रमाता है और वो बन्दा नेअ़मत के मिलने पर ''अल्हुम्दुलिल्लाह'' कहता है तो ये हम्द अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उसे दी गई नेअ़मत से ज़्यादा अफ़ज़ल होती है (इब्ने माजा–सुनन-3/218-ह०-3805)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला अपनी ताअ़रीफ़ को पसंद फ़रमाता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/77-ह०-4366)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अफ़ज़ल ज़िक्र ''ला इलाहा इल्लाह'' है और अफ़ज़ल दुआ़ ''अल्हम्दु लिल्लाह'' है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/217-ह०-3800)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4371)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स एक मर्तबा "सुबहान अल्लाह" कहे उसके लिये बीस नेकियां लिखी जाती है और बीस गुनाह मिटाये जाते हैं और जो शख़्स एक मर्तबा अल्हुम्दु लिल्लाह कहे उसके लिये तीस नेकियाँ लिखी जाती हैं और तीस गुनाह मिटाये जाते हैं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/83-ह०-4394)

➡हज़रत अबू मालिक अश्अरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया– कि "अल्हुम्दुलिल्लाह" मीज़ान को भर देगा (यानी अल्हुम्दुलिल्लाह कहने का सवाब इस क़दर है कि आअ़माल तौलने का तराजू इसके अज्रो सवाब से भर जायेगा) और 'सुबहान अल्लाह' और 'अल्हुम्दु लिल्लाह' ये दोंनों ज़मीन व आसमान की दरमियानी जगह को भर देंगे यानी अज्रो सवाब में।
(मुस्लिम–सहीह–1/353-ह०-534)
(नसाई–सुनन–2/118-ह०-2441)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/966-ह०-3517)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह शाम सौ बार "अल्हुम्दुलिल्लाह" कहे तो वो उस शख़्स की तरह है कि जिसने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में सौ मुजाहिदों को घोड़ों पर सवार किया यानी उन्हें

सवारी दी या उसने सौ जिहाद किये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/941-ह०-3471)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और अगर आप उनसे दरयाफ़्त करें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वो ज़रुर कह देंगे कि अल्लाह ने आप फ़रमा दीजिये तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं (मगर) उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (सू०–लुक़्मान–31/25)

जिस तरह नेअ़मत के मिलने पर या किसी काम की तकमील पर ''अल्हुम्दुलिल्लाह'' कहना चाहिये उसी तरह जब कोई बेहतर, उ़म्दाह, अच्छी और खूबसूरत पसंदीदा चीज़ देखे तो ''माशा अल्लाह'' कहना चााहिये।

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो तूने क्यों नहीं कहा ''माशा अल्लाह ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह'' (वही होना है जो अल्लाह चाहे किसी को कुछ ताक़त नहीं मगर अल्लाह की मदद से)
(सू०–कह्फ़–18/39)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स कोई पसंदीदा चीज़ देखकर ''माशा अल्लाह ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह'' कहे तो उसे निगाह नुक़सान नहीं

पहुंचायेगी। (कंज़ुल उ़म्माल–3/766-ह०-17670)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/77-ह०-4370)

बन्दे को हर वक़्त ये ज़हन में रखना चाहिये कि मेरे पास जो कुछ भी है वो सब कुछ अल्लाह तआ़ला का चाहा हुआ है और उसी का फ़ज़्ल व उसी की अ़ता उसी का करम उसी की बख़्शिश है मेरी अ़क़्ल, फ़िक्र, मेहनत, हिफ़ाज़त तदबीर और सियासत चालाकी का इसमें कुछ दख़्ले अ़मल नहीं है जो अल्लाह तआ़ला चाहता है वो हो जाता है और जो नहीं चाहता वो नहीं होता जिसको जितना देना चाहता उसको उतना अ़ता फ़रमाता वो जब चाहे दे दे और जब चाहे ले ले उसको कोई रोकने टोकने, अम्र व नही करने वाला नहीं है मख़्लूक़ में से किसी के पास कोई कुव्वत व ताक़त नहीं है सब ताक़ते कुव्वतें अल्लाह ही को है।

➡ हजरत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे का उसके अहल या माल या औलाद में से कोई नेअ़मत उस पर इनआ़म फरमाई तो उसने कहा ''माशाअल्लाह ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह'' तो वो उन नेअ़मतों में मौत के सिवा कोई आफ़त नहीं पायेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/77-ह०-4369)

और जब किसी काम इरादा करें मसलन मैं कल आइन्दा ऐसा करूँगा, फुलां काम करूँगा या

बात, कलाम ऐसा करुँगा तो इंशा अल्लाह कहना चाहिये क्योंकि बन्दा मोमिन मुस्तक़बिल के उमूर के बारे में अल्लाह तआ़ाला की मशय्यत नहीं जानता और अल्लाह तआ़ाला की मशय्यत को मिलाये बग़ैर ये कहना कि मैं फुलां काम करूँगा क़तअ़न सहीह नहीं है क्योंकि वो नहीं जानता कि उसके काम के इरादे में अल्लाह तबारक व तआ़ाला की मर्ज़ी क्या है और कोई भी काम बन्दा अल्लाह के हुक्म और उसकी तौफ़ीक़ के बग़ैर कर ही नहीं सकता क्योंकि मशय्यत तमाम अल्लाह ही के लिये है और 'इंशा अल्लाह' कहने में बन्दे के अम्र की आसानी और तस्हील (सह्ल करना) व उसकी बरकत का हुसूल और बन्दे की अपने रब से मदद की तलब होती है

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः-**

और किसी चीज़ की निस्बत ये हरगिज़ न कहा करें कि मैं उस काम को कल करने वाला हूँ मगर ये कि अगर अल्लाह चाहे (यानी इंशाअल्लाह कहा करें) और अपने रब का ज़िक्र किया करें।
(सू०-कह्फ़-18/39)

कायनात की हर चीज़ अल्लाह तआ़ाला के हुक्म पर बेबस, मजबूर और मक़बूज़ है ख़्वाह बन्दे के पास कितनी भी तदबीरें व असबाब मौजूद हों मगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का इरादा सब पर ग़ालिब है और बन्दा कभी किसी काम का इरादा करता है जिसके करने में शदीद नुक़सान हो सकता है मगर जब बन्दा अपने काम में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की

मशय्यत को उसमें शामिल करता है तो फिर वो काम या तो मुफ़ीद हो जाता है और उसके सारे नुक़सानात कुदरतन ख़त्म हो जाते हैं या वो काम अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होने ही नहीं दिया जाता और बन्दा उसके रहमो करम से बहुत सी मुसीबतों से बच जाता है और मशय्यते इलाही की शमूलियत की वजह से उसके काम में बरकत और मज़बूती हो जाती है और बन्दा जब अपने क़ौल व फ़ेअ़ल में इंशा अल्लाह कह दे तो किसी भी वाअ़दे का बोझ उस पर बाक़ी नहीं रहता जैसा कि मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया था–

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

(इंशा अल्लाह) अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे ज़रुर सब्र करने वाला पायेंगे और मैं आपकी किसी बात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूँगा।
(सू०–कह्फ़–18/69)

जबकि हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) के बाज़ाहिर ग़ैर शरई कामों पर एतराज़ करने से सब्र नहीं कर सके थे लेकिन चूँकि उन्होंने इंशा अल्लाह कहा था इसलिये उनके वाअ़दे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं हुई।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल के बग़ैर शुक्र तक नहीं पहुंचा जा सकता और खुशहाली में शुक्र करने से शादमानी बढ़ती है और तकलीफ़ो मुसीबत में शुक्र करना अज्रो सवाब का बाइस बनता है।

# नेअ़मत पर शुक्र और मुसीबत पर सब्र

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

और जब हम इन्सान पर (कोई) इनअ़ाम फ़रमाते हैं तो वो (शुक्र से) गुरेज़ करता है और वो पहलू बदल लेता है और जब उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वो मायूस हो जाता है। (गोया कि वो न तो शाकिर है और न ही साबिर)
(सू०–बनी इसराईल–17/83)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

और अगर हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत का मज़ा चखाते हैं फिर हम उसे (किसी वजह से) उससे वापस ले लेते हैं तो वो निहायत ही मायूस और ना शुक्र गुज़ार हो जाता है। (सू०–हूद–11/9)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

और तुम्हारे पास जो भी नेअ़मतें हैं वो अल्लाह ही की तरफ़ से हैं फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो तुम उसी से फ़रियाद करते हो और फिर जब वो तुमसे तकलीफ़ को दूर कर देता है तो तुममें से एक गिरोह उस वक़्त अपने रब का शरीक ठहराने लगता है। (सू०–नह्ल–16/53,54)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

और जब समुन्दर की मौजें साये की तरह उनको–

(यानी कुफ़्फ़ार व मुशिरकीन को) ढाँप लेती हैं तो उस वक़्त वो ख़ालिस उस (अल्लाह) की इताअ़त का अ़हद करते हुये अल्लाह को पुकारते हैं और जब अल्लाह तआ़ला उन्हें उससे बचाकर खुश्की की तरफ़ ले जाता है तो उनमें से चन्द लोग ही एअ़तिदाल की राह (यानी हिदायत) पर चलने वाले होते हैं और हमारी आयतों का इन्कार बस वही लोग करते हैं जो पक्के बद अ़हद हैं और बड़े ना शुक्रे हैं। (सू०–लुक़मान–31/32)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

फिर जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअ़मत बख़्श देते हैं तो वो कहने लगता है कि ये नेअ़मत तो मुझे मेरे इल्म व तदबीर की बिना पर मिली है बल्कि ये तो अज़माइश है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (सू०–ज़ुमर–39/49)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जब (ऐसे) इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वो हमें लेटे भी बैठे भी और खड़े भी यानी हर हाल में पुकारता है और फिर जब हम उससे तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वो इस तरह (मुँह मोड़कर) चल देता है जैसे उसने तकलीफ़ के वक़्त हमें पुकारा ही नहीं था ऐसे हद से बढ़े हुये लोगों के लिये उनके (ग़लत) आअ़माल आरास्ता करके दिखाये गये हैं जो वो करते हैं।

(सू०–यूनुस–10/12)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और जब हम लोगों को तकलीफ़ पहुँचने के बाअ़द (अपनी) रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वो फौरन (हमारे एहसान को भूलकर) हमारी निशानियों में उनका मक्रो फ़रेब शुरु हो जाता है फ़रमां दीजिये कि अल्लाह तआ़ला (तुम्हारे) मक्रो फ़रेब की सज़ा जल्द देने वाला है बेशक हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते तुम्हारी सब मक्कारियों को वो लिखते रहते हैं वही (अल्लाह) है जो तुम्हें खुश्क ज़मीन व समुन्दरों में चलने फिरने (की तौफ़ीक़) देता है हत्ता कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और वो कश्तियाँ लोगों को लेकर मुवाफ़िक़ हवा के झोंको से चलती हैं और वो उससे खुश होते हैं और फिर अचानक सख़्त तेज़ हवा आ जाती है

और उन पर हर तरफ़ से मौंजें आ जाती हैं और (उस वक़्त) वो यक़ीन कर लेते हैं कि बेशक उन्हें घेर लिया गया है तो वो अल्लाह तआ़ला को (इस हाल में) पुकारते हैं कि अपने दीन को उसी के लिये ख़ालिस करने वाले हैं (और कहते हैं ऐ-अल्लाह) अगर तूने हमें इस (बला) से निजात दी तो हम ज़रुर तेरे शुक्र गुज़ार बन्दों में हो जायेंगे फिर जब अल्लाह तआ़ला उन्हें उससे निजात देता है तो वो फ़ौरन ज़मीन में (हस्बे साबिक़) नाहक़ सरकशी करने लगते हैं ऐ (अल्लाह से बग़ावत व सरकशी करने वाले) लोगों को बस तुम्हारी सरकशी और बग़ावत (का नुक़सान) तुम्हारी ही जानों पर है तुम दुनिया की ज़िन्दगी का कुछ फ़ायदा उठा लो

बिल आख़िर तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है उस वक़्त हम तुम्हें उन आअ़माल से खूब आगाह कर देंगे जो तुम करते रहे थे (सू०-यूनुस-10/21 ता 23)

अक्सर लोगों का हाल ये है कि अल्लाह तअ़ाला जब उन्हें नेअ़मतें अ़ता करता है या अच्छी सेहत अ़ता करता है और उनके माल, जान और औलाद में वुसअ़त अ़ता करता है तो वो अल्लाह तअ़ाला का ज़िक्र व शुक्र अदा करने के बजाय वो अपनी नेअ़मतों पर तकब्बुर करते हैं और वो उन नेअ़मतों के हुसूल को अपनी अ़क़्ल व तदबीर का सबब व अपना कमाल समझते हैं और जब उन्हें कोई बुराई पहुँचती है या कोई तकलीफ़ व नुक़सान या मआ़शी तंगी व फ़क़्र या कोई हादसा दरपेश आता है तो वो अल्लाह तअ़ाला को पुकारते हैं और रो रो कर गिड़गिड़ाते हैं और गिरया व ज़ारी करते हैं और अल्लाह तअ़ाला से दुअ़ा करते हैं और उन दुअ़ाओं की कुबूलियत का असर ज़ाहिर न होने पर वो मायूस हो जाते हैं

मगर ये मुसलमान का शैवा नहीं है बल्कि हर मुसलमान को चाहिये कि हर नेअ़मत पर अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करे और उसकी नेअ़मत को उसकी नाफ़रमानी में सर्फ़ न करे और हर मुसीबत में सब्र करे और दुअ़ा करे और अगर दुअ़ा की कुबूलियत में ताख़ीर हो तो मायूस न हो बल्कि अल्लाह तअ़ाला के फ़ज़्लो करम व उसकी रहमत का उम्मीदवार रहे क्योंकि दुअ़ा की कुबूलियत की-

ताख़ीर में भी अल्लाह तआ़ला हिकमत व मसलहत और रहमत पोशीदा होती है और कोई बन्दा नहीं जानता कि उसकी भलाई किस चीज़ में है मगर अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है वो जानता है कि बन्दे की भलाई किस चीज़ में है और किस चीज़ में नहीं मसलन बन्दे को जब कोई मुसीबत पहुँचती है तो अल्लाह तआ़ला उस मुसीबत के सबब से उसके गुनाहों में तख़्फ़ीफ़ करता है और अगर वो सब्र करे तो उसके लिये बेहतरीन अज्र है

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को मुसीबतो तकलीफ़ व मआ़शी तंगी देकर उसकी आज़माइश करता है कि बन्दा अपने ईमान में कितना मज़बूत है पस आराम व आसाइश में अल्लाह तआ़ला को भूल जाना है और उसका शुक्र अदा न करना व मुसीबत के वक़्त लम्बी लम्बी दुआ़यें मांगना और कुबूलियत में देर हो तो मायूस हो जाना ये काफ़िर व ग़ाफ़िल शख़्स की अ़लामत है मगर मुसलमान को चाहिये इन ऐ़बो से पाको साफ़ रहे।

**इरशादे बारी तआ़ला है:-**

और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो बेशक अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ वही लोग मायूस होते हैं जो काफ़िर हैं। (सू०-यूसुफ़-12/87)

➡ हज़रत सुहैब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान के हर

मुअ़ामले पर तअ़ाज्जुब होता है कि उसके हर नेक काम में ख़ैर ही ख़ैर है अगर उसे खुशी हासिल हो तो वो उस पर शुक्र करता है और ये उसके लिये ख़ैर है और अगर उस पर कोई मुसीबत आये तो वो उस पर सब्र करता है और ये भी उसके लिये ख़ैर है क्योंकि सब्र पर उसे सवाब हासिल होगा।
(मुस्लिम–सहीह–5/508-ह०-7500)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/99-ह०-4487)
(मिश्कात–3/203-ह०-5297)
(कंजुल उ़म्माल–1/135-ह०-710)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बन्दे की दुअ़ा कुबूल होती है मगर जल्द बाज़ी से काम न ले अ़र्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह जल्द बाज़ी क्या है आपने इरशाद फ़रमाया जल्द बाज़ी ये है कि दुअ़ा मांगने वाला ये कहे कि मैंने दुअ़ा तो मांगी है मगर मुझे उम्मीद नहीं है कि दुअ़ा कुबूल होगी और उसका दिल तंग हो जाये यानी वो मायूस हो जाये कि पता नहीं कि दुअ़ा कूबूल होगी या नहीं और इस तरह वो अपने रब से उम्मीद मुनक़ताअ़ कर लेता है।
(मुस्लिम–सहीह–5/207-ह०-6934)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को जब कोई खुश कुन मुअ़ामला पेश आता तो आप इस तरह–

दुअ़ा करते कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं और जब कोई परेशान कुन मुअ़ामला पेश आता तो आप इस तरह से दुअ़ा करते कि हर हाल में अल्लाह का शुक्र है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/237-ह०-1840)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4375)

जब इन्सान को अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतें अ़ता होती हैं तो वो उन नेअ़मतों पर बहुत खुश होता है और उन पर इतराता है और लोगों के सामने फ़ख़्र व तकब्बुर का इज़हार करता है और अपने रब का ज़िक्र व शुक्र अदा नहीं करता और जब उसे कोई तकलीफ़ या मुसीबत पहुँचती है तो वो अपने रब से नाउम्मीद हो जाता है और वो ये समझता है कि वो जिस हालत में है हमेशा उसी हालत में रहेगा इस वजह से वो सब्र पर साबित क़दम नहीं रह पाता और वो गुज़िश्ता नेअ़मतों की नाशुक्री करता है मगर मोमिन बन्दा जिसे अल्लाह तअ़ाला तौफ़ीक़ दे तो वो नेअ़मतों के मिलने पर अल्लाह तअ़ाला के हुज़ूर अ़ाजिज़ी के साथ उसकी याद व उसका ज़िक्र और उसका शुक्र अदा करता है और जब वो सख़्ती और मुसीबत से दो चार होता है तो अल्लाह तअ़ाला के हुज़ूर अ़ाफ़ियत के आने और मुसीबत के दूर होने की दुअ़ा करता है और उम्मीद रखता है अल्लाह तअ़ाला अ़नक़रीब मसाइबो आलाम से निजात अ़ता फ़रमायेगा और जो नेअ़मतें हमसे छीन ली गईं हैं उन जैसी या उनसे बेहतर नेअ़मतों से नवाज़ेगा क्योंकि अल्लाह

तआ़ला बड़ा मेहरबान निहायत रहम फ़रमाने वाला है और वो बड़े फ़ज़्ल का मालिक है हर शैः पर क़ादिर है वो जो करता है वो अच्छा ही करता है और उसका हर अम्र व फ़ेअ़्ल मोमिनो के लिये भलाई और बेहतरी पर मुश्तमिल होता है

मुसीबत और राहत के वक़्त अक्सर लोगों की हालत ये होती है कि वो मुसीबत के वक़्त अल्लाह तआ़ला को याद करते हैं और राहत व खुशी और नेअ़्मत के मिलने के वक़्त वो अल्लाह तआ़ला को भूल जाते हैं अक्सर लोग इस मर्ज़ में मुब्तिला हैं कि जब उन्हें अल्लाह तआ़ला माल से नवाज़े तो वो उसे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करने की बजाय ये कहते हैं कि मैंने अपनी अ़क़्ल व तदबीर और मेहनत और मशक़्क़त से ये माल कमाया है जबकि ऐसा हरगिज़ नहीं है जबकि उससे ज़्यादा अ़क़्लमंद और मेहनत व मशक़्क़त उठाने वाले के पास इतना माल नहीं होता बल्कि हक़ीक़त ये है कि इ़ल्म, अ़क़्ल व तदबीर और मेहनतो मशक़्क़त ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से ही है और किसको कब क्या और कितना अ़ता करना है ये अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर होता है किसी बन्दे के इख़्तियार में नहीं है कि वो जो चाहे उसे हासिल करले बल्कि सब कुछ अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार व तसर्रुफ़ में है वो जिसे जो चाहे वो नेअ़्मत अ़ता फ़रमाता है और नेअ़्मत व राहत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आज़माइश है जिसके ज़रिये देखा जाता कि बन्दा नेअ़्मत और राहत के

वक़्त उसका शुक्र अदा करता है या नाशुक्री करता है और वो अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करता है या ना फ़रमानी करता है और वो अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मत व राहत और फ़रहत को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करता है या फिर अपनी तरफ़ मन्सूब करते हुये तकब्बुर करता है और वो उसके हुकूक़ अदा करता है या सरकशी करता है

अल्लाह तआ़ला की बारगाह से नेअ़मतें पाने वालों में अक्सर लोग ऐसे होते हैं जो नेअ़मतों के आज़माइश होने को और नेअ़मतों के हुकूक़ अदा करने और ना फ़रमानी के सबब होने वाले बुरे अंजाम को नहीं मानते और ये इसलिये कि अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर ना शुक्री और तकब्बुर करने की वजह से उनके दिल सख़्त हो चुके हैं और ग़फ़लत उन पर ग़ालिब आ चुकी है और वो अपने पास मौजूद माल व असबाब और नेअ़मतों पर मुतमइन हो गये हैं वो अपने मालिक व ख़ालिक़ और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं

हमारे मुआ़शरे में बतौरे ख़ास मालदार और मन्सब दार तबक़े के लोगों की एक ताअ़दाद ऐसी है जिनके पास कसीर नेअ़मतें हैं मगर उनका हाल ये है कि अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर तकब्बुर का नशा उनके सर से नहीं उतारता और उनके दिल ऐसे सख़्त हो गये हैं कि इन्सान को वो इन्सान नहीं समझते उन पर गफ़लत ऐसी–

ग़ालिब आ चुकी है कि वो अपनी मौत व अपनी आख़िरत से इस तरह बेपर'वाह और बे फ़िक्र हैं कि गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इ़बादत की तरफ़ राग़िब होने की बजाये ना फ़रमानी और क़सदन गुनाहों के कामों को अंजाम देते हैं जैसे उनका हिसाब होना ही नहीं और वो अपनी नेअ़मतों पर इस तरह मुतमइन हैं जैसे वो नेअ़मतें उनके पास हमेशा रहने वाली हैं जबकि वो खुद दुनिया में हमेशा रहने वाले नहीं हैं तो फिर जिन नेअ़मतों पर वो इतराते व तकब्बुर करते हैं वो तमाम नेअ़मतें उनके पास हमेशा कैसे रह सकती हैं क्योंकि दुनियावी सब नेअ़मतें अ़ारज़ी और फ़ानी हैं जो अपने वक़्त मुक़र्ररा पर ज़ाइल और फ़ना हो जायेंगीं

हालांकि उन पर वाजिब है कि वो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर शुक्र गुज़ार रहते हुये अल्लाह की इताअ़त व इ़बादत करें और दुनियावी नेअ़मतों पर मुतमइन होने के बजाय आख़िरत में मिलने वाली दायमी नेअ़मतों के हुसूल के लिये कसरत से नेक आअ़माल करें

शायद ही कोई ऐसा हो जो बीमारी, तकलीफ़, मुसीबत, माल की तंगी और दीगर परेशानियों की हालत में अल्लाह तआ़ला से दुआ़यें न मांगता हो और बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी न करता हो और मज़कूरा हालात में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो दूसरों से अपनी दुआ़ के लिये भी कहते हैं

और मुश्किल हालात में लोग अपने गुनाहों और अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानियों से तौबा करते हैं और आइन्दा के लिये तमाम गुनाहों से किनारा कश होने का क़सद करते हैं लेकिन जब ये हालात यानी मसाइब व आलाम ख़त्म हो जाते हैं तो उनमें से अक्सर लोग अल्लाह तआ़ला का शुक्र व उसकी इताअ़त करने की बजाय गुनाह व सरकशी करने लगते हैं लेकिन बाअ़ज़ लोग ऐसे भी होते हैं जो मुसीबत व तकलीफ़ के दूर होने के बाद अल्लाह तआ़ला के इताअ़त गुज़ार व शुक्र गुज़ार बन्दे बन जाते हैं।

शाकिर का मअ़ना है शुक्र करने वाला यानी शुक्र गुज़ार बन्दा और शकूर का माअ़ना है बहुत ज़्यादा शुक्र करने वाला हालांकि शकूर रब तआ़ला का एक सिफ़ाती नाम है मगर यहाँ हम बन्दों के शाकिर व शकूर होने का ज़िक्र कर रहे हैं सूफ़िया किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) फ़रमाते हैं कि शाकिर वो है जो मौजूदा नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र करता है और शकूर वो है जो नेअ़मत के मफ़क़ूद होने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र करे यानी उसके पास नेअ़मतें न होने पर या किसी नेअ़मत के ज़ाइल होने पर शुक्र करे और शाकिर वो है जो नफ़अ़ा पर शुक्र करे और शकूर वो है जो नुक़सान पर शुक्र करे और शाकिर वो है जो अ़ता पर शुक्र करे शकूर वो है कि जो मुसीबत और बला पर शुक्र करे और अ़ाम मुसलमानों में एक ताअ़दाद ऐसी होती है जो तकलीफ़ व राहत–

के जुमला अहवाल में अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुजूर गिरया व ज़ारी और दुआ़ करते हैं और सब्र व शुक्र पर साबित क़दम रहते और एक मक़ाम जो इससे भी आअ़ला है जो मोमिनों में मख़सूस बन्दों को हासिल है कि जब उन पर कोई मुसीबत आ जाती है तो वो उस पर सब्र करने के साथ साथ अल्लाह तआ़ला का शुक्र भी अदा करते हैं और क़ज़ाये इलाही पर राज़ी व मुतमइन रहते हैं और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व उसके ज़िक्र में मशगूल रहते हैं और न वो कभी अल्लाह तआ़ला का शिकवा करते हैं और न ही वो कभी अल्लाह तआ़ला की शिकायत करते हैं

अल्लाह तआ़ला का कोई भी अम्र व फ़ेअ़ल हिकमत से खाली नहीं होता अगर वो किसी को मुसीबत में मुब्तिला करे तो ये उसका अ़द्ल होता है इसमें भी मोमिन के लिये भलाई है और अगर अल्लाह तआ़ला मसाइबो आलाम व किसी आफ़त को दूर कर दे तो ये उसका फ़ज़्ल होता है और बन्दे पर लाज़िम है कि वो मुसीबत पर सब्र करे ताकि उसका अज्र पाये और उसकी नेअ़मत और उसके फ़ज़्लो करम पर उसका शुक्र अदा करे ताकि मज़ीद नेअ़मतों के साथ साथ अज्र भी पाये और नाशुक्री अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व नाराज़गी का बाइस होती है और नाशुक्री से ज़वाले नेअ़मत का ख़तरा ज़्यादा होता है जो शख़्स हुसूले नेअ़मत के वक़्त नेअ़मत में मशगूल रहता है और वो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतावज्जै नहीं होता और न ही

अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है तो ऐसा शख़्स नुजूले मुसीबत के वक़्त मुसीबत में मुब्तिला रहता है और वो मुसीबत नाज़िल करने वाले की तरफ़ मुतावज्जै नहीं होता न ही वो सब्र करता है तो ऐसा शख़्स हमेशा ख़ौफ़ में मुब्तिला रहता है क्योंकि उसे नेअ़मतों के ज़ाइल होने का हर वक़्त ख़तरा रहता है और मुसीबतों के दूर होने का उसे यक़ीन नहीं होता

जो शख़्स हुसूले नेअ़मत के वक़्त नेअ़मत से लज़्ज़त हासिल करने के बजाय नेअ़मत देने वाले की तरफ़ मुतावज्जै रहता है और उसका ज़िक्र व उसका शुक्र अदा करता है और उसको याद करता है और उसकी रिज़ा का तालिब रहता है तो ऐसा शख़्स मुसीबत नाज़िल होने के वक़्त भी मुसीबत से नहीं घबराता बल्कि मुसीबत नाज़िल करने वाले की तरफ़ मुतावज्जै रहता है और उसका ज़िक्र व उसको याद करता है और सब्र पर क़ायम रहता है व उसकी रिज़ा का तालिब रहता है सो नेअ़मत का हुसूल हो या मुसीबत का नुजूल उसका मतलूब सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करना होता है और जिस शख़्स की ये आदत हो कि मुसीबत नाज़िल होने के वक़्त अल्लाह तआ़ला से बा कसरत दुआ़ व फ़रियाद करे और फिर जब मुसीबत दूर हो जाये तो वो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और उसका शुक्र अदा करने से ऐअ़राज़ करे तो ऐसा शख़्स अपने दीन व ईमान और अपनी जान को ज़ाया करने वाला होता है यानी मुसीबत–

में अल्लाह तआ़ाला को याद करने और खुशहाली के वक़्त भूल जाना ये काफ़िरों का तरीक़ा है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि वो एक दिन रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पीछे सवारी पर बैठे हुये थे आपने फ़रमाया ऐ बेटे मैं तुम्हें चन्द कलिमात की ताअ़लीम देता हूँ कि तुम अल्लाह तआ़ाला के अहकामात की हिफ़ाज़त करो अल्लाह तआ़ाला तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमायेगा और तुम अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा की हिफ़ाज़त करो तो तुम अल्लाह तआ़ाला की रहमत को अपने सामने पाओगे और जब तुम किसी भी चीज़ का सुवाल करो तो तुम अल्लाह तआ़ाला से ही सुवाल करो और जब तुम मदद तलब करो तो अल्लाह तआ़ाला से मदद तलब करो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/311-ह०-2516)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/238-ह०-12988-12989)
(मिश्कात–3/205-ह०-5302)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/202-ह०-195)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला से सुवाल नहीं करता तो अल्लाह तआ़ाला उस पर ग़ज़बनाक होता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/889-ह०-3373)

# अल्लाह तआ़ाला ने ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें पूरी कर दीं

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः-**
ऐ लोगो क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ाला ने तुम्हारे लिये उन तमाम चीज़ों को मुसख़्ख़र कर दिया जो आसमानों में है और जो ज़मीन में हैं और उसने अपनी ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें तुम पर पूरी कर दीं। (सू०-लुक़मान-31/20)

अल्लाह तआ़ाला ने बन्दों को जो सबसे अफ़ज़ल नेअ़मत अ़ता फ़रमाई है वो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की माअ़रिफ़त है और ये अल्लाह तआ़ाला का सब से बड़ा इनआ़म है कि बेशक ये कलिमा आख़िरत में बन्दों के लिये ऐसा होगा जैसे दुनिया में पानी है (हिल्यातुल औलिया-7/155-ह०-10666,10667)

अल्लाह तआ़ाला ने तुम्हारे लिये चांद, सूरज, दिन व रात और ज़मीन और इससे निकलने वाले पानी के चश्मे और दरख़्त व खेतियाँ और साज़ो सामान व दीगर अशया व चौपाये और आसमान से पानी का नुजूल और ज़मीन से निकलने वाली बेशुमार चीज़ें जिनका तुम इस्तेअ़माल करते हो ये सब कुछ तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाया और इस तरह तुम ज़मीनी व आसमानी चीज़ों से नफ़आ़ उठाते हो और उसने तुम पर ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें पूरी कर दीं और मुख़्तलिफ़ अफ़राद को मुख़्तलिफ़ नेअ़मतें अ़ता की ज़ाहिरी नेअ़मतों से मुराद मालो-

दौलत और साज़ो सामान जिनका हम इस्तेअ़माल करते हैं और इन्सान के पास मौजूद हर वो चीज़ जो आँखों से दिखाई देती है और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें दीन इस्लाम और कुरान की नेअ़मत से नवाज़ा और अपने महबूब की उम्मत में हमें पैदा फ़रमाया ये अल्लाह तआ़ला का हम पर अ़ज़ीम एहसान और इनआ़म है और बातिनी नेअ़मतों से मुराद वो नेअ़मतें जो आंखों से दिखाई नहीं देती मसलन हमारा दिल व जान और दिल का एतक़ाद और ईमान व इख़लास व हुस्ने खुल्क़ और हमारे गुनाहों पर पर्दे डाल देना और अपने मुक़र्रब बन्दों की क़ल्ब में मुहब्बत और आख़िरत में नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त का नसीब होना और नेक अ़मल की तौफ़ीक़ और शर व बुराई से तहफ़्फ़ुज़ और ईमान की हिफ़ाज़त और गुनाहों की बख़्शिश व दोज़ख़ से निजात और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व उसकी रहमत के सबब जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतें और अल्लाह तआ़ला का दीदार वग़ैराह ये तो चन्द नेअ़मतें हैं वरना अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें तो इतनी हैं कि जिनका शुमार नहीं किया जा सकता

पस हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का मुशाहदा करें और उन पर ग़ौर करते हुये कसरत से अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें और हमारे लिये ये हुक्मे इलाही भी है कि अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ भी आसमानों में है वो सब कुछ अपनी कुदरते कामिला

से अपने सब बन्दों के लिये काम पर लगा दिया है और ये सब कुछ बन्दों के फ़ायदे के लिये है और वही तो है जिसने ज़मीन की सब चीज़ें अपने बन्दों के लिये पैदा फ़रमाईं पस उन नेअ़मतों को उसकी इताअ़त में सर्फ़ करें और उन नेअ़मतों से उसकी नाफ़रमानी में मदद न लें शुक्र मौजूदा नेअ़मतों की हिफ़ाज़त करता और ना शुक्री नेअ़मतों को ज़ाइल कर देती है।

## शुक्र करने की सूरतें

1- ये एतक़ाद रखा जाये कि अल्लाह तआ़ला ने हमें बेशुमार नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं और हम पर बड़ा इनआ़म फ़रमाया और ये सब कुछ सिर्फ़ उसी की तरफ़ से उसका फ़ज़्ल व एहसान है अगर हम पूरी कोशिश कर डालें तब भी हम किसी भी तरह उसका शुक्र अदा नहीं कर सकते और न ही हम उसका हक़ अदा कर सकते हैं।

2- अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना करना व उसकी नेअ़मतों के हुक़ूक़ के बारे में जो कुछ दिल में हो ज़बान से उसका इज़हार करना।

3-अल्लाह तआ़ला की इताअ़त को अ़मली तौर पर क़ायम रखने में ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करना और जिन उमूर का अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है उनको बजा लाना और जिन कामों से मनाअ़ किया उनसे रुक जाना।

4- बन्दा आ़म हालत में इस बात से डरता रहे कि जो नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला ने उसे दी हैं वो कहीं ज़ाइल न हो जायें और उसके दिल में ख़ौफ़े इलाही हो और उसका दिल बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी करने वाला हो इस बात के लिये कि रब तआ़ला उन नेअ़मतों को उसके लिये दायमी रखे और उन्हें ज़ाइल न करे।

5- जो माल अल्लाह तआ़ला ने उसे दिया है वो उसमें से राहे खुदा में ख़र्च करे और वो उस माल के साथ अहले हाजत की हाजत पूरी करे व कारे ख़ैर में ख़र्च करे और उस माल पर तकब्बुर न करे बल्कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल का इज़हार करे और अल्लाह तआ़ला की किसी भी नेअ़मत को हक़ीर न जाने और दूसरों पर बढ़ाई न जताये और न ही एक दूसरे के मुक़ाबले में माल जमाअ़ करने की कसरत करे।

6-अल्लाह तआ़ला की किसी भी नेअ़मत को गुनाह में इस्तेअ़माल न करे और जो शख़्स रब तआ़ला की नेअ़मतों की क़दर न पहचाने तो रब तआ़ला ऐसे तरीक़े से उन नेअ़मतों को छीन लेता है जहाँ से उसका गुमान भी नहीं होता।

7-जब कोई शख़्स तेरे पास मदद के लिये आये या कुछ माँगने के लिये आये तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा कर क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे की मदद के लिये तुझे पसंद किया है।

शुक्र तीन तरीक़ों से होता है ज़बान का शुक्र, बदन का शुक्र, और दिल का शुक्र पस दिल का शुक्र ये है कि तू ये जान ले कि तमाम नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हैं और बदन का शुक्र ये है कि अपने आज़ा में किसी भी उज़्व को अल्लाह की इताअ़त के अ़लावा किसी और जगह इस्तेअ़माल न करे और ज़बान का शुक्र ये है कि रब तआ़ला की दायमी तौर पर हम्द करना हालांकि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों में एक अद्ना सी नेअ़मत का शुक्र अदा करने पर हम आ़जिज़ हैं तो जब हम अल्लाह तआ़ला की अद्ना सी नेअ़मत पर शुक्र अदा करने पर क़ासिर हैं तो फिर रब तआ़ला की बड़ी नेअ़मतों का शुक्र कैसे अदा हो सकता है

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला जब अपने बन्दे को कोई नेअ़मत अ़ता फ़रमाता है और वो उस पर अल्हम्दुलिल्लाह कहता है यानी शुक्र बजा लाता है तो ये शुक्र की नेअ़मत उस पर पहली नेअ़मत से अफ़ज़ल होती है हालांकि नेअ़मत अ़ता करना भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से और उस नेअ़मत पर शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ का मिलना भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ही होता है।

चार ख़सलतें ऐसी हैं कि अगर किसी शख़्स में पायी जायें तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में एक घर बना देगा एक जो अपने मुआ़मले की हिफ़ाज़त के वक़्त 'ला इलाहा इल्ललाह' कहे और

दूसरी ये जब मुसीबत पहुँचे तो इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहे तीसरी ये कि जब कोई नेअ़मत मिले तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे चौथी ये कि जब कोई गुनाह कर बैठे तो अस्तग़फ़िरुल्लाह कहे।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र गुज़ार होता है तो उस पर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें हमेशा क़ायम रहती हैं और बेशक अह्ले दोज़ख़ हैं वो लोग जो नाशुक्रे व मक्कार हैं और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का ज़्यादा शुक्र अदा करता है तो उसकी नेअ़मतें भी ज़्यादा हो जाती हैं जो शख़्स किसी के एहसान व नेकी का शुक्र अदा करता है तो वो उसके हक़ को अदा कर देता है और जिस शख़्स के दिल में रब तआ़ला अपनी नेअ़मतों की शुक्र गुज़ारी डाल देता है तो उसकी नेअ़मतों की तरक़्क़ी कभी ख़त्म नहीं होती बल्कि बढ़ती ही चली जाती और नेअ़मत पर खुश होने की बजाय उसका शुक्र बजा ला और मुसीबतों में घबराने की बजाय उस पर सब्र कर तो जो शख़्स नेअ़मत पर शुक्र गुज़ारी करता है उसे मुसीबत में सब्र करने वाले के बराबर सवाब मिलता है और अगर तुम किसी मुसीबत में सब्र करोगे तो अल्लाह तआ़ला उस मुसीबत के ऐवज़ तुम्हें नेअ़मतें अ़ता फ़रमायेगा और अल्लाह तआ़ला की शुक्र गुज़ारी से अपनी नेअ़मतों को महफ़ूज़ करो क्योंकि नेअ़मतों की हिफ़ाज़त शुक्र के सिवा किसी चीज़ से मुम्किन ही नहीं।

# शुक्र के फ़ज़ाइल
## -: अहादीस की रौशनी में :-

## अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर इंतिहाई फ़ज़्लो करम

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को कोई नेअ़मत अ़ता करता है और वो इस बात का यक़ीन कर लेता है कि ये नेअ़मत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है तो उसके लिये उस नेअ़मत का शुक्र अदा करना लिख देता है और जब अल्लाह तबारक व तआ़ला किसी बन्दे को देखता है कि वो अपने गुनाह पर नादिम है तो अल्लाह तआ़ला उसके मग़फ़िरत तलब करने से पहले ही उसे बख़्श देता है और जब कोई शख़्स नया कपड़ा ख़रीद कर पहनता है और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके कपड़ा पहनने से पहले ही उसकी मग़फ़िरत फ़रमां देता है।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-2/196-ह०-1937)

## शुक्र करने वालों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है

एक शख़्स ने कहा कि ऐ मेरे रब कसीर ताअ़दाद में तेरा शुक्र है जिस तरह से ऐ मेरे रब तू कसीर

ताअ़दाद में हमें नेअ़मतें अ़ता करता है जब हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये सुना तो आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला तुझसे मुहब्बत भी कसीर करता है (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/94-ह०-4460)

## शुक्र करने से अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत पैदा होती है

हज़रत अबू सुलेमान (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को याद करने से अल्लाह की मुहब्बत पैदा होती है। (इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–36/334-4133)

## अल्लाह तआ़ला नेअ़मतों के ज़रिये मुहब्बत का इज़हार फ़रमाता है

➡हज़रत मालिक बिन दीनार (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम मेरी तरफ़ से भलाइयाँ तेरे ऊपर नाज़िल हो रही हैं मगर तेरी तरफ़ से बुराइयाँ मेरे पास पहुँचती हैं और मैं नेअ़मतों के ज़रिये तुझसे मुहब्बत का इज़हार फ़रमाता हूँ और तू मेरी ना–फ़रमानियाँ व गुनाहों का इरतिकाब करके मुझसे बुग्ज़ व अ़दावत का मुज़ाहरा करता है व मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहता है और मुकर्रम फ़रिश्ता मुसलसल मेरी तरफ़ हमेशा तेरा बुरा अ़मल ही लेकर हाज़िर होता है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/120–ह०–4589) (हिल्यातुल औलिया–2/638-ह०-2848)

# अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ होने के बावुजूद हमसे मुहब्बत करता है

➡ हज़रत मुग़ीरा (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने नसीहत फ़रमाई कि हम मुसलसल अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों से फ़ायदा उठा रहे हैं और उसका शुक्र अदा करने में कोताही बरतते हैं और हमारा रब बेनियाज़ होने के बावुजूद हमसे मुहब्बत करता है और हम उसके मोहताज होने के बावुजूद उससे दूर हैं और उसके ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहते हैं। (हिल्यातुल औलिया–6/430-ह०-8543)

# शुक्र करने से नेअ़मतों में इज़ाफ़ा होता है

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि जिसे शुक्र करने की नेअ़मत बख़्शी गई हो फिर उसे इज़ाफ़ी नेअ़मतों से महरुम किया गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (नेअ़मतों में) ज़रुर इज़ाफ़ा करुंगा'' (सू०–इब्रहीम–14/7) और ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि जिसे दुआ़ की तौफ़ीक़ दी गई हो फिर उसे कुबूलियत से रोका गया हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि 'मुझसे दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ को कुबूल करुंगा' (सू०–मोमिन/ग़ाफ़िर–40/60) और ऐसा कभी नहीं हुआ कि जिसको इस्तिग़फ़ार करने

की नेअ़मत अ़ता की गई हो फिर उसको मग़फिरत से महरुम रखा गया हो क्योंकि अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है 'अपने रब से इस्तिग़फार करो बेशक वो बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला है' (सू०-नूह-71/10) और ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि जिसे तौबा की तौफ़ीक़ बख़्शी गई हो वो कुबूलियत से रोका गया हो क्योंकि अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है 'वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है (सू०-शूरा -42/25) (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-4/106-ह०-4527)

➡हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मुझे ये हदीस पहुँची है कि अल्लाह तअ़ाला जब किसी क़ौम को नेअ़मत अ़ता फ़रमाता है तो फिर उनसे शुक्र अदा करने का मुतालबा करता है जब वो शुक्र करें तो अल्लाह तअ़ाला उनकी नेअ़मतों को और ज़्यादा कर देता है और जब वो ना शुक्री करें तो अल्लाह तअ़ाला उनको अ़ज़ाब देने पर क़ादिर है पस फिर वो उनकी नेअ़मतों को उन पर अ़ज़ाब बना देता है। (इब्ने अबी दुनिया-1/484-60)

➡हज़रत बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जब कोई शख़्स अपनी किसी नेअ़मत पर 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहता है तो उसकी बरकत से उसकी लिये मज़ीद नेअ़मत वाजिब हो जाती है और उसके ''अल्हम्दुलिल्लाह'' कहने की वजह से उसे एक और नेअ़मत मिल जायेगी क्योंकि अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतें कभी ख़त्म नहीं होतीं (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-4/85-ह०-4408)

➡ हज़रत फुज़ैल बिन अ़याज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जो शख़्स अल्लाह की नेअ़मत को अपने दिल के साथ पहचान ले और जुबान के साथ उस का शुक्र अदा करे तो उस के शुक्र के अल्फ़ाज़ मुकम्मल होने से पहले उसकी नेअ़मतों में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ‘‘अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा। (सू०–इब्राहीम–14/7)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/106-ह०-4526)

## नेअ़मतें शुक्र के साथ जुड़ी हुई हैं

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि नेअ़मतें शुक्र के साथ जुड़ी हुई हैं और शुक्र इज़ाफ़े के साथ तअ़ाल्लुक़ रखता है और ये दोंनों शुक्र व नेअ़मतों में इज़ाफ़ा ये दोनों एक ही रिश्ते में मिले हुये हैं और अल्लाह की तरफ़ से नेअ़मतों में इज़ाफ़ा उस वक़्त तक नहीं रुकता जब तक कि बन्दे की तरफ़ से शुक्र करने का सिलसिला नहीं रुकता यानी जब तक बन्दा अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता रहेगा तब तक उसकी नेअ़मतों में इज़ाफ़ा होता रहेगा जब बन्दा अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना मुन्क़ताअ़ कर देगा तो उसकी नेअ़मतों में इज़ाफ़ा होना रुक जायेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/108-ह०-4532)

➡ हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि

तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को शुक्र व तर्के गुनाह के साथ महफ़ूज़ करो (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/110-ह०-4545,4546)

## अल्हम्दुलिल्लाह कहने का अज्रो सवाब

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे पर इनआ़म करता है और वो उस नेअ़मत पर 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहता है तो वो उस नेअ़मत का शुक्र अदा कर लेता है और अगर वो दूसरी बार अल्हम्दुलिल्लाह कहता है तो उसके लिये सवाब मुक़र्रर कर देता है और अगर वो तीसरी बार अल्हम्दुलिल्लाह कहता है तो उसके सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/84-ह०-4402)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह शाम सौ बार ''अल्हुम्दुलिल्लाह'' कहे तो वो उस शख़्स की तरह है कि जिसने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में सौ मुजाहिदों को घोड़ों पर सवार किया यानी उन्हें सवारी दी या उसने सौ जिहाद किये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/941-ह०-3471)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/83-ह०-4396)

➡हज़रत अबू मालिक अश्अरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया- कि ''अल्हुम्दुलिल्लाह'' मीज़ान को भर देगा (यानी अल्हुम्दुलिल्लाह कहने का सवाब इस क़दर है कि आअ़्माल तौलने का तराजू इसके अज्रो सवाब से भर जायेगा) और 'सुबहान अल्लाह' और 'अल्हुम्दु लिल्लाह' ये दोंनों ज़मीन व आसमान की दरमियानी जगह को भर देंगे यानी अज्रो सवाब में।
(मुस्लिम-सहीह-1/353-ह०-534)
(नसाई-सुनन-2/118-ह०-2441)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/966-ह०-3517)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स एक मर्तबा ''सुबहान अल्लाह'' कहे उसके लिये बीस नेकियां लिखी जाती है और बीस गुनाह मिटाये जाते हैं और जो शख़्स एक मर्तबा अल्हुम्दु लिल्लाह कहे उसके लिये तीस नेकियां लिखी जाती हैं और तीस गुनाह मिटाये जाते हैं।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-4/83-ह०-4394)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तबारक व तआ़ाला अपने बन्दे पर कोई नेअ़्मत नाज़िल फ़रमाता है और वो बन्दा अल्हम्दु

लिल्लाह कहता है तो ये कालिमा अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उसे नेअ़मत देने से बेहतर होता है। (इब्ने माजा–सुनन–3/218-ह०-3805)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बेशक जो शख़्स सुबह के वक़्त ये कहे कि अल्लाह का शुक्र है अच्छी शाम गुज़रने, अच्छी रात गुज़रने और अच्छी व ख़ैरियत के साथ सुबह करने पर अल्लाह का शुक्र है तो गोया उस शख़्स ने उस रात व उस दिन का शुक्र अदा कर लिया। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/81-ह०-4388)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि 'अल्हम्द' शुक्र की अस्ल है और अल्लाह तआ़ला उस बन्दे का शुक्र कुबूल नहीं करता जो उसकी हम्द नहीं करता। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/83-ह०-4395)

## अफ़ज़ल ज़िक्र व अफ़ज़ल दुआ़

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अफ़ज़ल ज़िक्र ''ला इलाहा इल्लाह'' है और अफ़ज़ल दुआ़ ''अल्हम्दु लिल्लाह'' है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/217-ह०-3800)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4371)

# अल्लाह तआ़ला अपनी ताअ़रीफ़ को पसंद फ़रमाता है

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फरमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला अपनी ताअ़रीफ़ को पसंद फ़रमाता है। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-4/77-ह०-4366)

# परिन्दे भी अल्लाह तआ़ला की हम्द करते हैं

➡ हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के पास से एक छोटा सा तोता गुज़रा तो आप उसकी ख़िल्क़त में ग़ौर व ख़ौज़ करने लगे और उस पर तआ़ज्जुब करते हुये फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इसकी तख़लीक़ क्यों फ़रमाई पस अल्लाह तआ़ला ने उस तोते को कुव्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई फिर उस तोते ने कहा कि ऐ दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) क्या आपको तआ़ज्जुब हो रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने जो अ़ज़ीम फ़ज़्ल आपको अ़ता फ़रमाया है तो उसके मुक़ाबले में मुझे मिलने वाले फ़ज़्ल पर मैं बहुत ज़्यादा अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता हूँ। (तारीख़ मदीना दमिश्क़-17/95)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के दिल में ये ख़्याल आया कि अल्लाह तआ़ला की हम्द उनसे ज़्यादा उ़म्दाह तरीक़े

से कोई नहीं करता पस एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ क़रीब ही एक तालाब था तो उस फ़रिश्ते ने कहा ऐ दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) उस मेढक की आवाज़ को समझो फिर आप (अ़लैहिस्सलाम) ने उसकी आवाज़ बग़ौर सुनी तो वो मेढक अल्लाह तआ़ला की ऐसी हम्द कर रहा था कि जैसी आपने कभी नहीं की थी फिर दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे नबी बनाया मैंने इस तरह कभी अल्लाह तआ़ला की हम्द नहीं की। (तारीख़ मदीना दमिश्क़–17/95)

➡ हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने एक छोटा सा कपड़ा देखा और वो उसकी तख़लीक़ के बारे में सोचने लगे कि रब तआ़ला क्या पर'वाह करेगा कि इस हक़ीर से कपड़े की पैदाइश को भी याद करे लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने उस कपड़े को गोयाई अ़ता की पस उसने कहा कि तेरा नफ़्स हैरान है कि हम इस अंदाज़े व इस हालत पर हैं जो अल्लाह ने हमें अ़ता किया मगर मैं अल्लाह का ज़िक्र तुमसे ज़्यादा करता हूँ उन नेअ़मतों के एतबार से जो उसने तुम्हें अ़ता कीं हैं जैसा कि रब तआ़ला फ़रमाता है सातों आसमान व ज़मीन और सारे मौजूदात जो उनमें हैं अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करते रहते हैं जुमला कायनात में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो उस (अल्लाह) की हम्द के साथ तस्बीह न करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं सकते (सू०– बनी इसराईल–17/44) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/118-ह०-4580)

इमाम अहमद बिन हम्बल (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) बुज़ू का पानी देने के लिये किसी को नहीं बुलाते थे बल्कि खुद ही कुऐं से पानी निकाल लेते थे और जब कुऐं से पानी भरा हुआ डोल निकलता तो कहते ‘अल्हम्दुलिल्लाह’ (अल्लाह तेरा शुक्र है) उनसे कहा गया कि ये कहने से क्या फ़ायदा है तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है ‘फ़रमां दीजिये क्या तुमने ग़ौर किया है कि अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में बहुत नीचे उतर जाये तो फिर कौन तुम्हारे लिये मीठे पानी का चश्मा लायेगा (सू०–मुल्क–67/30)(शुअ़बुल ईमान–04/98-ह०-4480)

## अल्लाह की हम्द की जज़ा अल्लाह तअ़ाला खुद अ़ता फ़रमायेगा

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दे ने कहा कि ऐ मेरे रब बुज़ुर्गी तेरे लिये है जैसे तेरी पाक ज़ात के लायक़ हो व तेरे अ़ज़ीम इक़्तिदार के शायाने शान हो चुनांचा ये अल्फ़ाज़ नेकी लिखने वाले फ़रिश्तों पर इतने भारी गुज़रे कि उनके अज्र को कैसे लिखें लिहाज़ा उन फ़रिश्तों से अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि ऐसा ही लिख दो जैसा मेरे बन्दे ने कहा है और जब वो मुझे मिलेगा तो मैं इसकी जज़ा उसको खुद दूँगा
(इब्ने माजा–सुनन–3/217-ह०-3801)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/81-ह०-4387)

# हर अच्छे काम की इब्तिदा हम्द से करना चाहिये

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर अच्छे व नेक काम की इब्तिदा हम्द से करो जिस अच्छे काम की इब्तिदा हम्द से न हो वो नाक़िस है अधूरा है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4372)

# नेअ़मतों का इज़हार अल्लाह को पसंद है

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला जब किसी बन्दे को नेअ़मत अ़ता फ़रमाता है तो उस पर वो अपनी नेअ़मत का असर देखना पसंद फ़रमाता है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/135-ह०-281)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तअ़ाला को पसंद है कि वो बन्दों पर अपनी नेअ़मतों का असर देखे यानी बन्दा अल्लाह तबारक व तअ़ाला की नेअ़मतों का इज़हार करे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/511-ह०-2819)
(नसाई–सुनन–2/382-ह०–2819)

➡ हज़रत अहवस अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में परागन्दा हाल यानी फटे पुराने कपड़ों में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तेरे पास माल है उन्होंने कहा जी हाँ हर क़िस्म का माल है उन्होंने कहा मुझे ऊँट, गाय, बकरियाँ घोड़े गुलाम सब कुछ अल्लाह तआ़ला ने दिया है फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला ने तुझे माल दिया है तो फिर तुझ पर अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम के आसार नज़र आने चाहिये खाओ पियो और सदक़ा करो और साफ़ सुथरा कपड़ा पहनो बग़ैर किसी बुख़्ल के और बग़ैर किसी इसराफ़ के बेशक अल्लाह तआ़ला पसंद फ़रमाता है कि उसकी नेअ़मतों का असर बन्दे पर ज़ाहिर हो।
(अबू दाऊद–सुनन–4/155-ह०-4063)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1068-ह०-2006)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/116-ह०-4569,4571)

➡हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला दोस्त रखता है जिस बन्दे पर वो अपनी नेअ़मतों का असर देखता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/511-ह०-2819)

# अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं किया जा सकता

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब अगर मेरे हर बाल की दो ज़बानें हों और वो दिन रात तेरी पाकी बयान करें तब भी मैं तेरी किसी भी एक नेअ़मत का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता।
(इब्ने अबी शैबा–10/445-ह०-35421)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/118-ह०-8579)

➡ हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ जबकि तेरी सबसे छोटी नेअ़मत की जज़ा भी मेरी तमाम इ़बादत नहीं हो सकती है तो उन पर वही आई कि अब तुमने तेरा शुक्र अदा कर दिया।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/87-ह०-4415)

➡ हज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुर्ररहमान बयान करते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला की इस क़दर नेअ़मतों के साथ सुबह करते हैं कि उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता हालांकि हमारी ना फ़रमानियाँ बहुत ज़्यादा हैं पस हम नहीं जानते कि किस बात पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करूँ मुसलसल मिलने वाली नेअ़मतों पर या इस बात पर शुक्र अदा करूँ कि उसने हमारी बुराइयाँ छुपा रखीं हैं।
(तारीख़ बग़दाद–10/123-ह०-5252)

# शुक्र की तौफ़ीक़ भी अल्लाह ही की तरफ़ से मिलती है

➡हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि ऐ मेरे रब मैं तेरा शुक्र किस तरह अदा करूँ क्योंकि जो मैं तेरी हम्दो सना करके तेरा शुक्र करता हूँ तो मेरा हम्दो सना करना भी तेरी नेअ़मते तौफ़ीक़ से होता है यानी अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होता है तो फिर मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ पस अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ दाऊद क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पास जो नेअ़मतें हैं वो मैंने ही अ़ता की हैं उन्होंने कहा जी हाँ मैं जानता हूँ ऐ मेरे रब फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि बेशक इसी बात पर बतौर शुक्र मैं तुमसे राज़ी हो गया हूँ।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/86-ह०-4414)

➡हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब क्या तेरी मख़लूक़ में किसी ने ऐसी रात गुज़ारी है कि उसने तेरा ज़िक्र मुझसे ज़्यादा तवील किया हो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हाँ मेढक ने तुझसे तवील ज़िक्र किया है दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज किया ऐ मेरे रब मैं तेरे शुक्र की कैसे इस्तिताअ़त रख सकता हूँ कि तू मुझ पर इनआ़म करता है फिर तू ही उस नेअ़मत पर शुक्र की तौफ़ीक़ भी देता है और फिर तू मेरे ऊपर नेअ़मत पर नेअ़मत का इज़ाफ़ा किये जाता है और इस तरह ला मुतनाही–

नेअ़्मतों का तसलसुल जारी रहता है फिर नेअ़्मत भी तेरी तरफ़ से आती है उस पर शुक्र की ताक़त भी तेरी तरफ़ से आती है और शुक्र की तौफ़ीक़ भी तेरी नेअ़्मत है फिर मैं कैसे तेरा शुक्र करने की ताक़त रख सकता हूँ रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ दाऊद अभी तुमने मुझे पहचाना और तुमने मेरी माअ़रिफ़त हासिल की है जैसा कि मेरी माअ़रिफ़त का हक़ था (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/86-ह०-4413)

## अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र व शुक्र करने की तल्क़ीन

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मन्क़ूल है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनका हाथ पकड़ा और फ़रमाया ऐ मुआ़ज़ अल्लाह की क़सम मुझे तुमसे मुहब्बत है फिर फ़रमाया ऐ मुआ़ज़ मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि किसी भी नमाज़ के बाअ़द ये दुआ़ हरगिज़ तर्क न करना ''ऐ अल्लाह अपना ज़िक्र करने और शुक्र करने और बेहतरीन अंदाज़ में अपनी इ़बादत करने में मेरी मदद फ़रमां
(अबू दाऊद–सुनन–2/199-ह०-1522)
(नसाई–सुनन–3/137-ह०–1304)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे के खानदान या माल या–

औलाद की सूरत में कोई नेअ़मत अ़ता करे और वो बन्दा ये कहे ''माशा अल्लाह ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि'' यानी जो अल्लाह ने चाहा नेकी करने की ताक़त उसी की तौफ़ीक़ से है यानी इस तरह से वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे तो उस नेअ़मत में कोई मुसीबत नहीं आयेगी।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/369-ह०-426)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/106-ह०-4524,4369)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसको कोई नेअ़मत अ़ता करे तो उसे चाहिये कि अल्हम्दु लिल्लाह कहे यानी इस तरह वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और जिसका रिज़्क़ मुअ़ख़्ख़र हो जाये तो उसे चाहिये कि वो इस्तिग़फ़ार पढ़े और जिसको कोई मुश्किल पेश आये उसे चाहिये कि वो 'ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह' पढ़े
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/92-ह०-4446)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स में तीन ख़सलतें हों तो अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमायेगा और वो तीन ख़सलतें ये हैं कि जब उसे कुछ दिया जाये तो वो शुक्र करे और जब वो बदला लेने पर क़ादिर हो तो मुआ़फ़ करदे और जब गुस्सा आये तो वो गुस्से को क़ाबू में करले। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/90-ह०-4432)

➡हज़रत मुतरफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि आ़फ़ियत पर शुक्र करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़्यादा महबूब है और मैंने आ़फ़ियत पर नज़र डाली तो मैंने उसमें दुनिया व आख़िरत की भलाई ही पायी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/90-ह०-4435)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी को मुसीबत में मुब्तिला देखो तो कहो ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है जिसने मुझे इस तकलीफ़ से आ़फ़ियत बख़्शी जिसमें ये मुब्तिला है और अपने बहुत से बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी तो इंशा अल्लाह उसको मुसीबत नहीं पहुँचेगी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/92-ह०-4443,4445)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसे मुसीबत में मुब्तिला किया गया और उसने सब्र किया और जिसे नेअ़मत अ़ता की गई और उसने शुक्र किया और जिस पर जुल्म हुआ और उसने मुआ़फ़ कर दिया और जिसने जुल्म किया और फिर इस्तिग़फ़ार किया फिर आप ख़ामोश हो गये सहाबा ने अ़र्ज़ किया उसके लिये क्या है फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई कि उन्हीं लोगों के लिये अमान यानी बेख़ौफ़ी है और वही हिदायत याफ़्ता हैं। (सू०–अनआ़म–6/82)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–7/163-ह०-6613)

# अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का इहतिराम करना

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मेरे पास तशरीफ़ लाये तो आपने ज़मीन पर एक रोटी का टुकड़ा गिरा हुआ देखा तो आपने उस रोटी के टुकड़े को उठाकर पौंछा और फिर इरशाद फ़रमाया कि ऐ आयशा अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का इहतिराम किया करो इसलिये कि जब ये किसी से रुठ कर चली जाती हैं तो दोबारा लौटकर नहीं आती। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/113-ह०-4557,58)

# लोगों का शुक्र अदा करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को शुक्र अदा नहीं करता वो अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता।
(अबू दाऊद–सुनन–6/650-ह०-4811)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048-ह०-1954)
(मुस्नद अहमद–10/288-ह०-2291)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/455-ह०-3407)

➡ हज़रत अशअ़त (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का सबसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार बन्दा वही होता है जो लोगों का सबसे ज़्यादा शुक्रिया अदा करता है।
(मुस्नद अहमद–10/288-ह०-22190)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने लोगों का शुक्र अदा नहीं किया उसने अल्लाह का शुक्र अदा नहीं किया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048-ह०-1955)

## एहसान करने वाले की ताअ़रीफ़ करना शुक्र है

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे कोई अ़तिया या हदिया दिया जाये पस अगर इस्तिताअ़त में हो तो उसका बदला दे और अगर वो बदला न दे सके तो उसकी ताअ़रीफ़ करे पस जिसने अपने मुहसिन की ताअ़रीफ़ की तो उसने उसका शुक्र अदा कर दिया और जिसने मुहसिन के एहसान को छुपाया तो उसने ना शुक्री की।
(अबू दाऊद–सुनन–04/651-ह०-4813,4814)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसके साथ किसी ने एहसान किया और उसने मुहसिन से कहा जज़ाकल्लाहु ख़ैरा तो उसने मुहसिन की ताअ़रीफ़ की यानी उसका शुक्र अदा कर दिया। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1082-ह०-2035)

## जो क़लील का शुक्र नहीं करता वो कसीर का शुक्र नहीं करता

➡हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया– कि जो क़लील नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं करता वो ज़्यादा नेअ़मतों का भी शुक्र अदा नहीं करता और जो लोगों का शुक्र नहीं करता वो अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का बयान करना शुक्र है और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का बयान न करना ना शुक्री है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/87-ह०-4419)

## बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले व निकलने के बाद शुक्र

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) जब क़ज़ाये हाजत को जाते तो ये पढ़ते अल्लाह के नाम से जो हिफ़ाज़त करने वाला और पाये तकमील को पहुँचाने वाला है फिर जब आप फ़रागत पा जाते तो आप अपने हाथ से अपना पेट मुबारक पकड़ते

और फ़रमाते अल्लाह का शुक्र है ये अल्लाह की नेअ़मतें हैं काश कि बन्दे उसका शुक्र जान लें। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/96-ह०-4468)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) जब बैतुल ख़ला से आते थे तो कहते थे ''तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने मुझे तुआ़म की लज़्ज़त चखाई व उसकी नफ़्अ़ा देने वाली चीज़ मेरे जिस्म में बाक़ी रखी और उसकी घिनोनी चीज़ को मुझसे ख़ारिज कर दिया। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–74/16-ह०-4469)

## हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) हर हाल में अल्लाह तआ़ला शुक्र अदा करते थे

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को जब कोई खुश कुन मुआ़मला पेश आता तो आप इस तरह दुआ़ करते कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं और जब कोई परेशान कुन मुआ़मला पेश आता तो आप इस तरह से दुआ़ करते कि हर हाल में अल्लाह का शुक्र है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/218-ह०-3803)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/237-ह०-1840)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4375)

➡ हज़रत मुगीरा बिन शुअ़बा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम इस क़दर नमाज़ पढ़ते थे कि आपके दोंनों क़दमो पर वरम आ जाता आपसे कहा जाता तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाते क्या मैं अल्लाह तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं।
(बुख़ारी–सहीह–6/69-ह०-6471)
(मुस्लिम–सहीह–5/325-ह०-7124)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/106-ह०-4523)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब पानी नोश फ़रमाते तो आप ये कलिमात कहते कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह तआ़ला ही के लिये हैं कि जिसने अपनी रहमत से इसे मीठा बनाया इसे कढ़वा नहीं बनाया।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/98-ह०-4479)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जिस वक़्त रात को बेदार होते थे तो ये कलिमात कहते थे ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि जिसने हमें दोबारा ज़िन्दगी दी उसके बाद कि उसने हमें मौत दे दी थी यानी नींद भी एक क़िस्म की मौत होती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/80-ह०-4385)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब आइना देखते तो ये कलिमात कहते थे कि अल्लाह का शुक्र है जिसने मेरी बेहतर तख़लीक़ की और फिर इसको तवाज़ुन बख़्शा और मुझे इ़ज़्ज़त अ़ता की और मेरी सूरतो सीरत खूबसूरत बनायी और इससे मुझको ज़ीनत दी और मुझे अपने फ़रमां बरदारों में से बनाया।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/94-ह०-4458,4459)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास जब कोई खुश कुन बात पहुँचती थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह तआ़ला की शुक्र गुज़ारी में सज्दा–ए–शुक्र अदा करते।
(इब्ने माजा–सुनन–1/474-ह०-1394)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब कुछ खाते पीते तो यूँ कहा करते तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने हमें खिलाया पिलाया और आसानी के साथ हलक से नीचे उतारा और उसे ठहराया और उसे बाहर निकाला।
(अबू दाऊद–सुनन–3/971-ह०-3851)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/97-ह०-4476)

# हर हाल में शुक्र करने वाले जन्नत में पहले बुलाये जायेंगे

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे पहले उन लोगों को जन्नत में बुलाया जायेगा जो राहतो आसाइश और तकलीफ़ो मुसीबत यानी दोनों हालतों में अल्लाह तआ़ला की हम्द व शुक्र करते हैं। (शुअ़बुल ईमान–4/98-4483) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/78-ह०-4373)

## –: अ़ज़ीम शुक्र :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का एक शख़्स के पास से गुज़र हुआ वो कह रहा था कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं कि जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत दी और मुझे नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की उम्मत में रखा ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुमने बहुत अ़ज़ीम शुक्र अदा किया है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/101-ह०-4498)

# नेअ़मतों का रुक जाना भी अ़ज़ीम नेअ़मत है

➡ हज़रत अबू हाज़िम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का मेरे लिये दुनिया

अ़ता करने से बड़ी नेअ़मत दुनिया को रोक लेना ये अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है क्योंकि कई क़ौमें नेअ़मतों पर नाशुक्री की वजह से हलाक हो गईं। (हिल्यातुल औलिया–4/219-ह०-3926)

## ना शुक्री से नेअ़मतें अ़ज़ाब बन जाती हैं

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुझे ये बात पहुँची है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम को नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है तो उनसे शुक्र का मुतालबा करता है अगर वो शुक्र अदा करें तो अल्लाह तआ़ला उन्हें मज़ीद नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है और अगर वो ना शुक्री करें तो अल्लाह तबारक व तआ़ला अ़ज़ाब देने पर क़ादिर है पस वो अपनी नेअ़मतों को उन पर अ़ज़ाब से बदल देता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/127-ह०-4536)

## जिस्मी आज़ा अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत हैं

➡ हज़रत सईद बिन आमिर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि हज़रत यूनुस (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और उसने अपनी तंगदस्ती की शिकायत की तो आपने उससे पूछा जिन आँखों से तुम देख रहे हो क्या इसके बदले एक लाख दिरहम तुम्हें क़ुबूल

हैं उसने अ़र्ज़ की नहीं फिर आपने पूछा क्या तुम अपने हाथों के बदले एक लाख दिरहम तुम्हें कुबूल हैं उसने कहा नहीं फिर आपने पूछा क्या तू अपने पाँव के बदले एक लाख दिरहम लोगे उसने कहा नहीं फिर आप ने उसे अल्लाह तआ़ला की दीगर नेअ़मते याद दिलाते हुये इरशाद फ़रमाया कि मैं तो तुम्हारे पास लाखों दिरहम देख रहा हूँ और तुम मुहताजी की शिकायत कर रहे हो।
(हिल्यातुल औलिया--3/25-ह०-3017)

## खाना खाकर शुक्र करने वाला सवाब में रोज़ेदार के बराबर

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खाना खाकर शुक्र अदा करने वाला अज्रो सवाब में साबिर रोज़ेदार की मानिन्द है यानी खाना खाकर शुक्र अदा करने वालों को वो अज्र मिलेगा जो कि सब्र करके रोज़ा रखने वाले को मिलेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/296-ह०-2586)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/95-ह०-4461)

## खाना खाकर शुक्र अदा करने वाले से अल्लाह राज़ी

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से राज़ी होता है जो खाने या पीने के बाद अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है। (मुस्लिम–सहीह–6/298-ह०-6932)

## खाने के बाद बरकत की दुआ़

➡हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग जब किसी के यहाँ खाओ व पियो किसी का खाना व पीना तो फिर तुम उसके लिये बरकत की दुआ़ करो यही तुम्हारी तरफ़ से उसके लिये बदला है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/125-ह०-4605)

## पानी पीने के बाद शुक्र लाज़िम

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि जो बन्दा पानी पिये और वो पानी बग़ैर तकलीफ़ के जिस्म में दाख़िल हो और बग़ैर तकलीफ़ के बाहर निकल जाये तो उस पर शुक्र लाज़िम है।
(तारीख़ मदीना दमिश्क़–7/42-ह०-445)

➡हज़रत इमाम हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने फ़रमाया कि ये नेअ़मत कितनी अ़ज़ीम है कि जो मज़े से पी जाती है उस बस्ती का एक बादशाह था जिसे पेशाब रुकने का मर्ज़ था वो अपने

ख़ादिमों में से एक ख़ादिम को देखता कि वो मटके के पास आता और पानी निकालकर मज़े से पीता तो बादशाह कहता काश मैं पानी पीने में तेरी तरह होता कितनी अ़ज़ीम है ये नेअ़मत कि तू मज़े से पीता है और आसानी से निकाल देता है क्योंकि जब वो बादशाह पानी पीता था तो उसके हर घूँट में उसके लिये मुसीबत थी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/97-ह०-4475)

## नेअ़मत का चर्चा करना भी शुक्र है

➡हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि नेअ़मत का चर्चा करना भी उसका शुक्र है और चर्चा न करना ना शुक्री है और जो क़लील पर शुक्र नहीं करता वो कसीर पर शुक्र नहीं कर सकता और जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वो अल्लाह का शुक्र अदा नहीं कर सकता और (मुसलमानों की) जमाअ़त में बरकत है व उनसे अ़लैहदा रहना बाइसे अ़ज़ाब है।
(मुस्नद अहमद–8/130-ह०-18640)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/87-ह०-4419)

## एक नेअ़मत सारी नेकियाँ ले जायेगी

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन नेअ़मतें नेकियों व बुराइयों के साथ लायी जायेंगीं तो अल्लाह तआ़ला अपनी एक नेअ़मत से फ़रमायेगा कि इसकी नेकियों में से अपना हक़ ले ले तो वो नेअ़मत उसके लिये कोई नेकी बाक़ी नहीं छोड़ेगी। (अल फ़िरदौस–5/462-ह०-8763)

## कोई भी अपने नेक आअ़माल के सबब निजात नहीं पा सकता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई एक भी ऐसा नहीं है जिसको उसका अ़मल निजात दे सके लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप भी अपने अ़मल के साथ निजात नहीं पा सकते आपने फ़रमाया कि मैं भी निजात नहीं पा सकता मगर ये कि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत के साथ मुझे ढाँप लेगा।
(मुस्लिम–सहीह–6/372-ह०-7113)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/130-ह०-4625)

➡हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की रहमत तुम्हारे आअ़माल की निस्बत ज़्यादा यक़ीनी होना चाहिये इसलिये कि कोई निजात पाने वाला हरगिज़ निजात नहीं पायेगा मगर अल्लाह तआ़ला की रहमत के साथ और हरगिज़ कोई हलाक नहीं होगा मगर अपने अ़मल के साथ। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/129-ह०-4621)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोगों को तीन दफ़्तरों पर पेश किया जायेगा एक दफ़्तर (रजिस्टर) जिसमें नेकियाँ होंगी और एक दफ़्तर जिसमें नेअ़मतें होंगी और एक दफ़्तर जिसमें गुनाह होंगे पस नेअ़मतों वाले दफ़्तर को नेकियों वाले दफ़्तर के मुक़ाबिल लाया जायेगा चुनांचा नेकियाँ नेअ़मतों के बदले फ़ारिग़ हो जायेंगी और सिर्फ़ गुनाह व ख़तायें बाक़ी रह जायेंगी जो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर होंगी पस अगर अल्लाह तआ़ला चाहे तो अ़ज़ाब दे और अगर चाहे तो मुआ़फ़ कर दे।
(इब्ने अबी शैबा–10/518-ह०-35688)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बनी आदम के तीन रजिस्टर लाये जायेंगे एक रजिस्टर में उनके नेक अ़मल व एक रजिस्टर में उनके गुनाह व एक रजिस्टर में अल्लाह तआ़ला की नेअ़मते होंगी जो उन्हें दुनिया में अ़ता की गईं थीं फिर नेअ़मतों के रजिस्टर में से सबसे छोटी नेअ़मत से अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि अपने ऐवज़ (बदले) में नेक अ़मल ले लो तो वो नेअ़मत तमाम नेक आअ़माल को घेर लेगी और फिर वो नेअ़मत कहेगी तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम कि मैंने अभी पूरा हक़ नहीं लिया तो फिर उनके गुनाह बाक़ी रह

जायेंगे और उनके तमाम नेक आअ़माल ख़त्म हो जायेंगे फिर जब अल्लाह तअ़ाला किसी बन्दे पर अपने फ़ज़्लो करम का इरादा फ़रमायेगा तो कहेगा ऐ मेरे बन्दे मैंने तेरी नेकियों में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया है और तेरे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये और अपनी नेअ़मतें तुझे अ़ता कर दीं।
(हिल्यातुल औलिया–5/-195)
(तफ़्सीर मज़हरी–9/-486)

## अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतों पर जिन्नों का शुक्र अदा करना

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने सहाबा के सामने सूरह रहमान अव्वल ता आख़िर तक तिलावत फ़रमाई और उस वक़्त मौजूद तमाम सहाबा किराम ख़ामोश रहे तब आपने फ़रमाया कि मैंने जिन्नात से मुलाक़ात की तब ये सूरह मैंने जिन्नात के सामने पढ़ी और जब मैं पहुँचा अल्लाह तअ़ाला के इस फ़रमान पर तो उन्होंने तुमसे अच्छा जवाब दिया जब भी मैं पढ़ता 'फ़बिअय्यि आलाई रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान' पस ऐ गिरोगे इन्स व जिन्न तुम दोंनों अपने रब की कौन कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे तो वो कहते थे कि ऐ मेरे रब हम तेरी किसी भी नेअ़मत को नहीं झुठलायेंगे और तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/825-ह०-3291)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/512-ह०-3766)

# आँखें अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी नेअ़मत हैं

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने आदम अगर तुम चाहो कि जान लो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की क़दर जो तुम्हारे ऊपर हैं तो तुम अपनी दोंनों आँखें बन्द करके देखो तो ज़ाहिर है कि आँखें बन्द करते ही अंधेरा हो जायेगा और कुछ भी नज़र नहीं आयेगा इसी से अंदाज़ा कर लो ये तो सिर्फ़ एक नेअ़मत है जिसको बन्द करते ही सारी कायनात अंधेरे में बदल जायेगी तो क्या हाल होगा कि अगर सारी नेअ़मतें अल्लाह न करे ख़त्म हो जायें तो तुम्हारा क्या हाल होगा। (शुअ़बुल ईमान–04/96-ह०-4465)

# नया कपड़ा पहनने पर शुक्र की फज़ीलत

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने नया लिबास ज़ैबे तन किया तो आपने ये दुआ़ पढ़ी कि ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि जिसने मुझे लिबास पहनाया जिसके ज़रिये से मैं अपना सतर छुपाता हूँ और इससे ज़ीनत हासिल करता हूँ फिर फ़रमाया कि मैंने हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स नया कपड़ा पहने और जब वो गले

तक पहुँचे तो ये दुआ़ पढ़े और वो पुराना कपड़ा सदक़ा कर दे तो वो ज़िन्दगी में भी और ज़िन्दगी के बाद भी अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में और उसके कुर्ब में और उसकी निगेहबानी में रहेगा। (मुस्नद अहमद–1/207-ह०-305)

## अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को याद करना भी शुक्र है

➡ हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को याद करना भी शुक्र है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/88-ह०-4422)

## अपने से कमतर को देखने से अल्लाह की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया में अपने से कमतर वाले लोगों को देखो और अपने से ज़्यादा वाले लोगों को न देखो इस तरह तुम्हें अल्लाह तआ़ला की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4142) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/117-ह०-4573)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसे शख़्स को देखे जो माल व दौलत या शक्ल व सूरत में तुमसे बढ़कर हो तो उस वक़्त तुम ऐसे शख़्स को देखो जो तुमसे कम दर्जे वाला हो तो इस तरह तुम अल्लाह तअ़ाला की किसी भी नेअ़मत को हक़ीर न जानोगे।
(बुख़ारी–सहीह–6/77-ह०-6490)
(मुस्लिम–सहीह–5/479-ह०-7430)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/117-ह०-4574)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि-अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो ख़सलतें ऐसी हैं कि जिस बन्दे में पायी जायें तो अल्लाह तबारक व तअ़ाला उस बन्दे को साबिर व शाकिर लिखता है एक ये कि जिसने दीनी कामों में अपने से बेहतर किसी शख़्स को देखकर उसकी इक़्तिदा की व दूसरी ये कि जिसने दुनिया के मुअ़ामले में अपने से किसी कमतर को देखकर अल्लाह के फ़ज़्ल पर उसका शुक्र अदा किया तो अल्लाह तअ़ाला उसे साबिर व शाकिर लिखता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/309-ह०-2512)

## जिसे चार चीज़ें मिलीं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिली

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम–

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे चार चीज़ें मिल गईं तो उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिल गई 1- शुक्र गुज़ार दिल 2- ज़िक्र करने वाली जुबान 3- मुसीबत पर सब्र करने की तौफ़ीक़ 4- और ऐसी बीवी जो अपनी ज़ात और खाविन्द की इज़्ज़त व माल में ख़्यानत न करे (तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/134-ह०-11275)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/478-ह०-7212)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/89-ह०-4429)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/256-ह०-2301)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–3/65-)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से फ़रमाया ऐ मुआ़ज़ शुक्र करने वाला दिल व ज़िक्र करने वाली जुबान और नेक बीवी जो तेरे दुनयावी व दीनी कामों में तेरी मदद करे ये बेहतर हैं कसीर लोगों से।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/89-ह०-4430)

## जो थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी अल्लाह उसके थोड़े अ़मल से राज़ी

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स थोड़े से रिज़्क़ पर राज़ी हो गया तो अल्लाह तआ़ाला उसके थोड़े अ़मल से राज़ी हो जाता है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/119-ह०-4585)

# दुनिया का क़लील आख़िरत के कसीर से ग़ाफ़िल कर देता है

➡ हज़रत अबू हाज़िम (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि इस दुनिया का क़लील आख़िरत के कसीर से ग़ाफ़िल कर देता है और अगर दुनिया तलब करनी ही है तो इतनी करो जो तुम्हारे लिये काफ़ी हो और तुझे बा क़दरे किफ़ायत हो।
(हिल्यातुल औलिया–4/219-ह०-3923)

# अ़फ़्व व अ़ाफ़ियत की दुअ़ा करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के मिम्बर पर खड़े हुये और फ़रमाया कि बेशक लोगों को दुनिया में अ़फ़्व व अ़ाफ़ियत से बेहतर कोई चीज़ नहीं दी गई पस तुम अल्लाह तअ़ाला से इन दोंनों चीज़ों का सुवाल किया करो।
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–01/107-ह०-69)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्बास ऐ नबी के चचा आप कसरत से अ़ाफ़ियत की दुअ़ा किया करें।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–011/330-ह०-11908)

# अल्लाह तआ़ला की ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मैंने तुम पर ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतें मुकम्मल कर दीं तो मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से इस बारे में अ़र्ज़ किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ज़ाहिरी नेअ़मत ये है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की तख़्लीक़ किस क़दर ख़ूबसूरत की और बातिनी नेअ़मतें ये हैं कि उसने इस्लाम की हिदायत दी और तेरे ऐ़बों को छुपाया अगर रब तआ़ला तुम्हारे ऐ़बों को न छुपाता तो तुम्हारे अह्ल व अ़याल समेत सारे लोग तुमसे मुतानफ़्फ़िर हो जाते यानी नफ़रत करने वाले हो जाते और अगर अल्लाह तआ़ला हमारा पर्दा न रखता तो फिर हम किसी के पास बैठने के क़ाबिल न होते।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/102-ह०-4504)

# एक शुक्र गुज़ार बन्दे का वाक़िआ़

➡हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक शख़्स को दुनियावी दौलत से नवाज़ा गया फिर उससे सब कुछ जाता रहा फिर वो अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना करने लगा हत्ता कि उसके पास बिछाने के लिये सिर्फ़ एक चटाई रह गई फिर भी वो अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना

में मशगूल रहा फिर एक मालदार शख़्स ने उससे कहा कि अब तुम किस बात पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा कर रहे हो उसने जवाब दिया कि मैं उन नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा कर रहा हूँ कि अगर मैं सारी दुनिया की दौलत दे दूँ तब भी वो नेअ़मतें मुझे न मिलें उसने पूछा कि वो कौन सी नेअ़मतें हैं उसने जवाब दिया कि क्या तुम अपनी आँखें, ज़बान, हाथों और पाँव को नहीं देखते ये अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी नेअ़मतें हैं। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–04/95-ह०-4462)

## पचास साल की इ़बादत एक छोटी सी नेअ़मत के बराबर

➡ हज़रत वहब (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने बयान फ़रमाया कि एक इ़बादत गुज़ार ने पचास साल अल्लाह की इ़बादत की तो अल्लाह तआ़ला ने उसे इल्हाम फ़रमाया कि मैंने तुझे बख़्श दिया आ़बिद ने अ़र्ज़ की ऐ मरे रब मैंने तो कभी गुनाह ही नहीं किया तो फिर तूने क्या बख़्श दिया पस अल्लाह तआ़ला ने उसकी गर्दन की एक रग को हुक्म दिया तो वो फड़कने लगी जिसकी वजह से वो आ़बिद सो न सका और न इ़बादत कर सका फिर जब उसको सुकून मिला तो फिर वो सो गया फिर उसके पास एक फ़रिश्ता आया और फ़रिश्ते ने कहा तेरा रब फ़रमाता है कि तेरी पचास साल की इ़बादत इस रग के सुकून के बराबर है।
(हिल्यातुल औलिया–03/396-ह०-4787)

# पाँच सौ साल इ़बादत करने वाले का वाक़्आ़

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला के बन्दों में से एक बन्दा था कि जिसने पांच सौ साल तक एक पहाड़ी की चोटी पर इ़बादत की थी उस आ़बिद के लिये अल्लाह तआ़ला ने उस पहाड़ी में से एक मीठा चश्मा जारी कर दिया था और एक अनार का दरख़्त जिससे वो अनार खाता था और फिर वो नमाज़ में मशगूल हो जाता था

उसने दुआ़ की कि ऐ रब मुझे सज्दे की हालत में मौत देना उसकी दुआ़ कुबूल हो गयी और पांच सौ साल इ़बादत करने के बाद हालते सज्दे में उसे मौत आयी फिर जब वो क़यामत के दिन उठाया जायेगा और अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा किया जायेगा तो उसके लिये रब फ़रमायेगा कि इस बन्दे को मेरी रहमत के बदले में जन्नत में दाख़िल करो तो वो कहेगाा कि मुझे मेरे नेक आअ़्माल के बदले में जन्नत में दाख़िल करो फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इसके आअ़्माल का मुक़ाबला करो पस पहले आँख वाली नेअ़्मत को लिया जायेगा वो पांच सौ साल की इ़बादत को बराबर कर देगी और बाक़ी सारे जिस्म की नेअ़्मतें उस पर ज़ायद रहेंगी जिनका मुक़ाबला करने के लिये उसके पास

कोई भी नेक अ़मल न होगा फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इस बन्दे को दोज़ख़ में डाल दो कि फिर वो दोज़ख़ की तरफ़ घसीटा जायेगा फिर वो बन्दा पुकारेगा ऐ मेरे रब अपनी रहमत के साथ मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इसे वापस लाओ फिर वो अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा किया जायेगा फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ मेरे बन्दे तुझे किसने पैदा किया जबकि तू कोई शैः नहीं था वो कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे पैदा किया था अपनी रहमत के साथ फिर अल्लाह तआ़ला पूछेगा कि पांच सौ साल की इ़बादत की कुव्वत तुझे किसने दी वो कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे इ़बादत की कुव्वत अ़ता की थी फिर अल्लाह तआ़ला पूछेगा पहाड़ी पर पानी का मीठा चश्मा तेरे लिये किसने जारी किया था वो कहेगा कि ऐ मेरे रब तूने ही पानी का मीठा चश्मा मेरे लिये जारी किया था फिर अल्लाह तआ़ला पूछेगा कि तेरे लिये अनार का दरख़्त किसने लगाया था तो वो कहेगा ऐ मेरे रब तूने ही अनार का दरख़्त मेरे लिये लगाया था फिर रब तआ़ला फ़रमायेगा तूने ये कहा था कि मैं तुझे हालते सज्दे में मौत दूँ और मैंने तेरे साथ ऐसा ही किया फिर वो बन्दा कहेगा कि ऐ रब तूने ऐसा ही किया था और तूने ही ये सब कुछ किया था फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ये सब कुछ मेरी रहमत से ही हुआ था इसलिये आज भी मैं तुझे अपनी रहमत से साथ जन्नत में दाख़िल कर रहा हूँ।

(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-4/128-ह०-4620)

बाअ़ज़ लोगों को आ़फ़ियत इसलिये अ़ता की जाती है ताकि देखा जाये कि वो किस तरह रब तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं और इसी तरह से बाअ़ज़ लोगों को मुसीबत में इसलिये मुब्तिला किया जाता है ताकि देखा जाये कि वो उस पर सब्र कैसे करते हैं। (हिल्ल्यातुल औलिया–5/69-ह०-6474)

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार नेअ़मतें कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में मौजूद हैं जिनका अ़दाज़ा लगाना नामुम्किन है और कोई भी शख़्स अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों से एक लम्हे भर के लिये भी क़ता तआ़ल्लुक़ नहीं रह सकता जैसे इन्सान का खाना पीना, उठना बैठना उसका सोना उसका जागना व उसका सांस लेना व उसका देखना व सुनना और उसका लिखना पढ़ना, समझना और उसके ज़ाहिरी व बातिनी जिस्मी आज़ा का हरकत में होना और दुनियावी तमाम उमूर को इन्सान के ताबेअ़ करना वग़ैराह और बन्दा जब अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की नेअ़मतों पर नाशुक्री करता है तो फ़ायदा देने वाली नेअ़मतें उस बन्दे के लिये हलाकत का सबब बन जाती हैं।

★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत़्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत़्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

★★★★★

# मदार बुक सेलर
# मकनपुर (कानपुर)